मसलके आला हज़रत का नक़ीब व पासबान
माहनामा
सुन्नी दुनिया
बरेली शरीफ
कम उमरी में हज़रत आयशा सिद्दीका के निकाह पर ऐतराज़ात
अच्छे नाम रखने की फ़ज़ीलत
लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू
ज़वाल मुस्लिम के अस्बाब क्या हैं?
सरकार ग़ौसे आज़म का दावती असलूब
हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़सानी! हयातो-खिदमात
मुजाहिदे मिल्लत की हयातो-ख़िदमात पर एक फ़िक्र अंगेज़ तहरीर
अपने दरमियान क़ादयानियों को पहचानें
जमात रज़ा-ए-मुस्तफ़ा का कल और आज
चीफ़ एडीटर
मौलाना मोहम्मद
असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी
एडीटर
मौलाना मोहम्मद
अब्दुर्रहीम नशतर फ़ारूक़ी

बिरादराने अह्ले सुन्नत की फलाहो-बह्बूद और उनके ईमानो-इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए आला ह्ज़रत की क़ायम कर्दा जमात रज़ाए-मुस्तफ़ा के 100 साल पूरे हो रहे हैं इस मौक़े पर जमात का

जश्ने सद् साला

अज़ीमुश्शान पैमाने पर मनाया जायेगा

अह्बाबे अह्ले सुन्नत से पुरखुलूस अपील की जाती है कि ज़्यादा से ज़्यादा तादाद जमात रज़ाए-मुस्तफ़ा के मेम्बर बनें और मुल्क के हर गोशे में इसकी शाखें क़ायम करके इस जश्ने सद् साला का हिस्सा बनें।

दाईयान

मोहम्मद
असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी
कुल हिन्द सदर

मोहम्मद
सलमान हसन ख़ान क़ादरी
नायब सदर

Head Office:
JAMAT RAZA-E-MUSTAFA
Behind Dargah Alahazrat Saudagaran, Bareilly Shreeef (U.P.) 243003
+91 7055078618 / 7055078619 / 7055078621 / 7055078622
Email:jrmheadoffice@gmail.com, www.jamatrazaemustafa.org

जनवरी-2018
रबिउल आख़िर-1439

शुमारा-1	Issue-1
जिल्द नं0-1	Volume-1

महाना 20/- रूपये कापी
सालाना 250/- रूपये सादा डाक से
सालाना 500/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से
पाकिस्तान, श्रीलंका व बंगला देश से 1000/- रूपये
दीगर ममालिक से 35 अमेरिकी डॉलर

ब-यादगार

इमामुल मुतकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद नक़ी अली ख़ाँ क़ादरी बरेलवी, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी, हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी, मुफ़्ति-ए-आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी, मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन

MAHNAMA SUNNI DUNIYA

ज़ेरे सरपरस्ती
हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी बरेलवी
मद्दज़िल्लहुल आली क़ाज़ियुल कुज़ात फ़िलहिन्द

चीफ़ एडीटर
मौलाना मोहम्मद असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी

एडीटर
मौलाना मोहम्मद अब्दुर्रहीम नश्तर फ़ारूक़ी

शुक्रगुज़ार
अतीक़ अहमद (शुजा मालिक) आई.टी. हेड, जामियातुर्रज़ा
मोईन अख़्तर रज़वी कम्प्यूटर सेक्शन जे.आर.एम. हेड आफ़िस
अर्शी ख़ान कम्प्यूटर सेक्शन, फ़ाईज़ा प्रिन्टर्स, बड़ा बाज़ार, बरेली

कानूनी इन्तेबा

किसी भी तरह की कानूनी चाराजोई सिर्फ़ बरेली कोर्ट में क़ाबिले समाअत होगी। एहले क़लम की आरा से इदारा का मुतफ़िक़ होना ज़रूरी नहीं। ◯

गोल दायरे में सुर्ख़ निशान इस बात की अलामत है कि आपका ज़रे सालाना ख़त्म हो चुका है, बराये करम आगे के लिए अपना ज़रे सालाना पहली फ़ुरसत में इरसाल फ़रमायें ताकि रिसाला आपको आगे भी भेजा जाता रहे।

नोट

रिसाला के मुताल्लिक़ किसी भी तरह की शिकायत या मालूमात के लिए सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक नीचे दिये गये नम्बरों पर राब्ता कर सकते हैं।

9259089193, 8923619276

गुज़ारिश

एहले क़लम हज़रात से गुज़ारिश है माहनामा सुन्नी दुनिया के लिए मज़ामीन भेजते वक़्त लिफ़ाफ़े पर ''बराये माहनामा सुन्नी दुनिया'' ज़रूर तहरीर फ़रमायें। आप अपने मज़ामीन हमारे ई-मेल आई. डी. पर भी भेज सकते हैं।

E-mail: nashtarfaruqui@gmail.com

राब्ते का पता
दफ़्तर माहनामा सुन्नी दुनिया, 82, सौदागरान, बरेली शरीफ़
MAHNAMA SUNNI DUNIYA
82 Saudagran, Bareilly Sharif (U.P.) Pin - 243003
Cont. No. 0581-2458543, 2472166, 3291453
E-mail:- sunniduniya@aalaahazrat.com
nashtarfaruqui@gmail.com, atiqahmad@aalaahazrat.com
Visit Us: www.aalaahazrat.com, cisjamiaturraza.ac.in, hazrat.org

एडीटर, पब्लीशर, प्रिन्टर और प्रोप्राइटर मौलाना मोहम्मद असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी ने फ़ाईज़ प्रिन्टर्स बरेली से छपवाकर दफ़्तर माहनामा सुन्नी दुनिया, 82, सौदागरान, दरगाह आला हज़रत, बरेली शरीफ़ से शाय किया

Editor, Printer, Publisher & Owner Asjad Raza Khan, Printed at Faiza Printers, Opp. Lala Kashinath Jewelers, Hamidi Complex, Gali Wazeer Ali, Bara Bazar, Bareilly, Published at 82, Saudagran, Dargah Aala Hazrat, Bareilly Shareef (U.P.)

फ़ेहरिस्त

इस शुमारे में

सुन्नी दुनिया का
का यह शुमारा आपको कैसा लगा?

हमें ज़रूर बतायें और इस बात की भी वज़ाहत करें कि रिसाले की ज़बान आपको कैसी लगी? क्या इसमें अभी और आसानी या वज़ाहत की ज़रूरत है?

बिरादराने अहले सुन्नत से गुज़ारिश है कि अपने हिन्दी दाँ दोस्तो व अहबाब को इस के मेम्बर बनने की तरग़ीब दें और मर्कज़ की आवाज़ घर-घर पहुंचाने में हमारा तआवुन करें

मंज़ूमात

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा

अज़:- इमामे अहले सुन्नत क़ुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊँचे ऊँचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वो है तलवा तेरा
क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा
शेर को ख़तरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
क़स्में खा खा के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा
मुस्तफ़ा के तने बे-साया का साया देखा
जिसने देखा मेरी जाँ जलव-ए-ज़ेबा तेरा
इब्ने ज़हरा को मुबारक हो उरूसे कुदरत
क़ादरी पायें तसद्दुक़ मेरे दूल्हा तेरा
क्यों न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यों न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा
नब्वी मेंह, अल्वी सल, बतूली गुलशन
हसनी फूल, हुसैनी है महकना तेरा
मौत नज़दीक, गुनाहों की तहें, मैल के ख़ोल
आ बरस जा कि नहा धो ले यह प्यासा तेरा
जान तो जाते ही जायेगी क़यामत यह है
कि यहाँ मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा
तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
मेरी क़िस्मत की क़सम खायें सगाने बग़दाद
हिन्द में भी हूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा
बद् सही, चोर सही, मुजरिमो नकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
मुझ को रुसवा भी अगर कोई कहगा तो यूँही
कि वही ना! वह रज़ा बन्द-ए-रुसवा तेरा
फ़ख्रे आक़ा में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ
चल लिखा लायें सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

अपने दर से हमें ख़ाली न फिराना या ग़ौस

अज़: अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा

हाथ पकड़ा है तो ता-हश्र निभाना या ग़ौस
अब किसी हाल में दामन न छुड़ाना या ग़ौस
अपने ही कूचे में सरशार तमन्ना रखना
अपने मुहताज को दर दर न फिराना या ग़ौस
दिल से उतरे न कभी तेरे तसव्वुर का ख़ुमार
ऐसा इक जाम हुज़ूरी का पिलाना या ग़ौस
तेरे नाना की सख़ावत की क़सम है तुझ को
अपने दर से हमें ख़ाली न फिराना या ग़ौस
दोस्त ख़ुश हों मेरे दुश्मन को पशेमानी हो
काम बिगड़े हुये इस तरह बनाना या ग़ौस
आस्तीं अपनी बढ़ाना मेरी पलकों की तरफ़
अपने ग़म में हमें जब जब भी रुलाना या ग़ौस
कभी आँखों में, कभी ख़ानए-दिल में रहना
रूह बन कर मेरी रग रग में समाना या ग़ौस
निस्बते हल्क़ा बगोशी का भरम रख लेना
बहरे इमदाद मेरी क़ब्र में आना या ग़ौस
आबगीना मेरी उम्मीद का टूटे न हुज़ूर
दर्दे हसरत से मेरे दिल को बचाना या ग़ौस
तेरे जलवों से हैं कितने शबिस्तां रौशन
मेरे दिल में भी कोई शमा जलाना या ग़ौस
किसी मझधार से अरशद की सदा आती है
मेरी कश्ती को तुम्ही पार लगाना या ग़ौस

इस्लाहिया

कम उमरी में हज़रत आयशा के निकाह पर ऐतराज़ !

एक तहक़ीक़ी जायज़ा

अज़ : अब्दुर्रहीम 'नश्तर फ़ारूक़ी'

आये दिन इस्लाम मुख़ालिफ़ अनासिर इस्लाम और अहले इस्लाम के तअल्लुक़ से अपनी दरीदा देहनी का मुज़ाहिरा करते रहते हैं,कभी यह इस्लामी अहकामात को निशाना बनाते हैं तो कभी इस्लामी शख़्सियात को हदफ़े लान तान बनाते हैं, कभी पैग़म्बरे इस्लाम की शान में गुस्ताख़ियाँ करते हैं तो कभी अज़्वाजे मुतहहरात की ज़ाते बाबरकात के ताअल्लुक़ से अपनी ख़बासतों का इज़्हार करते हैं, वैसे तो यह कोई नई और ताअज्जुब खेज़ बात नहीं, क्योंकि इस्लाम पर कीचड़ उछालना दुनिया के सारे मुख़ालेफ़ीने इस्लाम का महबूब तरीन मशग़ला बन चुका है, चुनानचे सबसे पहले कुछ मुतआसिब क़िस्म के यहूदियों ने अपनी बीमार ज़हनियत की गन्दगी ज़ाहिर करते हुये यह ऐतराज़ किया कि एक कम उम्र लड़की से निकाह करना पैग़म्बरे इस्लाम के लिये मौज़ूँ नहीं था और न जाने कैसे कैसे अपनी ख़बासतें बातनी का इज़्हार किया, अहले इस्लाम ने हमेशा की तरह उनकी इस लायानी और ग़ैर माक़ूल ऐतराज़ का भी दनदान शिकन जवाब दिया, लेकिन मुख़ालेफ़ीन ने अपनी कुछ न जाइज़ औलादें हमारे मुल्क में भी पैदा कर दीं हैं जो उनके तख़रीबी मिशन को एक सच्चे वारिस की तरह आगे बढ़ाने में हमा तन मसरूफ़ हैं और अपनी ज़हनी ग़लाज़तों की बद्बू से हिन्दुस्तान की खुशबूदार फ़िज़ा को बदबूदार करने पर तुली हुई हैं।

इस्लाम और अहले इस्लाम से बेजा नफ़रत वाली ज़हनियत अब एक ''ख़तरनाक वायरस'' की शक्ल अख़्तयार कर चुकी है जो कभी किसी बद्बख़्त अंग्रेज़ को लाहिक़ होकर उसे अक़्लो-ख़िरद से बेगाना कर देता है तो कभी किसी नाहन्जार शायरा के अन्दर सरायत होकर उसे पागल कर देता है और अब सुना है किसी सिर फिरे टी.वी. ऐंकर को भी यह मर्ज़ लाहिक़ हो गया है, अब देखिये यह साहब कौन सा गुल खिलाते हैं, क्योंकि उन के पास तो अपनी कैंचीनुमा ज़बान के साथ साथ टी.वी. का एक बड़ा प्लेटफ़ार्म भी है जिसके ज़रिये वह अपने बवासीरी मर्ज़ की बद्बू दूर दूर तक फैला सकते हैं।

दरअसल यह ऐतराज़ इस मफ़रूज़ा पर मबनी है कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा निकाह के वक़्त एक नाबालिग़ा लड़की थीं और अभी उनके अन्दर वह सलाहियत नहीं पैदा हुई थी जो एक ख़ातून को अपने शौहर के पास जाने के लिए दरकार होती है, दरअसल मुख़ालेफ़ीने इस्लाम का यह ऐतराज़ ही सिरे से ग़लत व बातिल है क्योंकि उनका निकाह ज़रूर नाबालिग़ी में हुआ था लेकिन रुख़्सती नौ साल की उम्र में बालिग़ हो जाने के बाद ही हुई थी। बुख़ारी शरीफ़ में खुद उम्मुल मोमेनीन सय्यादा आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमातीं हैं कि: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वक़्त मुझसे निकाह फ़रमाया उस वक़्त मेरी उम्र 6 साल की थी, उसके बाद हम लोग (हिजरत करके) मदीना गये और वहाँ क़बीलए बनी हारिस में क़याम किया। फिर मुझे ऐसा बुख़ार आया कि सर के तमाम बाल झड़ गये। फिर (नये बाल) कन्धों तक अभी पहुँचे ही थे कि मेरी माँ उम्मे रुमान मेरे पास आयीं, उस वक़्त मैं अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी, मैं माँ के पास चली गयी, मुझे कुछ ख़बर नहीं कि आज क्या मआमला होने वाला है ?

वह मेरा हाथ पकड़ कर दरवाज़े पर (थोड़ी देर के लिये) रुकी रहीं, मेरी साँस फूल रही थी, जब सूकून हुआ तो मेरी माँ ने पानी लेकर मेरा मुँह और सर धोया, फिर मकान में लेकर गई, जहाँ अंसार की औरतें मौजूद थीं, वह मुझे दुआए ख़ैर और मुबारकबाद देने लगीं, माँ ने मुझे उन औरतों के हवाले कर दिया, उन्होंने मेरा बनाओ श्रृंगार किया, अब मुझे कुछ ख़बर नहीं हुई यहाँ तक कि मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और फिर मुझे उन औरतों ने आपके सुपुर्द कर दिया, उस वक़्त मेरी उम्र नौ साल की थी। (सही बुख़ारी हदीस न. 3894)

अब आईये यह जानने की कोशिश करते हैं। कि क्या पूरी दुनिया में सिर्फ़ एक यही किसी लड़की का पहला निकाह है जो इतनी कम उमरी में वाक़े हुआ? क्या इससे क़ब्ल या बाद में ऐसा कोई निकाह नहीं हुआ? तारीख़ी शवाहिद हमें यह बताते हैं कि दुनिया के हर गोशे में और हर मज़हब में इतनी उम्र में या इससे भी कम उम्र में शादियों का रिवाज़ मौजूद था और ऐसे किसी भी निकाह को कभी मायूब नहीं समझा गया, इस सिलसिले में सबसे पहले हम मुल्के अरब का ही जायज़ा लेते हैं जहाँ यह निकाह अमल में आया।

14 सौ साल क़ब्ल अरब में इस उम्र में लड़कियों की शादी को मायूब नहीं समझा जाता था, तारीख़ी हक़ाइक़ शाहिद हैं कि अरब में बाज़ लड़कियाँ नौ साल में माँ और 18 साल की उम्र में नानी भी बन गई हैं, चुनाँचे हदीस की मशहूर किताब ''दारे क़ुतनी'' में एबाद इब्ने एबाद मुहालबी का बयान है कि: ''मैंने अपनी क़ौम मुहालबा में एक औरत को देखा कि वह 18 साल की उम्र में नानी बन गई थी, इसकी सूरत यह हुई कि खुद उसको 9 साल की उम्र में लड़की पैदा हुई और फिर वह लड़की भी 9 साल की उम्र में लड़के वाली हो गई, इस तरह वह 18 साल में नानी बन गई।''

नीज़ हज़रत इमाम शाफ़ई रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु का एक चश्मदीद वाक़ेआ़ नक़्ल किया जाता है: आपने देखा कि ''एक औरत इक्कीस बरस की उम्र में नानी बन गई, उसकी सूरत यूँ हुई कि नौवीं बरस में हैज़ आया, दसवीं बरस में लड़की जनी, और उस लड़की का भी हैज़ व हमल इसी तरह वक़ू पज़ीर हुआ जिससे इक्कीस बरस की उम्र में नानी क़हलाने लगी।'' (फ़तहुलबारी- जिल्द 5, सफा 203)

इसी तरह सही बुख़ारी में भी हसन बिन स्वालेह के ज़रिया एक वाक़या मज़कूर है, उनका बयान है कि ''मैंने अपने पड़ोस की लड़की को देखा कि वह 21 साल की उम्र में नानी बन गई थी।'' (सही बुख़ारी, जि0 1, स. 466)

जदीद साइंस भी इस हक़ीक़त का ऐतराफ़ करती है और आज कल के अख़बारात व रसाईल भी लड़कियों के कम उमरी में माँ बनने की तस्दीक़ भी करते हैं, इसके साथ ही इस हक़ीक़त को फ़रामोश नहीं किया जा सकता कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती खुद उनकी वाल्दा ने हुज़ूर के तक़ाज़ा के बग़ैर की थी और दुनिया जानती है कि कोई भी माँ अपनी बेटी की दुशमन नहीं होती जो उसे नुक़सान व ख़ुसरान की आग में झोक दे, इस लिए यह नामुमकिन और मुहाल है कि उन्होंने बालिग़ होने से पहले आपकी रुख़सती कर दी हो।

अरब में कम उम्र लड़कियों की शादी का आम रिवाज़ था। चुनाँचे हज़रत अली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपनी लड़की उम्मे कुल्सूम का निकाह उरवा बिन ज़ुबैर से, उरवा बिन ज़ुबैर ने अपनी भतीजी का निकाह अपने भतीजे से और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की बीवी ने अपनी लड़की का निकाह इब्ने मुसइयब बिन नख़्बा से कमसिनी में किया। (अलफ़िक़हुल इस्लामी, जि0 7, स0 180)

इन हज़रात का कम उमरी में अपनी लड़कियों का निकाह कर देना भी इस बात की खुली हुई दलील है कि उस वक़्त कम उमरी में ही बाज़ लड़कियों के अन्दर निकाह और ख़लवत की सलाहियत पैदा हो जाती थी, तो

इदारिया

ऐसे मुआशरे में उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह 6 साल की उम्र में होता है और बक़ायदा उनकी माँ की तरफ़ से उनकी अहलियत के ताअल्लुक़ से मुकम्मल इतमिनान कर लेने के बाद नौ साल की उम्र में उनकी रुख़्सती अमल में आती है तो उसमें तअज्जुब ही किया है।

मज़कूरा हक़ाइक़ व शवाहिद यह वाज़ेह करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआल अन्हा से 6 साल की उम्र में निकाह फ़रमाना न कोई तअज्जुब खेज़ वाक़्या था और न ही नौ साल की उम्र में रुख़्सती कराना कोई नई बात।

बल्कि मुल्के अरब की आबो-हवा, वहाँ के मुआशरती और समाजी रस्मो रिवाज के मुताबिक़ वह उम्र लड़कियों की रुख़सती के लिये क़ाबिले कुबूल उम्र थी, जिस उम्र में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा की रुख़्सती हुई।

हक़ीक़त यह है कि लड़कों और लड़कियों का शबाब व बुलूग़ सिर्फ़ उम्र पर ही मौक़ूफ़ नहीं, बल्कि ज़्यादा तर मुल्की आबो-हवा लड़कों और लड़कियों के जिस्मानी इरतक़ा में तक़दीमो-ताख़ीर के लिये ज़िम्मेदार होते हैं, एक ही मुल्क के ताकतवर और कमज़ोर जिस्म वालों में चार चार, छः छः साल का फ़र्क़ पड़ जाता है हत्ताकि बाज़ औक़ात छोटा लड़का या लड़की बुलूग़ को पहुँच जाती हैं और बड़े बर्सों पड़े रह जाते हैं।

दुनिया के हर ख़ित्ते में इंसानों के रहन सहन, खान-पान, शादी ब्याह और जीने मरने के अंदाज़ और अतवार मुख़्तलिफ़ हैं, रहन सहन के तरीक़े और खाने पीने के अंदाज़ इंसानों के जिस्मानी निशो नुमा पर असर अंदाज़ होते हैं। यह भी समाजी मुसल्लेमात से है कि आबो-हवा की तब्दीलियाँ इंसान के जिस्मानी निशो नुमा, उनकी सेहत व साख़्त, क़द व क़ामत और सने बुलूग़ में तब्दीलियाँ लाती हैं। जिसका लाज़िमी नतीजा यह होता है कि कहीं इंसानों की बुलूग़त जल्द अमल में आ जाती है तो कहीं ताख़ीर से, कहीं इंसानों की लम्बी उम्र होती है तो कहीं कम, कहीं इंसानों का क़द पस्त होता है तो कहीं लम्बा और कहीं बच्चों की जल्द शादी कर दी जाती है, तो कहीं ताख़ीर से, यह तब्दीलियाँ मुख़्तलिफ़ मुमालिक में मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में इंसानों को मुतास्सिर करती हैं। एक अहम इक़्तिबास मुलाहिज़ा फ़रमायें:

"The average temperature of the country is considered the chief factor with regard to Menstruation and Sexual Puberty."

यानी ''किसी भी इलाक़े कि लड़कियों के अय्यामे हैज़ की शुरूआत और अज़्दवाज़ी बुलूग़त की उम्र को पहुँचने में इस मुल्क का औसत दर्ज-ए-हरारत अहम किरदार अदा करता है।''

(Women: An Historical, Gynecological and Anthropological compendium, Volume I, Lord and Brands by 1998, p. 563)

यह एक तारीख़ी हक़ीक़त है कि 14 सौ साल पहले यूरोप व एशिया, अफ़्रीक़ा और अमरीका जैसे मुमालिक में भी नौ साल से 14 साल की लड़कियों की शादियाँ कर दी जाती थीं, मिसाल के तौर पर सेंट आगास्टीन ने जिस लड़की से शादी की थी उसकी उम्र दस साल थी, किंग रिचर्ड-द्वितीय ने जिस लड़की से शादी की थी उसकी उम्र 7 साल की थी, हेनरी अष्टम ने एक 6 साल की लड़की से शादी की थी।

1929 ई0 से पहले तक बरतानिया में, चर्च आफ़ इंग्लैण्ड के मिनिस्टर्स 12 साल की लड़की से शादी कर सकते थे, 1983 ई0 से पहले केथोलिक केनान के क़ानून ने भी अपने पादरियों को ऐसी लड़कियों से शादी कर लेने की इजाज़त दे रखी थी जिनकी उम्र 12 साल को पहुँच चुकी हो।

बहुत से लोग इस हक़ीक़त से नावाक़िफ़ हैं कि अमेरिका के स्टेट ऑफ़ डेल्योरा में 1888 ई0 में लड़की

की शादी की जो कम से कम उम्र थी वह 8 साल थी और केलफॉरनिया में 10 साल थी, हत्ता कि आज तक भी अमेरिका के कुछ स्टेट्स में लड़कियों की शादी की जो उम्र है, वह मेसीचोसिस में 12 साल और न्यूहेम्सफ़र में 13 साल और न्यूयार्क में 24 साल की उम्र है, यहाँ तक तो ईसाईयत और मग़रबी मुमालिक में लड़की की शादी की मुनासिब उम्र और वहाँ की मारूफ़ शख़्सियात के मुताल्लिक़ था, जिससे यह बिल्कुल साबित हो जाता है कि तारीख़ी नुक्तए नज़र से इस उम्र की लड़की से निकाह करना एक आम सी बात थी जिसे कोई मायूब नहीं समझता था।

हिन्दू धर्म में शादी की उम्र

आख़िर में हम हिन्दू मज़हब की किताबों पर भी नज़र डालते चलते हैं चुनाँचे हिन्दू मज़हब की मशहूर किताब "मनु स्मृति" में लिखा है "A girl should be given in marriage before puberty. यानी लड़की के बालिग़ होने से पहले ही उस की शादी कर देनी चाहिये" (गौतमा 21-18)

दूसरी जगह में यूँ तहरीर है: "Out of fear of the appearance of the menses, let the father marry his daughter while she still runs about naked. For if she stays in the home after the age of puberty, sin falls on the father. (Vashistha 17-70) यानी इस डर से कि कहीं अय्यामे हैज़ न शुरू हो जायें, बाप को चाहिये कि अपनी लड़की की शादी उसी वक़्त कर दे, जब वह बेलिबास घूम रही हो, क्योंकि अगर वह बुलूग़त के बाद भी घर में रही तो उसका गुनाह बाप के सर होगा।"
(www.payer.de/dhrmashastra/dharmash083.htm/manu ix 88 http)

यह बात भी सभी जानते हैं कि ऐसी कम उमरी की शादियों का रिवाज हिन्दुस्तान के अकसर सूबों में आज भी है, चुनाँचे The Encyclopedia of Religion and Ethies में लिखा है कि जिसकी बेटी इस हालत में बुलूग़त को पहुँची थी कि वह ग़ैर शादी शुदा हो तो उसके (हिन्दू) बाप को गुनाहगार समझा जाता था, अगर ऐसा होता तो वह लड़की खुद बख़ुद "शूद्र" (निचली ज़ात) के दर्जे में चली जाती थी और ऐसी लड़की से शादी करना शौहर के लिये बाइस रुसवाई हुआ करता था।

"मनु स्मृति में मर्द और औरत के लिये शादी की जो उमर तय की है, वह इस तरह है, लड़का 30 साल का और लड़की 12 साल की या लड़का 24 साल का लड़की 8 साल की, मगर आगे चल कर भरस्पति और महाभारत की ताअलीम के मुताबिक़ ऐसे मौक़ों पर लड़कियों की जो शादी की उम्र बताई गई है, वह 10 साल और 7 साल है, जबकि इसके बाद के "श्लोक" में शादी की कम से कम उम्र 4 से 6 साल और ज़्यादा से ज़्यादा 8 साल बताई गई है और इस बात की बेशुमार सुबूत हैं कि यह बातें सिर्फ़ तहरीर में ही नहीं थीं बल्कि उन पर बाक़ायदा अमल भी किया जाता था। (encyclopedia of religion and ethics, p.450)

हिन्दुस्तान में शादी की उम्र

इस के मुताल्लिक़ केम्ब्रिज के सेन्ट जॉन्स कॉलेज कि Jack Goody ने अपनी किताब The Oriental Ancient and Primitive में लिखा है कि हिन्दुस्तानी घरों में लड़कियाँ बहुत ही जल्द ब्याह दी जाती थीं, श्रीनिवास उन दिनों के बारे में लिखते हैं: "जब इण्डिया में बालिग़ होने से पहले शादी करने का रिवाज चलता था, (1984:11) लड़की की इस उम्र को पहुँचने से पहले उसकी शादी कर देनी होती थी, हिन्दू लॉ के मुताबिक़ और मुल्क के रिवाज के मुवाफ़िक़ लड़की के बाप पर यह ज़रूरी था कि वह बालिग़ होने से पहले उसकी शादी कर दे, अगर्चे रुख़सती में अक्सर ताख़ीर होती थी, जो तक़रीबन 3 साल हो जाती थी।
(The Oriental, the Ancient, and the Primitive, P208)

कम उमरी में निकाह आयशा की हिकमत

यह हक़ीक़त भी ज़हन नशीन रहे कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह अपनी तब्ई मैलान की वजह से खुद नहीं फ़रमाया बल्कि अल्लाह की जानिब से आप को ख़्वाब में कई बार हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा की शक्ल दिखा कर उनसे निकाह की तरग़ीब दी गई थी, चुनाँचे नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से इस ख़्वाब का ज़िक्र करते हुये फ़रमाया: ''तुम मुझे दो बार ख़्वाब में इस तरह से दिखलाई गयीं कि एक शख़्स तुम को रेशम के कपड़े में लपेट कर दिखलाता है कि यह आपकी बीवी हैं, मैं जब कपड़ा उठा कर देखता तो तुम्हारी सूरत नज़र आती थी, मैंने कहा कि अगर यह ख़्वाब खुदा की तरफ़ से है तो पूरा होकर रहेगा।''(बुख़ारी, हदीस न0 7011)

एक रिवायत के मुताबिक़ तीन बार ख़्वाब में हुज़ूर को आपकी शक्ल दिखा कर आपसे निकाह की तरग़ीब दी गई, इन ख़्वाबों से वाज़ेह हो गया कि मशीयते इलाही को इस निकाह से किसी ख़ास मक़सद की तकमील मंज़ूर थी, वर्ना बज़रिया ख़्वाब बार बार हुज़ूर को इसकी तरग़ीब देने की क्या ज़रूरत थी ? यही वजह थी कि बचपन ही से आपके रूहानी और जिस्मानी निशो नुमा माफ़ौक़ुल आदत तरक़्क़ी पज़ीर थे, क़ुदरत का यह ख़ास अंदाज़ तरबियत आपके साथ इसी लिये था कि आपके ज़रिये कुछ अहम और नुमायाँ कारनामे अंजाम देने थे, चुनाँचे दुनिया ने देखा कि आप बावुजूद कमसिन होने के बड़े बड़े फ़ुक़हाए-सहाबा पर इल्मो-फ़न और फ़ज़लो-कमाल में फ़ौक़ियत रखती थीं।

हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से कमसिनी में इस लिये निकाह किया गया ताकि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा अर्सा तक इक्तिसाबे इल्मो-फ़ज़्ल कर सकें और उनके ज़रिये ज़्यादा से ज़्यादा अफ़राद इस्लामी तअलीम हासिल कर सकें, चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद अड़तालीस साल तक सहाबए-किराम और ताबईने इज़्ज़ाम उनकी खुदादाद ज़हानतो फ़िरासत, ज़कावतो बसीरत और इल्मो इरफ़ान हासिल करते रहे। (ज़रक़ानी, जि0 3, स0 229-236)

तमाम अज़्वाजे मुताहरात में एक आप ही की ज़ाते बाबरकात थी जिसकी परवरिश व परदाख़्त इस्लामी माहौल में हुई थी और मज़ीद काशानए नबुव्वत में आकर आपकी तालीम व तरबियत हर लिहाज़ से मुकम्मल, मुन्फ़रिद और मिसाली हुई, यही वजह है कि आप मुसलमानों में इस्लामी तालीमात की तब्लीग़ो इशाअ़त का एक मोअस्सिर तरीन ज़रिया बन सकीं।

चूँकि हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा के वाल्दैन का घर तो पहले ही से नूरे इस्लाम से मुनव्वर था, कम उमरी ही में उन्हें काशानए-नबुव्वत में पहुँचा दिया गया ताकि उनके सादा लौह दिल पर इस्लामी तालीमात का गहरा नक़्श मुरतसिम हो जाये, चुनाँचे दुनिया ने देखा कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा ने अपनी नौ उमरी में ही किताब व सुन्नत के उलूम में गहरी बसीरत हासिल कर ली थी, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आमाल व इरशादात का एक बड़ा ज़ख़ीरा अपने ज़हनो दिमाग़ में महफ़ूज़ कर लिया, फिर बाद में वह उलूमो मआरिफ़ दर्सो-तदरीस और नक़्लो रिवायत के ज़रिया उम्मत के हवाले किये।

चुनाँचे हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से 2210 हदीसें रिवायत फ़रमाई जो तादाद के ऐतबार से हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तमाम सहाबए-किराम में सबसे ज़ाइद हैं, आप ग़ैर मामूली ज़हीन और बेहतरीन कुव्वते हाफ़िज़ा की मालिक थीं, कम उमरी में निकाह के ही सबब आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इक्तिसाबे इल्म व फ़ज़्ल का सबसे ज़्यादा मौक़ा मिला, जिसकी बदौलत आपने एक माहिरे फ़न मोअल्लिमा, एक बालिग़ नज़र फ़क़ीहा, बाकमाल मुहद्दिसा का किरदार अदा किया।

हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हु फ़रमाते हैं कि: सहाबए-किराम को कभी कोई ऐसी मुशकिल पेश न आई जिसके बारे में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हा से पूछा हो, और उनके पास उसकी कोई मालूमात न हो, नीज़ इमाम ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा इल्म वाली थीं, बड़े बड़े सहाबा उनसे मसाइल पूछा करते थे।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हा की शक्ल में मुस्लिम औरतों को शरई मसाइल की तालीमो तफ़हीम के लिये एक ऐसी कामिल मोअल्लिमा मिल गई जिसने उनके बारीक तर पोशीदा मसाइल उन्हें वाज़ेह तौर पर ज़हन नशीन करा दिये, क्योंकि औरतों की अक्सरियत ऐसी थी जो फ़ितरतन बाज़ शरई मसाइल के बारे में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल करने में शर्म महसूस करती थी, ख़ास तौर पर वह मसाइल जो औरतों के साथ मख़्सूस हैं, चुनाँचे अंसार की औरतें सीधे हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा के पास आतीं और उनसे दीन के मसाइल मसलन् हैज़, निफ़ास, जिनाबत और वज़ीफ़ए ज़ौजियत वग़ैरह के एहकाम के बारे सवाल किया करती थीं।

तमाम अज़्वाजे मुतहहरात में सिर्फ़ हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हा ही कुँवारी थीं, दीगर अज़्वाज या तो बेवा, मुतल्लक़ा या फिर शौहर दीदा थीं, यह कैसे हो सकता था कि जिसके सद्के में सारी कायनात तमाम तर नेअ़मतों से बहरावर हो रही है उसके हिस्से में कोई कुँवारी औरत न आये।

इस निकाह का एक मक़सद यह भी था कि रिसालतो ख़िलाफ़त के दरमियान क़राबत दारी का एक और मज़बूत रिश्ता क़ायम हो जाये जिसके ज़रिये इस्लाम को मज़ीद तक़वियत मिली और यही मक़सद उम्मुल मोमेनीन सय्यदा, हफ़्सा बिन्ते उमर रदियल्लाहु अन्हा से निकाह में कार फ़रमा था।

एक नुक्ते की बात

अगर उस वक़्त इस तरह का निकाह अरब में मायूब होता तो सबसे पहले कुफ़्फ़ारे कुरैश जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अज़ली दुशमन और बद्तरीन मुख़ालिफ़ थे, वह इस मौक़े को कैसे अपने हाथ से जाने देते? उन्होंने इस निकाह पर क्यों ऐतराज़ नहीं किया? ज़ाहिर है सिर्फ़ इस लिये कि उस वक़्त समाज में इतनी कम उम्र लड़कियों का निकाह आम बात थी और हुज़ूर के बद्तरीन दुशमनों के नज़दीक भी इसमें ऐब का कोई शाएबा तक न था, जिसको बुनियाद बनाकर वह आप को मतऊन करते या आपकी साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ शख़्सियत को गर्द आलूद करते।

मज़हका खेज़ बात यह है कि ऐसा शर्मनाक इल्ज़ाम उस ज़ाते बाबरकत पे लगाया जा रहा है जिसने अपना पहला निकाह ऐन 25 साल के क़ाबिले रश्क अय्यामे शबाब में दो-दो शादियाँ कर चुकी बच्चों वाली एक 40 साला बेवा औरत से किया और अपनी पूरी जवानी उसी उम्र दराज़ ख़ातून के साथ गुज़ार दी, यहाँ तक कि आपकी उम्र 50 साल से ज़ाइद हो गई, जब आप की पहली जौज़ा मोहतरमा उम्मुल मोमेनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हा का विसाल हो गया, उसके बाद ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे सभी निकाह किये, वह भी अपनी उम्र के 50 साल गुज़र जाने के बाद! जो अमूमन बुढ़ापे की उम्र होती ह, उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हा के सिवा आपने जिन ख़्वातीन से भी निकाह किये वह सब की सब बेवा, मुतल्लक़ा और बाज़ ज़ईफ़ुल उम्र थी अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन मोतअदिद्द निकाहों में या हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से निकाह में नफ़सानी ख़्वाहिशात की तकमील का मंशा कार फ़रमा होता तो फिर ऐन अय्यामे शबाब में एक 40 साला बेवा औरत से क्यों निकाह करते? चलो एक निकाह बेवा से कर लिया

मगर बाक़ी सारे निकाह तो कुँवारी और नौजवान औरतों से कर सकते थे आख़िर बेवाओं और मोअम्मर ख़्वातीन से क्यों किया? क्या कोई मामूली-सा शऊर रखने वाला इंसान भी इसे ख़्वाहिशाते नफ़्स की तकमील का नाम दे सकता है? यह तो ऐसा ही है जैसे कोई कोर चश्म ऐन दोपहर को शबे तार साबित करने की ज़िद करने लगे।

तारीख़ गवाह है कि सहाबए-किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक इशारए-अबरू पर अपना सब कुछ कुरबान कर देने में फ़ख़्र महसूस करते थे, अगर आप किसी भी ख़ूबरू, जवान और कुँवारी लड़की से शादी का इशारा करते तो यक़ीनन उनमें से कोई ज़रा भी तअम्मुल न करता बल्कि आपकी ख़्वाहिश की तकमील में फ़ख़्र महसूस करता, इसके बावजूद आख़िर क्या वजह थी कि आपने शबाब में शादी न की और की तो क्यों कुँवारियों को छोड़ कर बेवाओं को तरजीह दी, हत्ताकि मुशरेकीने मक्का ने भी दावते हक़ से दस्तबरदार हो जाने की शर्त पर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरब की सबसे ख़ूबसूरत लड़की से निकाह की पेशकश की थी, मुख़ालेफ़ीने इस्लाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस तर्ज़े अमल क्या जवाब देंगे?

इस नुक्ता पर अदना ग़ौरो फ़िक्र से यह हक़ीक़त सूरज से भी ज़्यादा रौशन हो जाती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जितनी भी शादियाँ कीं वह नफ़्सानियात के पेशे नज़र न थीं बल्कि तमाम शादियाँ दीने इस्लाम की पेश रफ़्त, अपने साथियों के साथ मुवद्दतो मोहब्बत के रिश्ता की इस्तवारी और दीगर दीनी, मुआशरती और सियासी मसालेह जैसे बुलन्द मक़ासिद के तहत की गई थीं।

चुनाँचे तारीख़ी औराक़ शाहिद है कि जंगे बदर व ओहद में सैकड़ों की तादाद में सहाबए-किराम शहीद हुये, नतीजे के तौर पर उनकी बेवायें और बच्चे यतीम होकर बेयारो मददगार हो गये, इस परेशान कुन मसअला को हल करने के लिये नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए-किराम को बेवाओं से निकाह करने का मशवरा दिया और लोगों को अमली तरग़ीब देने के लिये पहले ख़ुद आपने हज़रत सौदा रदियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रदियल्लाहु तआला अन्हा, से मुख़्तलिफ़ औक़ात में निकाह किये, आपके इस हुस्ने अमल से मुतास्सिर होकर बहुत से सहाबए-किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अन्हुम ने बेवाओं से निकाह किये जिसके सबब कई बरबाद और बेसहारा घराने दोबारा आबाद हो गये।

अरबों का यह दस्तूर था कि जो शख़्स उनका दामाद बन जाता उसके ख़िलाफ़ जंग करना अपनी शानो अज़मत के ख़िलाफ़ समझते थे, हज़रत अबू सुफ़्यान रदियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाने से क़ब्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शदीद तरीन मुख़ालेफ़ीन में से थे मगर जब उनकी बेटी उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा से हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह फ़रमा लिया तो यह दुशमनी कम हो गई, इसका वाक़्या यह कि उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा शुरू में ही मुसलमान होकर अपने मुसलमान शौहर के साथ हब्शा हिजरत कर गई, वहाँ उनका ख़ाविन्द नसरानी हो गया, हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने इससे जुदाई इख़्तियार कर ली और बहुत सी मुश्किलात का सामना करते हुए घर पहुँचीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दिल जोई फ़रमाई और बादशाहे हब्शा के ज़रिये उनसे निकाह किया।

हज़रत जुवैरिया रदियल्लाहु अन्हा का वालिद क़बीलए मुस्तलक़ का सरदार था, यह क़बीला मक्का और मदीना मुनव्वरा के दरमियान वाक़े था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस क़बीले से जिहाद किया जिसमें उनका सरदार मारा गया, हज़रत जुवैरिया

रदियल्लाहु अन्हा कै़द होकर एक सहाबीए-रसूल के हिस्से में आयीं, सहाबए-किराम रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने मशवरा कर के सरदार की बेटी का निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कर दिया और इस निकाह की बरकत से उस क़बीले के सौ घराने आज़ाद हुये और सब के सब मुसलमान हो गये।

ख़ैबर की लड़ाई में यहूदी सरदार की बेटी हज़रत सफ़िया रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा कै़द होकर एक सहाबी के हिस्से में आयीं, सहाबए-किराम रिज़वानुल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने मशवरे से उनका भी निकाह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करा दिया, इसी तरह मैमूना रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा से निकाह की वजह से नज्द के इलाक़े में इस्लाम फैला, इन शादियों का मक़सद भी यही था कि लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब आ सकें और अख़लाक़े नब्वी का मुशाहिदा कर सकें ताकि उन्हें राहे हिदायत नसीब हो। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रदियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह मुतबन्ना की रस्म तोड़ने के लिये किया, हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह बोले बेटे थे, उनका निकाह हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश से हुआ, आपस में निबाह न होने पर हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें तलाक़ दे दी फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे निकाह कर लिया और यह साबित फ़रमा दिया कि मुतबन्ना हक़ीक़ी बेटे जैसा हरगिज़ नहीं होता, ग़र्ज़ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर निकाह का एक मक़सद था जो मशीअते इलाही के तहत मअरिज़े वुजूद में आया।

दर हक़ीक़त दुशमनाने इस्लाम ने रोज़े अव्वल ही से पैग़म्बरे इस्लाम के बारे में शुकूको शुबहात का यह सिलसिला शुरू कर दिया था, आपकी रिसालत को तानो तशनी का निशाना बनाया, आपके मोअजिज़ात पर ऐब जोई की और तरह तरह की बोहतान तराज़ी की ताकि मुसलमान अपने दीन के बारे में शुकूको शुबहात का शिकार हो जायें और आपकी रिसालत को मानने से बाज़ रहें, मालूम हुआ कि मुख़ालेफ़ीने इस्लाम की इस ज़हर अफ़शानी और हरज़ा सिराई का वाहिद सबब इस्लाम और बानीये इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से देरीना बुग्ज़ो इनाद और मज़हबी मुनाफ़िरत है जो उन्हें इस तरह की लायानी और ग़ैर माकूल बातों पर उभारती रहती है फिर तो उन पर हिज़्यान का वह दौरा पड़ता है जिससे मामूली सा शऊर रखने वाला इंसान भी इनके अक़्लो ख़िरद पर मातम करने लगता है, मौलाये करीम सबको अक़्ले सलीम अता फ़रमाये। (आमीन)■

इस्लामियात

अच्छे नाम रखने की फ़ज़ीलत

अज़: हाफ़िज़ मुहम्मद हाशिम क़ादरी

हर इंसान की यह ख्वाहिश होती है कि अल्लाह तअला उसे वारिस अता फ़रमाये यानी औलाद जो नेक व सालेह हो और उस से ख़ानदान की शान बुलन्द हो, उसके लिए शादी होने के फ़ौरन बाद अल्लाह के हुज़ूर दुआयें मांगी जाने लगती हैं और जैसा के कु़रआन मजीद में इरशाद हुआ है कि पैग़म्बरों ने जिस तरह अल्लाह से औलाद जैसी नेअमते इलाही के हुसूल के लिये अपना दस्ते सवाल उठाओ मैं तुम्हारी झोली उस नेअ्मत से भर दूंगा।

कु़रआन पाक में औलाद की दुआ के लिये कई जगाह ज़िक्र मौजूद है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ "इलाही मुझको लाइक़ औलाद अता फ़रमा" (सूरत नम्बर 19, आयात नम्बर 99)

रब्बे करीम ने इरशाद फ़रमाया "तो हम ने उसे खुशख़बरी सुनाई एक अक़्लमन्द लड़के की" (सूराह-19, अयत-100)

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की "ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा, बेशक तू दुआ सुनने वाला है" (सूरह-आल इमरान, अयत-37)

दुसरी जगह कु़रआन में यूँ दुआए ज़करिया अलैहिस्सलाम मज़कूर है "अल्लाह हमें वारिस अता फ़रमा जो मेरा काम उठा ले मेरा भी वारिस हो और औलादे याकूब के ख़ानदान का भी जानशीन हो और ऐ मेरे रब तू उसे मक़बूल बंदा बना ले"(सुरह मरयम, अयत नं0-4,5)

मालूम हुआ के बेटे की दुआ करना सुन्नते अम्बिया है मगर नफ़्स के लिये नहीं बल्के रब के लिये कि वह दीनदार हो, अल्लाह का नेक बंदा हो, नेक और सॉलेह हो, ताके हमें कब्र में उसकी नेकियों से आराम पहुँचे।

लिहाज़ा अल्लाह ने खुशख़बरी सुनाई "ऐ ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिस का नाम याहया है, हमने इससे पहले इस नाम का हम नाम नहीं किया।" (सूरह नं0-19, अयत नं0-6)

अल्लाह तअला ने ना सिर्फ़ उनकी दुआ क़बूल फ़रमायी बल्कि उनके लड़के के नाम की तजवीज़ भी फ़रमायी।

औलाद लड़का हो या लड़की ये अल्लाह की रहमत हैं:

इस्लाम से पहले अरब में लड़की की पैदाईश को बहुत बुरा माना जाता था और उसको ज़िन्दा दर गोर कर दिया जाता था, आज भी तरक़्क़ी याफ्ता कहलाने वाले इस दौर के बावजूद हिन्दुस्तानी मुआशरे में लड़की की पैदाईश पर इज़हारे अफ़सोस किया जाता है, मज़हबे इस्लाम ने इसको सख़्ती से मना किया और ना पसंद किया है।

अच्छे नाम रखने और बुरे नामों से बचने की फ़ज़ीलत:

अल्लाह पाक जो अपने नाम से ही यक्ता और बेमिस्ल है जिस ने ना सिर्फ़ इस कायनाते रंग व बू को पैदा फ़रमाया बल्कि इस कायनात में हुस्न व ख़ूबसूरती के सब से आला नमूना इंसान को पैदा फ़रमाया और फ़िर उसे सब से पहले ख़ूबसूरत नाम आदम से नवाज़ा और इस तरह कायनाते अरज़ी के हर ज़र्रे की इब्तेदा नाम से हुई, इंसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा ये है कि हर चीज़ में हुस्न व जमाल को पेशे-नज़र रखा जाये।

इसलिये अल्लाह पाक ने इंसान को बेहतरीन

मज़मुन निगार मस्जिद हाजरा रज़वीया इमामो ख़तीब हैं।

साख़्त और उम्दा-शाम्मा अता फ़रमाया "हम ने इंसान को उम्दा साख़्त में पैदा किया।"

लिहाज़ा वालिदैन का फ़र्ज़ बनता है कि अपने बच्चों की निगेहदाश्त और परवरिश अच्छे अन्दाज़ में करें, वहीं यह भी ज़रूरी है के बच्चों के नाम भी अच्छे रखें, अच्छे नाम अच्छी अलामत का मज़हर होते है और अच्छे नाम अल्लाह को पसंदीदा है। हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अच्छे नाम रखने और बुरे नामों से गुरेज़ करने की बार-बार तल्क़ीन फ़रमायी है और यही बात इस्लामी तालीमात में बुन्यादी हैसियत रखती है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तअला को दो नाम बहुत पंसद हैं और वह दो नाम "अब्दुल्लाह" और "अब्दुर रहमान" हैं, इसलिये यह बात हमेशा पेशे नज़र रखें के नाम ख़ूबसूरत बमाना और हर लिहाज़ से जामेअ़ हो और पुकारते वक़्त पूरा नाम पुकारा जाये, इस लिये के नाम ही वह पहचान है जो एक को दूसरे इंसान से अलाहिदा पहचान देता है और उस को एक दूसरे पर फ़ज़ीलत अता करता है और इंसान की पूरी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होता है।

अल्लाह तअला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पहले नामों ही की तालीम दी जैसा कि इरशादे बारी तअ़ला है। "और अल्लाह तअ़ला ने आदम को तमाम (अशिया) के नाम सिखाये फ़िर मलाइका पर पेश करके फ़रमाया सच्चे होतो इनके नाम तो बताओ"(सूरह-2, अयत नं0-30,31)

अच्छे नामों के असरात सीरते नब्वी की रौशनी में:

इरशादे रब्बानी है "कहदो के तुम (अल्लह तअ़ला को) अल्लाह तअला (के नामों से) पुकारो या रहमान (के नाम से) पुकारो सब उस के अच्छे नाम हैं।" (सूरह नं0-17, अयत नं0-109)

इस से ये बात ज़ाहिर होती है कि रब्बे करीम हमें अच्छे नामों की तल्क़ीन फ़रमा रहा है, अच्छे नाम रखें जायें, अच्छे नाम से पुकारना सुन्नते इलाहिया है, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की औलाद के लिये दुआ का ज़िक्र क़ुरआन में मौजूद है। अल्लाह ने ना सिर्फ़ औलाद की दुआ क़बूल फ़रमाइ बल्कि औलाद अता फ़रमाई और उसका नाम भी तजवीज़ फ़रमाया "ऐ ज़करिया हम तुझको ख़ुशी सुनाते हैं, एक लड़के की जिस का नाम यहिया है, इससे पहले हमने इस नाम का कोई ना किया।" (सूरह मरयम19, अयत नं0-6)

हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम की बहुत सी फ़ज़ीलतें क़ुरआने पाक में बयान हुई हैं। ये कि अल्लाह तअला ने ख़ुद नाम रखा, वालिदैन के सुपुर्द ना किया, ये आप की ख़ुसूसियत है, ये नाम किसी और को ना पहले मिला ना बाद में, यानी अल्लाह तअ़ला ने यह नाम किसी दूसरे आदमी का ना रखा, अल्लाह तअ़ला ने ज़करिया अलैहिस्सलाम को ख़ुशख़बरी सुनाई और उनका नाम यहिया रख दिया।

ख़्याल रहे के हमारे बच्चों के नाम उनके वालिदैन रखते हैं, वह भी पैदाईश के सातवें दिन बाद मगर हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम और हज़रते यहिया अलैहिस्सलाम का नाम ख़ुद रब तअला ने रखा, वह भी विलादत से पहले।

हमारे बच्चों के नाम उस के ख़िलाफ़ होते है, अक्सर नाम सही नहीं होते, ग़लत भी होते हैं, काले आदमी का नाम यूसुफ़, बुज़दिल का नाम शेर बहादुर, बहरे का नाम समीउल्लाह, अंधे का नाम नूरूल्लाह रख दिये जाते है, मगर रब तअ़ला के रखे हुये नाम बिल्कुल सही और नाम के मुताबिक़ काम भी होते हैं, रब ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद रखा यानी बहुत सराहा हुआ, तारीफ़ किया हुआ, आज भी इस नाम की बहार देखी जा रही है कि हर जगह हर वक़्त हर ज़बान में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तारीफ़ें हो रही हैं, इसी तरह रब तअ़ला ने हज़रत यहिया का नाम रखा यानी ज़िन्दगी बख़्शने वाले या जिन्दा

वह ज़िन्दा हैं और ताक़यामत ज़िन्दगी बख़्शेंगें, चुनाँचे हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम बेमिसाल तारिके दुनिया और आबिदो ज़ाहिद हुए, नबीयों के नाम अल्लाह तअ़ला ने रखे और और वही उन के नाम व काम का कफ़ील है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से हमारे हुज़ूर के बारे में फ़रमाया "उनका इस्म शरीफ़ अहमद है और यहिया अलैहिस्सलाम उन रसूलों में से हैं जिन्हें बचपन ही से नबूवत मिली" ये अल्लाह तअ़ला के नाम रख़ने की बरकत से हुआ।

अच्छे नामों के असरात:

आज कल आम मिज़ाज बनता जा रहा है कि बच्चों के नामों में जिद्दत हो, ऐसा नाम रखा जाये कि किसी और का नाम ना हो, ख़्वाह उस का मफ्हूम और माना कुछ भी निकलता हो, हालाँकि प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वाल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "अम्बिया अलैहिस्सल के नामों पर अपने बच्चो के नाम रखो" (अबू दाउद)

इसलिये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आख़री साहबज़ादे का नाम इब्राहीम रखा था जो हज़रते मारिया रदियल्लाहो तअला अन्हा के बतने मुबारक से पैदा हुये थे, एक हदीसे पाक में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वासल्लम का इरशादे पाक है "क़यामत के दिन तुम्हें तुम्हारे और तुम्हारे आबा के नाम से पुकारा जायेगा, लिहाज़ा तुम अच्छे नाम रखा करो।" (मुसनदे अहमद)

रब तअ़ला ने हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम और हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम रखा इस नाम का पहले कोई ना था (यहिया, अहमद) अल्लाह के रसूल मोहसिने काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वाल्लम ने भी हज़रत इमामे हुसैन रदिअल्लाह तअ़ला अन्हो की पैदाईश के बाद आप के कान में अज़ान दी, मुँह में लुआबे दहन डाला और आप के लिये दुआ फ़रमायी फ़िर सातवे दिन आप का नाम हुसैन रखा और अक़ीक़ा किया, हज़रते इमामे हुसैन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब सिबते रसूल व रैहाने रसूल है।

हदीसे पाक में है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों का नाम शब्बर और शब्बीर रखा और मैंने अपने बेटों का नाम हसन और हुसैन रखा। (सवाइके मोहरिक़ा, स नं0-118)

सुरयानी ज़बान में शब्बीर और शब्बर और अरबी ज़बान में हसन और हुसैन दोनों के माने एक हैं, इब्ने अराबी मुज़फ़िल से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तअ़ला ने ये दोनों नाम पोशिदा रखे यहाँ तक कि नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वाल्लम ने अपने नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा। (असरफुल मोय्यद, स. नं0-70)

अहादीस में अच्छे नाम जिस से अबदियत का इज़हार हो उसे अच्छा क़रार दिया गया है, चुनाँचे अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान अल्लाह और रसुल लल्लह के नज़्दीक़ पसन्दीदा नाम हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

वालिदैन पर औलाद के हुक़ूक़

अच्छा नाम रखना हुक़ूक़े औलाद में से एक है, जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन दाहिने कान में अज़ान और बाई जानिब अक़ामत कहे कि ज़िल्ले शैतान व उम्मे सिबयान से बचेगा, हर बच्चे का नाम रखे, हदीसे पाक में है कच्चे बच्चे (जो कम दिनो में गिर जायें) उनका का भी नाम रखे, नाम ना रखने पर वह बच्चा अल्लाह अज़्ज़ वजल के यहाँ शिकायत करेगा, बुरा नाम ना रखे कि फ़ाले बद है, अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अहमद वग़ैरा रखे, अम्बियाए इकराम या जो अपने बुर्ज़गो में जो नेक गुज़रे हों उन के नाम पर रखे कि बाइसे बरकत है, ख़ुसूसन वह नाम जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम हैं, उस मुबारक नाम की बेपनाह बरकतें दुनिया व अख़िरत में बच्चों के काम आती हैं।

बुरे नामो को अच्छे नामो से बदलना

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अच्छे नाम रखने का इहतमाम फ़रमाते थे बल्कि अगर नामो के मानों में अच्छायी ना हों या उन में शुबहा हो तो उसे बदल दिया करते थे, हज़रते जैनब बिन्ते अबी सल्मा रदिअल्लाह तअ़ला अन्हा का नाम " बिर " था, जिस के माने नेकोकार हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का नाम इस लिये तब्दील फ़रमा दिया कि उसमें अपनी तारीफ़ का पहलू निकलता है, उस की वजह से नफ़्स कहीं धोका ना दे दे, लिहाज़ा आप का नाम ज़ैनब रखा, इसी तरह एक सहाबी का नाम "हुज़्न" था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का नाम इस लिये बदल दिया कि उस के माने सख्त ज़मीन के होते हैं और "सुहैल " नाम रख दिया, जिसके माने नर्म होने के हैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अच्छे नाम सुनकर खुश होते थे और उस के असरात के मुतमन्नी होते थे, सुलेह हुदैबिया के मौके़ पर मामला उलझा हुआ था, क़ुरैश की जानिब से सालिसी के लिये सुहैल आये तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया के कौन है, बताया गया के सुहैल हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़ वजल ने हमारे मामले को आसान कर दिया और फिर उन्हीं के ज़रिये सुलेह हुदैबिया का तारीख़ साज़ मुआहिदा वजूद में आया जिस को रब तअला ने "फ़तहे मोबीन " से ताबीर किया।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अक्सर व बेशतर सहाबाये इकराम रदिअल्लाह तअ़ला अन्हुम के नाम तब्दील फ़रमाये हैं ताकि नये नाम और इस्लाम लाने से उन के किरदार में नामो के मआ़नी के लिहाज़ से तब्दीली और बरकत शामिल हो जाये और वह सर ता पा इस्लामी रंग में ढ़ल जायें और नेकी का मुरक्क़ा बन जायें, सीरत की किताबों में बहुत से वाक़िआ़त मौजूद हैं, चंद मुलाहिज़ा फ़रमायें एक सहाबीए रसूल रदिअल्लाह तअ़ला अन्हो का नाम अस्वद (काला, गर्दआलूद, तारीक) से बदल कर अबयज़ (सफ़ेद) रख दिया, इसी तरह एक सहाबी का नाम अलजब्बार (जबर व ज़ुल्म करने वाला) से बदल कर अब्दुल जब्बार (जब्बार का बंदा) रख दिया, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदिअल्लाह तअ़ला अन्हो का नाम अब्दुल काबा (काबे का बंदा) से बदल कर अब्दुल्लाह (अल्लाह का बंदा) रख दिया, मशहूर सहाबी हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाह तअ़ला अन्हो का नाम अब्दुश्शम्स से बदलकर अब्दुर्रहमान रख दिया, इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आंसी, उतला, हकम, गुराब, हुबाब के नाम तब्दील फ़रमाये और अहराम को ज़ुर्आ, आ़सिया को जमीला और बूर्रा ज़ैनब से बदल दिया। (सुनने अबू दाउद)

हज़रत उमरे फ़ारूक़ रदिअल्लाह तअला अन्हो की एक बेटी का नाम आ़सिया था जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदल कर जमीला रख दिया (मुस्लिम शरीफ़)

ये बात ज़हन-शीन रहे के सही और दुरूस्त नाम ना रखने से बच्चे की शख़्सियत पर अच्छा असर नहीं पड़ता, इसलिये नाम ऐसा रखना चाहिये के जब बच्चा बड़ा हो तो उसे अपने नाम पर फ़ख्र महसूस हो और फ़ख्र उस वक़्त महसूस होगा कि जब उसका अच्छा इस्लामी नाम रखा जायगा, उस ज़िमन में इरशादे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है " जिस शख़्स के तीन बेटे हों और वह उन में से किसी का नाम मुहम्मद ना रखे तो वह बिलयक़ीन (इमानो इश्क़) के तक़ाज़े से जाहिल है। (तिबरानी शरीफ़)

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक क़यामत के दिन बदतरीन नामों में से उस शख़्श का नाम होगा जिसको शहनशाह कहते होंगें, अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान और ज़ियादा अच्छे नाम हारिस और हुमाम, अहमद, मुहम्मद हैं, जबकि बदतरीन नाम हर्ब और मुर्राह होंगें (अबुदाउद)

हज़रत शोरैह बिन हानी रदीयल्लाहो अन्हु

फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद अपनी क़ौम के साथ नबीए करीम सल्लललाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए तो आपने उनसे उनका नाम दरयाफ़्त किया, उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया कि मेरा नाम अबुलहिकम है, उस पर हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हिकम खुदा के क़ब्ज़ा व इख़्तियार में है, तुमने अबुल हिकम कुन्नियत क्यों मुक़र्रर की है? उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम में जब भी किसी मामला में इख़्तिलाफ़ होता है तो फ़रिक़ैन मेरे पास फ़ैसले के लिए आते हैं और मैं उन के दरमियान ऐसा फ़ैसला करदेता हूँ कि वो तमाम राज़ी हो जाते हैं और मेरे हुक्म को तसलीम कर लेते हैं, उस पर हुज़ूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "लोगों के दरमियान फ़ैसला और हिकम करना बहुत अच्छी बात है तुम्हारे कितने बच्चे हैं? उन्होंने कहा तीन बेटः शोरैह, मुस्लिम, अब्दुल्लाह, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः बस आज से तुम्हारी कुन्नियत अबू शोरैह है। (निसई)

इस से यह बात मालूम होती है कि नाम की मानिवयत ज़िन्दगी पर असर अंन्दाज़ होती है, अच्छी उर्फ़ियत अच्छे नाम से किरदार और शख़्सियत पर अच्छा असर पड़ता है और बुरे नाम, बुरी उर्फ़ियत से बुरा असर होता है, जैसा कि अबू जहल की उर्फ़ियत (जिहालत का बाप) उसे सारी ज़िन्दगी हल्क़ा बगौशे इस्लाम होने से दूर रखा, हुज़ूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम की ख़िदमत में एक सहाबी हाज़िर हुए हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम पूछा तो बताया गया हुज़न यानि पथरीली ज़मीन, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने यह नाम नपसंद फ़रमाया और कहा अपना नाम सहल यानी नर्म ज़मीन रख लो, मगर उन्होंने नाम तबदील न किया, कहा कि यह मेरे बाप ने रखा था, उन सहाबी के बक़ौल उनके ख़ानदान में सख़्ती बराबर क़ायम रही, यह नाम का असर है। (बुख़ारी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा जिसे "यसरब" कहते थे उसके माना में जबरो ज़ियादती और इल्ज़ाम का मफ़हूम पाया जाता है। इसलिये हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने उसका नाम ताबा और तय्यबा रखा, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद की "यसरब" को तय्यबा (ख़ुशगवार और उमदा) कहा जाय, मदीना का माना शहर के आये हैं, चूँकि यह मदीनतुर्रसूल है इसलिये उसका नाम ही मदीना पड़ गया, अब अगर बग़ैर किसी इज़ाफ़त के मदीना कहा जाये तो उस से मुराद मदीनतुर्रसूल, मदीना तय्यबा ही होगा, मदीने में बुख़ार की बीमारी आम थी। बड़ी शिद्दत का बुख़ार होता था, अक्सर आने वाले इसमें मुब्तिला होजाते थे, नये आने वाले उस की ज़द में आजाते, जिसकी वजह से जल्द ही वहाँ से रुख़सत होना चाहते थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने की तकलीफ़ें झेलने पर जन्नत की बशारत सुनाई और उसका नाम तय्यबा रख दिया तो नाम बदलने की बरकत से मदीना मुनव्वरा की फ़िज़ा अल्लाह के रहम व करम से ख़ुशगवार हो गई, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में देखा कि एक काली कालुटी औरत मदीना मुनव्वरा से निकल कर हज्फ़ा जहां यहूदियों की आबादी थे उस की तरफ़ चली गई, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह बीमारी जो हवा के ख़राब होने से फैलती थी एक वबा थी जो यहां से मुन्तक़िल हो गई, इस लिये बहुत से उलमा, मुफ़स्सरीन, शारेहीन ने यह लिखा है कि मदीना मुनव्वरा को अब "यसरब" कहना सही नहीं है।

नाम रखने में हद से गुज़रना

अक्सर यह बात देखने में आती है कि जब किसी के यहां बच्चा या बच्ची पैदा होती है तो सब से पहले वालिदैन को जिस मरहले का सामना करना पड़ता है वह बच्चे या बच्ची के नाम रखने का होता है जिसकी

रौशनी में बच्चा सब के लिये क़ाबिले मुहब्बत, क़ाबिले तवज्जोह और पुरकशिश बन सके और उसके नाम से ख़ानदान की इज़्ज़त व वक़ार बढ़े, ख़ाननदान भर में हर फ़र्द अपनी अपनी मरज़ी का नाम तजवीज़ करता है लेकिन जो नाम तजवीज़ होता है, उसके माना पर ग़ौर नहीं किया जाता हालांकि किसी भी नाम के असरात उसके माने के अन्दर पोशीदा होते हैं और माना ही शख़्सी किरदार की तशकील में अहम रोल अदा करते हैं, इसी तरह उसके नाम से ही मालूम होता है कि बच्चे या बच्ची किस मज़हब से ताअल्लुक़ रखते हैं? किस क़ौम से ताअ़ल्लुक़ रखते हैं और यह कि उसका नाम शरई, इस्लामी है या नहीं और यह कि यह नाम उस बच्चे के लिये मौज़ूँ भी है या नहीं। इसीलिये मज़हबे इस्लाम ने माना के ऐतबार से अच्छे नाम रखने का हुक्म दिया ताकि बच्चे की ज़िन्दगी की शुरूआत की पहली ईंट दुरुस्त तौर पर रखी जाये, नाम रखने में ग़ुलू की हद तक यकसाँ वज़न का ख़्याल रखा जाता है यानी सारे बच्चों और बच्चियों के नाम हम वज़न हों, हालांकि नामों के सिलसिले में यह इल्तिज़ाम ग़ौर ज़रूरी है, कभी कभी इस की पाबन्दी भोंडी मानवियत पैदा कर देती है, एक साहब के चन्द लड़के हैं, एक नाम शमीम है, दूसरे का नाम तसलीम, तीसरे का नाम करीम है और जब चौथा बच्चा पैदा हुआ तो उन्हें ये ख़ब्त सवार हुआ कि इस बच्चे का नाम क़ुरआ़न पाक से उसी वज़न पर रखेंगे, चुनाँचे बहुत तलाश करने के बाद उन्हें सूरए क़लम में ''ज़नीम'' लफ़्ज़ मिल गया, उन्होंने बग़ैर माने पर ग़ौर किये हम वज़न नाम ज़नीम रख दिया, कुछ दिनों के बाद उन के यहाँ एक आलिमे दीन मेहमान हुये, उन्होंने मेज़बान को अपने लाडले बच्चे को ''ज़नीम'' कह कर पुकारते हुये सुना, इस पर उन्हें बड़ा ताअ़ज्जुब हुआ कि बाप अपने बेटे को ख़ुद ''ज़नीम'' कह रहा है, ताअज्जुब की बात है, लेकिन तहक़ीक़ के बाद मालूम हुआ कि इस बच्चे का नाम ही ज़नीम है।

चुनाँचे आलिम साहब ने दरयाफ़्त किया कि आख़िर आप ने यह नाम क्यूँ रखा है? उन्होंने बड़ी मुसर्रत के साथ फ़रमाया कि असल में मैंने अपने इस बच्चे के नाम के मुताअल्लिक़ यह सोचा कि अपने दीगर बच्चों के नामों पर हमवज़न एक ही तरह का नाम हो और तमन्ना यह भी थी कि वह नाम क़ुरआन पाक से हो, बहुत तलाश के बाद यह नाम सूरह क़लम में मुझे मिल गया और मैंने यह नाम रख दिया, मेहमान आलिम ने कहा: इब्लीस, अबू-लहब और फ़िरऔन भी तो क़ुरआ़न में हैं, क्या यह नाम कोई रखना पसन्द करेगा? बिलआख़िर जब क़ुरआ़न में उस नाम का माना देखा गया तो ''ज़नीम'' का माना ''हराम ज़ादे'' का मिला, मेहमान आलिम ने कहा कि क्या कोई यह सुनना पसन्द भी कर सकता है? मेज़बान को बड़ी पशेमानी हुई और उस बच्चे का नाम बदल दिया गया, निसार अशरफ़ नाम रखा गया, आज कल नाम रखने में हम से बहुत ज़्यादा ग़लतियाँ हो रही हैं, जिस से हमारी तहज़ीब भी मुतअ़स्सिर हो रही है, इस से हमें बचना चाहिये।

नाम बिगाड़ना गुनाह है:

बच्चों के हुक़ूक़ में से यह भी है कि उनका नाम अच्छा रखा जाये और अच्छे नाम को बुलाते वक़्त भी महलूज़ रखा जाये, इसी तरह नाम बिगाड़ना भी गुनाह की बात है, क़ुरआ़न पाक में इसे "बीसल इस्मुलफ़ुसूक़" कहा गया है, लिहाज़ा किसी के नाम को बिगाड़ कर पुकारना नहीं चाहिये, इस में ख़ुद घर वालों की तरफ़ से कोताही होती है, वह प्यार में नामों का छोटा कर देते हैं और फ़िर वही नाम बन जाता है, इस से परहेज़ लाज़िम है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी का नाम पूछा, सहाबी ने कहा ''इसराम'' जिसके माने काँटे के आते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा नाम इसराम नहीं बल्कि ज़ुर्आ होगा, जिस के माना खेती और ज़ूदो सख़ा के होते हैं, बाद में वो सहाबी इसी नाम से मारूफ़ बक़िया स. 23 पर

महाशियात

1912 ई0 में इस्लामी माशियत का हमागीर मनसूबा

लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू

अज़: गुलाम मुस्तफ़ा रज़वी ★

20वीं सदी का इब्तिदाई दौर मुख़्तलिफ़ तहरीकात व नज़रियात का दौर था। सियासी सतह पर वुजूद में आने वाली तहरीक तर्के मवालात और तहरीके हिजरत ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों को मआशी व इक़तिसादी तौर पर कमज़ोर करके रख दिया था, इस से पेशतर सलतनते मुग़लिया का ज़वाल मामूली ज़ख़्म ना था इन हालात ने मुसलमानों को इब्तिला व आज़माइश से दो चार किया। 1912 ईसवी मुताबिक़ 1331 हिजरी में हिन्दुस्तान के एक इस्लामी मुफ़क्किर ने मुसलमानों की मआशी व इक़्तिसादी क़ुव्वत को संभालने के लिये हमागीर नज़रियात व मनसूबे पेश किये, इन सुतूर में हमें उन्हीं के मुतास्सिर कुन नज़रियात पर मुख़्तसर गुफ़्तगू मक़सूद है जो सिलसिलेवार कुछ इस तरह है :

(1) उन मामलों के अलावा जिन में हुकूमत दख़ल अंदाज़ है मुसलमान अपने मामलात बाहम फैसला करें ताकि मुक़द्दमा बाज़ी में जो करोड़ों रूपये ख़र्च हो रहे हैं पस अंदाज़ हो सकें।

(2) मुसलमान अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ ना ख़रीदें।

(3) बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, रंगून, हैदराबाद वग़ैरा के मालदार मुसलमान अपने भाईयों के लिए बैंक खोलें।

(4) इल्मे दीन की तरवीज व इशाअत करें।

इन कलमाते दानिश के तजज़ीए से क़ब्ल ज़रूरी मालूम होता है कि उस अहद के मआशी हालात पर कुछ रौशनी डाली जाए। मआशी व इक़्तिसादी उलूम का मुताला पहली जंगे अज़ीम के बाद 1929, 30 ईसवी में रोनुमा होने वाली आलमी कसाद बाज़ारी के नतीजे में अहमियत का हामिल बना, इस लिहाज़ से जदीद इक़्तिसादी नज़रये की इब्तिदा 1930 ई0 में हुई, 1936 ई0 में मग़रिबी माहिरे इक़्तिसादियात जे एम केंज (J.M. KENYES) ने "नज़रिय-ए-रोज़गार आमदनी" (बचत=सरमाया कारी) पेश किया जिस ने आलमी निज़ामे मईशत पर अपने गहरे असरात मुरत्तब किए, जिस पर उसे बर्तानवी हुकूमत ने "लार्ड" का ख़िताब अता किया, इस रू से अंदाज़ा होता है कि 1912 ईसवी में तरक़्क़ी याफ़्ता ममालिक भी इल्मे मआशियात की अहमियत को वाज़ेह नहीं कर सके थे, शायद उन पर भी इस इल्म की इफ़ादियत नहीं खुल सकी थी।

जब कि एक इस्लामी मुफ़क्किर ने मुसलमानों की फ़िक्रों को महमीज़ दिया था और सरमाए को पस अंदाज़ करने की तरग़ीब दी थी, नीज़ उस दौर में मुसलमानों की एक बड़ी तादाद ज़मीनदार थी और उनकी अमलाक कसीर, लिहाज़ा उन मुस्लिम रईसों और अमीरों में बाहमी इन्तिशार के नतीजे में मुक़दमा बाज़ी का रुजहान ज़्यादा पाया जाता था, इस तरह मुसलमानों की अमलाक दो तरफ़ा मुकदमों की नज़र होकर तबाह और बरबाद हो रही थी, इस इस्लामी मुफ़क्किर ने आपसी मामलात को इफ़हामों तफ़हीम से हल करने की फ़िक्र देकर सरमाए के तहफ़्फ़ुज़ की सिम्त रहनुमाई की, उस ने आपसी झगड़ों की कैफ़ियत इन अल्फ़ाज़ में बयान की है:

अव्वल पर ये अमल है कि घर के फैसले में अपने दावे से कुछ भी कमी हो तो मन्जूर नहीं और

★ मज़मुन निगार नूरी मिशन, मालेगांव महाराष्ट्र के रुक्न हैं।

कचहरी जाकर अगर्चे घर की भी जाए ठन्डे दिल से पसन्द, गिरह गिरह भर ज़मीन पर तरफ़ैन से दो दो हज़ार बिगड़ जाते हैं, क्या आप इन हालतों को बदल सकते हैं?

1930 इसवी के बाद जब ममलुकतों ने इक़्तिसादियात की अहमियत और इफ़ादियत को जान लिया तो सरमाए की बचत पर ज़ोर दिया और पस अन्दाज़ के तीन दरजे मुतय्यन किए:

(1) अन्दरूने मुल्क बचत के ज़रिये सरमाया इकट्ठा करना।

(2) दूसरे तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों से क़र्ज़ लेना।

(3) करेन्सी की पैदावार बढ़ाना, आख़िरी तरीक़ा ख़तरनाक है जिससे मआशी तबाही का अन्देशा है, इस लिये बेहतर तरीक़ा पस अन्दाज़ यानी सरमाए की बचत है, इफ़राते ज़र से हमारा मुल्क हिन्दुस्तान दो चार है, इस पर 2008 ई0 के इक़्तिसादी मन्सूबे में क़ाबू पाने के लिए तरजीही मन्सूबे बनाए भी गए और उस पर बड़ी हद तक क़ाबू पाया जा चुका है, अगरचे क़तई नहीं लेकिन 2008 ईसवी के मुक़ाबले में ग़नीमत है।

इस्लामी मुफ़क्किर के नज़रये पर 1912 ईसवी में अमल दर आमद की कोई सूरत निकल आती तो आज मुसलमान मआशी तरक़्क़ी में बजाए पस्ती के तरक़्क़ी याफ़्ता ममालिक से दो दहाई आगे होते, इस तरह आलमी सतह पर कमज़ोर इस्लामी ममालिक मआशी खुश हाली के नतीजे में ना क़ाबिले तस्ख़ीर क़ुव्वत साबित होते, बुनियादी ज़रूरीयात से फ़राग़त के बाद अपनी दिफ़ाई क़ुव्वत को संवारते और उस के सहारे तबाही और बरबादी से बच जाते और आज मुस्लिम ममालिक की तन्ज़ीम मुस्तहकम होती, UNO की तरह उसकी भी ताक़त तस्लीम की जाती।

इस मुफ़क्किर का दूसरा नुक्ता था:

अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ ना ख़रीदते कि घर का नफ़ा घर ही में रहता, अपनी हिर्फ़त व सनअत को तरक़्क़ी देते कि किसी चीज़ में किसी दूसरी क़ौम के मोहताज ना रहते।

इस्लाम ने सनअ़त व तिजारत को हलाल क़रार दिया है नीज़ उस में बरकत भी रखी है, अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ मगर यह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रज़ा मन्दी का हो" (सूरतुन्निसा 29)

आज जिस तरह से इस्लाम के ख़िलाफ़ मग़रबी क़ुव्वतें सरगर्मे अमल हैं इस से मुसलमान बेचैनी के शिकार हैं और नौबत यह आती है कि उन की पैदावार (मग़रबी अशिया) का ग़ैर मोअस्सिर बाईकाट किया जाता है, अगर मुफ़क्किरे इस्लाम के 1912 ई0 के मन्सूबे पर अमल हो जाता और मुसलमान आपस में ख़रीद व फ़रोख़्त कर रहे होते तो इस तरह के बाईकाट की नौबत भी न आती जबकि बाईकाट सिर्फ़ ज़बानी ही होता है और अमल सिफ़र, मुफ़क्किरे इस्लाम ने एक सदी पेश्तर उसे महसूस किया था और कहा था "अव्वल तो ये भी कहने ही के अल्फ़ाज़ हैं, ना उस पर इत्तिफ़ाक़ करेंगे ना हरगिज़ उसको निभाएंगे उस अहद को पहले तोड़ने वाले जेन्टिल मैन हज़रात ही होंगे जिनकी गुज़र बग़ैर यूरोपियन अशिया के नहीं।

मुफ़्फ़किरे इस्लाम ने 1912 में मुसलमानों को आपस में तिजारत और लेन देन की तरग़ीब दी थी, 1929 ई0 के बाद जबकि जर्मनी, इटली मआशी लिहाज़ से तबाह हो चुके थे, यूरोपियन मंडी की तश्कील हुई जो इस तर्ज़ की थी कि वो आपस में ही सरमाया कारी करते, ख़रीदो फ़रोख़्त करते और तिजारत को फ़रोग़ देते और इस तरीक़े से बहुत जल्द वो एक इक़्तिसादी क़ुव्वत बन गये जिससे उनकी करंसी का वज़न और वक़ार भी बढ़ा और आज उनकी करेन्सी आलमी अहमियत की हामिल और तिजारत पर असर अंदाज़ है, मुफ़्फ़किरे इस्लाम ने आपसी तिजारत से मुताअ़ल्लिक़ दो मिसालें दी थीं:

(1) अहले यूरोप को देखा है कि देसी माल अगरचे विलायती की तरह और उस से सस्ता भी हो हरगिज़ न लेंगे और विलायती महंगा ख़रीद लेंगे।"

(2) हिन्दू तिजारत के उसूल जानता है कि जितना थोड़ा नफ़ा रखे उतना ही ज़्यादा मिलता है और मुसलमान साहब चाहते हैं कि सारा नफ़ा एक ही ख़रीदार से वसूल कर लें।"

फ़रोग़ के लिये कोई मौक़ा नहीं छोड़ते लेकिन हमारे अपने लापरवाही का शिकार होकर मआशी गिरावट की राह जा पड़े, जब कि इस्लाम ने हुसूले मआश और तिजारत को भी ख़ैर के ज़ुमरे में रखा और सवाब की बशारत दी, मज़्कूरा नुक्ता मुसलमानों की सनअ़तों और फ़ैक्ट्रियों के क़याम से मुतअल्लिक़ किस क़द्र अहमियत का हामिल है यह बात छुपी नहीं, मआशी तरक़्क़ियात ने दुनिया को आलमी मण्डी में तब्दील कर के रख दिया है, ग्लोबलाइज़ेशन का तसव्वुर उसी की सराहत व वज़ाहत है लेकिन इस ज़िम्न में मुसलमानों की मआशी पैदावार का तनासुब कितना है? यह एक अलमिया है, मुफ़क्किरे इस्लाम के मंसूबे पर अगर मुसलमान कान धर लेते तो बर्रे सग़ीर की हालत मुख़्तलिफ़ होती।

इस्लामी मुफ़क्किर ने तीसरा नुक्ता दिया:

"मुम्बई, रंगून, मद्रास, हैदराबाद वग़ैरा के मालदार मुसलमान अपने भाई मुसलमानों के लिये बैंक खोलते, सूद शरअ़ ने हरामे क़तई फ़रमाया है मगर और सौ तरीक़े नफ़ा लेने के हलाल फ़रमाये हैं।"

यह बाद मख़फ़ी नहीं कि मौजूदा बैंकिंग के निज़ाम की बुनियाद सूदे मुरक्कब Compound Interest System पर है, इक्तिसादी मंसूबे के लिये सरमाया रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखता है और सरमाये के निज़ाम को चलाने के लिए बैंक की हैसियत मरकज़ी है, इस्लामी मुफ़क्किर ने बिला सूदी बैंकिंग का तसव्वुर 1912 ईसवी में दिया जब कि हिन्दुस्तान में चन्द बैंक क़ायम थे और वह भी अंग्रेज़ों के और बैंक की अहमियत भी कुछ ज़ाहिरो वाज़ेह नहीं हो सकी थी, इस मुफ़क्किर ने करेन्सी से मुताअल्लिक़ एक किताब भी लिखी बनाम "किफ़लुल फ़क़ीह अलफ़ाहिम फ़ी अहकामे किरतासिद्दराहिम" इस में बिला सूदी बैंकिंग सिस्टम पर बड़ी जामे और नतीजा ख़ेज़ तजावीज़ दी हैं, यह किताब उलामये हरमैन के एक सवाल के जवाब में तसनीफ़ फ़रमाई जो अरबी और उर्दू में हिन्द व पाक के अलावा दारुल कुतुब इलमिया बैरुत से भी शाये हो चुकी है। हराम से बचने की तालीम कुरआने मुक़द्दस ने दी है और सूद को हराम क़रार दिया, अललाह तआ़ला का इरशाद है "ऐ लोगों खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।" (अलबक़रह 68, कन्ज़ुल ईमान)

एक और मक़ाम पर क़ुरआन मुक़द्दस में इरशाद होता है "और अल्लाह ने हलाल किया बैअ़ और हराम किया सूद।" (सूरतुल बक़रह 275)

मुफ़क्किरे इस्लाम ने 1912 ई0 में बिला सूदी बैंकिंग का तसव्वुर दिया जब कि 1940 ईसवी तक कोई मुस्लिम बैंक क़ायम नहीं हो सका था, 1912 ईसवी में मुसलमान बेदार हो लेते तो आज आलमी बैंकिंग सिस्टम पर मुसलमानों का कंट्रोल होता।

यह बात भी लाइक़े ग़ौर है कि सरमाये के तहफ़्फ़ुज़ के लिये इसराफ़ से बचना ज़रूरी है, मौजूदा दौर में मुसलमान किस हद तक इस में मुब्तिला हैं यह बताने की ज़रूरत नहीं, मुफ़क्किरे इस्लाम ने इसराफ़ की शिद्दत के साथ मज़म्मत की, आप क़ब्र पर चिराग़, अगरबत्ती रौशन करने से मुताअल्लिक़ तहरीर फ़रमाते हैं "और क़रीबे क़ब्र सुलगाना अगर वहां न कुछ लोग बैठे हों न कोई तिलावत करने वाला या ज़िक्र करने वाला हो बल्कि सिर्फ़ क़ब्र के लिये जला कर चला आये तो ज़ाहिर मना है कि इसराफ़ व इज़ाअ़ते माल है।"

वाज़ेह रहे कि मज़ाराते औलिया से क़रीब ख़ुशबू के लिये और ज़ायरीन को सहूलत फ़राहम करने की ग़र्ज़ से जलाना अलग बात है और यह इसराफ़ के दर्जे में नहीं।

ग़र्ज़ कि उस मुफ़क्किरे इस्लाम ने क़ौम को बेदार करने की अन्थक कोशिश की, उस ने क़ौम को ईमान के लुटेरों से बाख़बर किया, दुश्मनों की साज़िशों से आगाह किया, उस ने एक शेर में बेदारी का फ़लसफ़ा बयान कर दिया:

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालों जागते रहियो चोरों की रखवाली है

उसके अफ़कार का चौथा नुक्ता "इल्मे दीन की तरवीज व इशाअ़त" से मुताअल्लिक़ है, वह एक माहिर तालीम था, वह 70 के लगभग उलूमो फ़ुनून में महारत रखता था, उस ने स्वालेह सरगर्म उलमा और मुदब्बरीन की एक पूरी टीम तैयार की जिस ने क़ौम की

अंजाम दिये, उसने इस्लामी निज़ामे तालीम को ज़िन्दगी बख़्शी जबकि मुग़लिया सलतनत के ज़वाल के नतीजे में इस्लामी मदारिस खस्ता हाल हो चुके थे और मुत्तहिदा हिन्दुस्तान में यहुदो नसारा के इश्तिराक से जदीद तालीम का ऐसा निज़ाम मुरत्तब हो चुका था जिसमें दीन से दूरी का पैग़ाम मुज़्मर था, मग़रिबी निज़ामे तालीम को मग़रिबी तहज़ीब व तमद्दुन के फ़रोग़ के लिये नाफ़िज़ किया जा रहा था।

ऐसे वक़्त में उसने इल्मो फ़न के हर शोबे में रहनुमाई की, साइंस व फ़लसफ़ा, रियाज़ी व हिन्दसा, तारीख़ व जुग़राफ़िया, मआशियात व इक़तिसादियात वग़ैरह हर इल्मो फ़न को दीन की बुनयादों पर बरता।

उसकी तालीमी बसीरत और नज़रियात पर यूनिवर्सिटीयों, कॉलेजों और जामिआत में तालीम की मुनासिबत से मास्टर डिगरी (M.Ed) के 18 मक़ाले (Thesis) लिखे जा चुके हैं, उसकी दीनी ख़िदमात के दूसरे मौज़ुआत पर युनिवरसिटयों मैं 28 से ज़्यादा डोक्ट्रेट (Ph.D) के मक़ाले और दरजन भर एम फ़िल (M. Fil) के मक़ाले लिखे जा चुके हैं, लेकिन मरहलए शोक़ हुनूज़ तय होना बाक़ी है और मज़ीद जलवे आशकार हुवा चाहते हैं।

वो इल्मो फ़न का बहरे बेकराँ था, वो अरब मैं भी मक़बूल और मशहूर था, उल्माये हरमैन ने उसे क़िस्म क़िस्म के अलक़ाब और आदाब से नवाज़ा, उसे "इमामुल मुहददीसीन" कहा, "मुफ़स्सरे शहीर" कहा, "बरकतुज़ ज़मान" कहा, अपना पैशवा व मुतक़्क़दा जाना, उसकी निगाह अपने ज़माने से आगे देखा करती थी, उसकी बसीरत को दानाये मशरिक़ इक़बाल ने भी ख़िराजो अक़ीदत पेश किया, उसकी रियाज़ी में महारत के जल्वे देख लेने के बाद अलीगड़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डा0 सर ज़ियाउददीन अहमद ने कहा कि "ये हस्ती सही मानों में नोबेल प्राइज़ की मुस्तहिक़ है।" उसकी मतबुआत व तहरीरात ने एक इनक़लाब बरपा कर दिया, वो सुन्नतों का दाई था, वो मुहाफ़िज़े इस्लाम था, मुजाहिदे इस्लाम था। पासबाने इस्लाम था और मुफ़क्किरे इस्लाम था, उसकी तसानीफ़ की इशाअ़त कई सिम्तो में होती थी, बरेली पटना, रामपुर, मुम्बई, आगरा, सीतापुर, कलकत्ता और लाहौर के इशाअ़ती इदारे उसकी किताबें बड़े शौक़ से शाए करते थे, उसका हमागीर इक़तिसादी मनसूबा "तदबीर फ़लाह व निजात व इस्लाह" के नाम से शाये हुआ और अफ़कार के लिये महमीज़ का सबब बना, उसको मुसलहे क़ौमो मिल्लत मौलाना लाल मुहम्मद ख़ाँ मद्रासी (कलकत्ता) के एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाया, उस पर आज भी अमल की उतनी ही ज़रूरत है जितनी के एक सदी पहले थी, वो सहबानुल हिन्द भी है, हस्सानुल हिन्द भी है, इमामुल हिन्द भी है और शेख़ुल हिन्द भी, अगर हिन्दुस्तान उस पर फ़ख़्र करे तो बजा है, वो फखरे इस्लाम भी है उसने मुसलमानों के वक़ार को बुलन्द किया, जो मर्दे मोमिन था, बक़ौला डॉ. इक़बाल:

हर लहज़ा है मोमिन की नई शान नई आन
गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान

वो मुहब्बते रसूल में सर शार था और उसी मुहब्बत को उसने आम किया, उस निस्बत से उसका नाम मुहम्मद था, तारीख़ी नाम अलमुख़्तार था, लेकिन वह खुद को अब्दुल मुस्तफ़ा लिखता और कहा करता था और दुनिया उसे आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा के नाम से जानती, मानती और पहचानती है।

मुफ़क्किरे इस्लाम इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी की विलादत 10 शव्वाल 1272 हिजरी मुताबिक़ 1856 ईसवी को हुई और विसाल 25 सफ़र 1340 हिजरी मुताबिक़ 1921 ईसवी को, आपकी दीनी और इल्मी ख़िदमात और अफ़कार की इशाअ़त अहद की ज़रूरत है और एक इल्मी ख़िदमत भी।■■■

स. नं. 19 का बक़िया

के वास्ते, खुदा को मत भूलो, उसके अहकाम से बेनियाज़ी न बरतो, उसके प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उसवए हसना से मूंह ना मोड़ो, उनकी गुलामी ही हमारी कामयाबी की ज़ामिन है और उनसे रूगर्दानी हमारी ज़िल्लत व ख़्वारी और ज़वाल का हक़ीक़ी सबब है।

उन के जो हम ग़ुलाम थे ख़ल्क़ के पेशवा रहे।
उन से फिरे जहाँ फिर आयी कमी वक़ार में ।

मज़ामीन

ज़वाले मुस्लिम के असबाब क्या हैं

अज़: मुश्ताक़ अहमद उवैसी अमजदी★

हालिया दिनों में मुसलमानाने आलम जिन हालात से दोचार हैं वो किसी से छुपी नहीं, कहीं मुसलमानों के ख़ून से होली खेली जा रही है तो कहीं उन का घर बार नज़रे आतिश किया जा रहा है, कहीं उन के जज़्बात को मजरूह करने की नापाक कोशिश की जा रही है तो कहीं उनकी हक़ तलफी की बेजा काशिश की जा रही है, कहीं शरीअत मुतहहरा में तबदीली की आवाज़ बुलन्द हो रही है तो कहीं शेआरे इस्लाम को मिटाने की बात कही जाती है, ग़र्ज़ कि हर तरह मुसलमानाने आलम दिनबदिन मग़लूब होते जा रहे हैं, ज़िल्लतो-ख़्वारी के कअ़रे अमीक़ में दफ़न होते दिखाई दे रहे हैं। और बातिल क़ौमों के सामने दबे कुचले नज़र आते हैं वरना यही वह क़ौम थी जिसकी शानो-शौक़त का डंका चहारदांगे आलम में बजता था, जिन का ग़ल्बा हर तरफ नज़र आता था, यही वह क़ौम थी जिसने बड़े-बड़े तूफ़ानों का रूख़ मोड़ा था और बहरे ज़ुलमात में घौड़े दौड़ाये थे जिसकी तरफ़ इशारा करते हुये शायरे मशरिक़ डॉक्टर इक़बाल ने कहा था:

दश्त तो दश्त है दरिया भी न छोड़े हमने
बहरे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हमने

मज़कूरा तनाज़ुर में आज का सबसे बड़ा और अहम सवाल यह है कि तरक़्क़ी पज़ीर क़ौमे मुस्लिम के ज़वाल का सबब क्या है? आख़िर इतन बड़ा फ़र्क़ क्यों? हम जब मुसलमानों के हालात, उनके चाल-ढाल, रहन-सहन, नशोबो-फ़राज़, मईशतो-मामलात पर ग़ौरो फ़िक्र करते हैं तो उस ज़्वाल का सबबे हक़ीक़ी मालूम होता है, वह है अल्लाह के हुक्म से रूगरदानी और उस्वए रसूल से दूरी, मग़रिबी तहज़ीब व तमददुन को अपनाना, जब तक क़ौमे मुस्लिम सही मअ़नों में अल्लाह के अहकाम पर आमिल रही, उसके हुदूद की हिफ़ाज़त करती रही और मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ए-ज़िन्दगी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारती रही, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनकी हिफ़ाज़त की, उनको ग़ल्बा अता फ़रमाया, बातिल क़ौमों की नज़रों में उनका रोब बिठा दिया, यही वजह थी जिस तरफ़ वह रूख़ करते थे फ़तहो-नुसरत उनके क़दम चूम लेती थी, कुफ़्फ़ारे नाहनजार उन से लरज़ते थे।

आप तारीख़े इस्लाम का मुताअ़ला करें तो मालूम होगा कि इस्लाम में सबसे पहली जंग, जंगे बद्र लड़ी गई, जिसे तारीख़ी सफ़हात में ग़ज़वए-बद्र कहा जाता है, यह जंग उस वक़्त लड़ी गई जब मुसलमानों के पास न अपनी ज़ाहिरी ताक़त थी ना ही माली क़ुव्वत, बल्के हर एतबार से मुसलमान कमज़ोर थे, तादाद में सिर्फ 313 जब कि मुक़ाबिले में दुश्मन 950 थे, मुसलमानों के पास सवारी के लिये फ़क़त 70 ऊँट और दो घोड़े और हथियार में 6 ज़िरह और 8 तलवारें थीं जब कि दुश्मनों के पास 100 घोड़े, 700 ऊँट, बकसरत ज़िरह और दीगर हथियार थे मगर जब माअ़रका आराई शुरू हुई, तलवारें चमकीं तो कुफ़्फ़ार लर्ज़ा बरअन्दाम होने लगे, लाशों की लाशे वासिले जहन्नम हुई, मुसलमानों की दादे शुजाअ़त से काफ़िरों का कलेजा दहलने लगा और देखते ही देखते अल्लाह ने मुठ्ठी भर निहथ्थे सरफरोश फ़रज़न्दाने इस्लाम को कामयाबियो-कामरानी से हमकिनार फ़रमा दिया, क़ुरआने मुक़द्दस में उसका तज़किरा यूं मिलता है: और बेशक अल्लाह ने

★ मज़मुन निगार इमाम अहमद रज़ा लरनिंग ऑन्ड रिसर्च सेंटर, नासिक महाराष्ट्र के रुक्न हैं।

सरो-सामान थे।(सूरह आले-इमरान आयत नं0 123)

अज़ीज़ क़ारईन! मैं दावते फ़िक्र देना चाहता हूँ कि कुफ़्फ़ार माद्दी ताक़त व क़ुव्वत में हर लिहाज़ से मुसलमानों से क़वी तर थे, जिसका तक़ाज़ा तो था कि मुसलमान कुचल दिये जाते, उनका नामो-निशान मिटा दिया जाता, उन्हे सफ़्हए हस्ती से ख़त्म कर दिया जाता, मगर ऐसा कुछ भी ना हुआ बल्कि उसके बर-ख़िलाफ कुफ़्फ़ार हार के शिकार हुये, आख़िर वह कौन सी ताकत कार फरमा थी जो मुसलामानों की पुश्त पनाही कर रही थी और मुसलमानों की तरफ़ से कुफ़्फ़ार से नबर्द आज़मा थी, यक़ीनन आपका यही जवाब होगा वह तादाद में ज़रूर कम थे, निहथ्थे, भूखे, प्यासे और कमज़ोर थे मगर अहकामे ख़ुदा पर कारबंद थे, हुदूदुल्लाह के मुहाफिज़ थे, अपने सीनों में ईमानी हरारत और रसूल की सच्ची मुहब्ब्त रखते थे जिस की वजह से अल्लाह ने उनकी हिफ़ाज़त फ़रमायी और यह नुस्खए कामयाबी सिर्फ़ उन हक़ परस्तों के साथ ख़ास न था बल्कि आज और कल सुबहे क़यामत तक जुमला फ़रज़न्दाने तौहीद के लिये क़ुरआन ने ज़ाबता दे दिया अगर क़ामयाब होना चाहते हो, इज़्ज़त और अज़मत के मीनार बनना चाहते हो तो ईमाने कामिल की दौलत अपने दामन में समेट लो फिर क़ामयाब तुम्ही रहोगे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो। (सूरह आले-इमरान 139)

शायरे मशरिक़ डाक्टर इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा है:

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमाँ पैदा।
आग कर सकती है अंदाज़े गुलिस्ताँ पैदा।

कामिल ईमान बंदों की हुकूमत न सिर्फ़ इंसानों पर होती बल्कि उनकी हुकूमत अल्लाह की तमाम मख़्लूकात पर हुआ करती है, तारीख़े इस्लाम का एक ज़र्री बाब अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूके आज़म रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु की सीरत तय्यबा है, आप की सीरते पाक का मुताअ़ला करने से मालूम होता है कि आप के दौरे ख़िलाफ़त में जब मिस्र फ़तह हुआ तो अमर बिन-आ़स रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु के पास वहाँ के लोगों ने आकर अर्ज़ किया: ऐ अमीर हमारे इस दरयाए नील की एक आदत है जिसके बग़ैर यह जारी नही होता, आप ने फ़रमाया वह क्या? वह कहने लगे जब माहे हाल की ग्याराह रातें गुज़र जाती हैं तो वह एक कुँवारी और इकलौती लड़की को उसके वालिदैन की रज़ामन्दी से ले लेते हैं और उसे निहायत ही नफ़ीस और उम्दा कपड़ों और ज़ेवर पहनाकर दरयाए नील में डाल देते हैं, अमर बिन आ़स रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कहा कि यह बात इस्लाम में कभी नहीं होगी क्योंकि इस्लाम जहालत के रसूमे बद को मिटाता है, लोग यह बात सुनकर उस बात से बाज़ रहे, मगर नील का पानी बहुत कम हो गया और लोगों ने उस रस्म को पूरा करने का इरादा किया, जब अमर बिन आ़स रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु ने यह बात देखी तो उन्होंने हज़रते उमर रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िदमत में इस किस्से को एक ख़त में लिखकर रवाना किया, तो हज़रते उमर रदीअल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उसका जवाब लिखा कि आप ने बहुत खूब किया जो इस रस्मे क़बीह से उन्हें रोक दिया, इस्लाम बेशक जाहिलियत की रस्मों को मिटाता है, मैंने अपने ख़त में एक रूक़आ लिखा है, उसे नील में डाल दो, जब अमर बिन आ़स रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु के पास वह ख़त पहुँचा तो उन्होंने उस छोटे से ख़त को खोलकर जो उस में लिखा था पढ़ा तो उस में लिखा था कि ये ख़त ख़ुदा तआ़ला के बन्दे उमर अमीरूर मोमिनीन की जानिब से नील मिस्र की तरफ़ है, अम्माबाअ़द: ऐ नील अगर इससे पहले तू ख़ुद जारी था तो अब जारी ना हो और अगर इससे पहले तू ख़ुदा के हुक्म से जारी था तो अब मैं ख़ुदाये क़हहार से सवाल करता हूँ कि तुम्हें जारी करे, अमर बिन आ़स रदीअल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उस ख़त

को तुलूअे सलीब से एक दिन पेशतर नील में डाल दिया जब सुबह हुई तो देखा कि एक ही रात में नील सोलह सोलह गज़ चढ़ आया है, उस दिन से वह बुरी रस्म मिस्र से जाती रही।(तारीख़ुल-खुलाफा मुतरजिम, स. नं0 155)

आप अन्दाज़ा करें कि यह कैसे अल्लाह के बंदे थे के एक हुक्म होता है तो पानी भी सरे नियाज़ ख़म कर देता है। बात दरअसल ये है कि इन बन्दों ने रब के आगे अपना सर झुकाया तो अल्लाह ने सारी खुदाई को उनके सामने झुका दिया, यह दर हक़ीक़त ''जो अल्लाह के लिए है, अल्लाह उस के लिए हैं'' की अमली तसवीर है।

बुलबुले शीराज़ हज़रत शेख साअ्दी शिराज़ी अलैहिर्रहमा लिखते हैं ''मैंने जंगल में एक आदमी को देखा जो शेर पर सवार था, मैं हैरान रह गया कि यह शख़्स शेर पर किस तरह सवार हुआ और शेर उसका फ़रमाबरदार कैसे हो गया? हज़रत साअदी फ़रमाते हैं, उस आदमी ने मेरी तरफ़ देखा और कहा :

तू अल्लाह के हुक्म से मुँह न मोड़े तो तेरे हुक्म से कोई चीज़ भी मुँह न मोड़ेगी।

आज क़ौमे मुस्लिम अहकामे खुदावंदी से मुँह मोड़कर शैतान की फ़रमाबरदारी, नफ़्स की पैरवी और दुनिया की रंगीनी में ऐसी रंग गई है कि मालूम होता है कि यही मक़सूद ज़िन्दगी और मन्ज़िले आख़री है, हमारी ग़फ़लतों को क़लम बंद करते हुये इमामे अहले सुन्नत सय्यदी सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं:

दिन लहव मे खोना तुझे, शब सुबह तक सोना तुझे
शर्मे नबी, ख़ौफ़े खुदा, यह भी नही वो भी नहीं
रिज़्के खुदा खाया क्या फ़रमाने हक़ टाला क्या
शुक्रे करम, तर्से सज़ा यह भी नही वो भी नहीं

हालाँकि यह इंसान की बहुत बड़ी गफ़लत और इन्तेहाई भूल है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया को दारे आज़माईश और दारे अमल बनाया है, एक मुक़र्रर वक़्त तक हमें इसमें आज़माइश से गुज़रकर हयात मुस्ताआ़र की तकमील करके दारे अख़िरत की तरफ़ कूच करना है।

असल ज़िन्दगी तो उख़र्वी ज़िन्दगी है जब तक अल्लाह के बंदे इस दुनिया से तरके तअ़ल्लुक़ कर के उख़रवीं ज़िन्दगी निखारने के लिये रब्बे तआ़ला की बन्दगी करते रहे, अल्लाह ने उन्हें रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी और बुलंदी अता फ़रमायी, कायनाते आलम की हर चीज़ उस के ताबए फ़रमान रही, वह अल्लाह की हर नेअ़मत से मुस्तफ़ीद होते रहे मगर जब से लोगों के दिलों से रब की बंदगी का शौक़ और यादे हक़ का ज़ौक़ रूख़सत हो गया, उस के अहकाम से बेनियाज़ी बरती गई तो इज़्ज़त व अज़्मत, ग़ल्बा व शौकत, कामयाबी व कामरानी, तरक़्क़ी व सरबुलंदी ग़र्ज़ हर चीज़ उनसे रूठ गई और हर क़िस्म की बुराई माँ-बाप की नाफ़रमानी, औलाद की हक़ तल्फ़ी, सूदख़ोरी, शराब नोशी, क़िमारबाज़ी, चुग़ली व बदअहदी, झूठ व बोहतान तराज़ी और ज़िना जैसी लानती अशिया हम में ज़ोर पकड़ने लगीं और देखते ही देखते मुसलमान इन रज़ील हरकतों का रसिया बन गया, नतीजन मुसलमानों की इज़्ज़त रफ़्ता-रफ़्ता कम होती चली गई फिर अज़ाबे इलाही का ला-मुतानाही सिलसिला शुरू हो गया, कभी ज़ल्ज़ला तो कभी नागेहानी आफ़ात व बलियात का बुरूद, कभी सैलाब का क़हर तो कभी खुश्क साली का ज़ोर, कभी क़त्ले आम तो कभी बुन्यादी हुक़ूक़ की पामाली।

मुसलमानों! खुदारा अपने हाले ज़ार पर रहम खाओ, अपने किये पर नदामत के आंसू बहाओ और आइन्दा इन ख़सीस अफ़आ़ल के इरतेकाब से बाज़ रहने का अज़्म मुसम्मम करो। याद रखो अभी भी वक़्त है, तुम अपनी खोई-हुई अज़्मत व शौकत पा सकते हो, अपना खोया हुआ वक़ार हासिल कर सकते हो, मगर शर्त है कि अल्लाह की बंदगी करो, खुदा बक़िया स. 41 पर

सरकारे ग़ौसे आज़म का दावती उसलूब

अज: मुफ़्ती डॉ० साहिल शहसरामी (अलीग) ★

इस्लाम दावत व इस्लाह का पयाम्बर है जिसकी बुनियाद हिकमत और खुश-उसलूब मौईज़त पर रखी गई। आक़ाए-दोजहाँ रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने अपनी हकीमाना तफ़हीम और दिलकश अख़्लाक़ से दिलो की दुनिया फ़तह की और उनमें इमान के जगमगाते आफ़ताब रौशन किये, आप ने इस जहाने रंगो-बू की ज़ाहिरी महफ़िल को अलवदा कहा तो कुफ्र की तारीकियों के बालो- पर फिर निकल आये, इरतिदाद का एक सिलसिला चल निकला लेकिन आपके जानशीने अकबर सय्यिदुना सिदद्दीके अकबर रदिअल्लाहु अन्हु की पामरदी और इस्तिक़ामत के जज़्बों से लबरेज़ मसाई-ए-जमीला ने इस्लाम को ताक़त दी और फिर हज़रते फ़ारूके आज़म रदिअल्लाहु अन्हु के ज़माने में इस्लाम की नूरानी शुआऐं बहरो-बर की वुसअ़तों में फैल गई, हज़रते उस्माने ग़नी और सय्यदना मौलाए-कायनात अलीए मुर्तज़ा रदिअल्लाहो अन्हुमा का दौरे ख़िलाफ़त शोरिशों और फ़ितना समानियों की नज़र रहा, जिसका नुक़तए अख़ीर बदबख़्त यज़ीद की अज़ली शकावतों और 61 हिजरी में अलमनाक तरीन सानिहए-करबला की शक्ल में नमूदार हुआ, ख़िलाफ़त के बाद इमारत ने रंग जमाया, उमवी और अब्बासी दौरे हुकूमत इस्लामी तारीख में रौशन और तारीक दोनों क़िस्म के नुक़ूश रखता है, उस दौर की रौशनी तो यह है कि इस्लामी हुकूमत में तक़रीबन 80 ममालिक शामिल हो चुके थे और उलूमो-फुनून की तदवीन ने हज़रत मौलाए-कायनात के दौर में जो संगे बुनियाद रखा था वह अब खूबसूरत इमारत की शकल में तब्दील हो चुका था, हदीस व तफ़सीर, नहव व सर्फ़, अदब, फ़िक़्ह और उसूल के बुनियादी मसादिर इसी दौर की शानदार यादगारें हैं, वसाइले हयात की फ़रावानी, माद्दियत की बढ़ती क़द्रों ने इंसानों को खुश ऐश और पुरतकल्लुफ़ बना दिया था लेकिन इन फूलों के गिर्द कई बड़े नुकीले और चुभते कांटे भी थे जिनकी टीस आज भी हर हस्सास दिल में महसूस होती है, तख़्ते हुकूमत के लिये ख़ूने मुस्लिम की अरज़ानी जितनी इस दौर में हुई, उसकी नज़ीर कम नज़र आती है, माद्दी वसाइल की वुसअ़तों ने दिल को दीन से दूर और दुनियावी हवस कारीयों से क़रीबतर कर दिया था, ज़हनों में सज़िशों और फ़ितनों ने रंग जमा लिया था, ऐशो-तर्ब की महफ़िल आबाद और दीनी क़दरें पामाल हो रही थीं। अहले सरवत ऐश के शेवों में मसरूफ़, उलमा हिरसो-हवस के असीर और तमल्लुक़ की रज़ालत में डूबते जा रहे थे। सूफ़िया और ज़ुहहाद रियाकारी की दलदल में धंस चुके थे। ख़ुदसरी और सरकशी फ़ितरी वतीरा और तसादुम व ख़ूनरेज़ी इंसानी मशग़ला बन चुका था। तवाइफ़ुल- मुलूकी के उस दौर में इस्लाम दुश्मन ताक़तों ने भी अपने इन्तेक़ामाना हौसले निकालने शुरू कर दिये। तरह-तरह के अक़ाईद मुसलमानों पर थौपे गये। नसब, ख़ूरूज, रफ़ज़, ऐतिज़ाल, बातनियत, क़रामता के दरमान्दा गिरोह भी इसी दौर की यादगार हैं, यहूदियत और ईसाइयत से माअ़रका आराईयों का सिलसिला चल पड़ा था। इस दौर के आख़री मरहले में एक हादीए- उम्मत, मोहसिने मिल्लत उठा और अपने नफ़सान सोख़्ता से इस्लाम के चमकते हुये चराग़ की लौ तेज़ कर गया। इस्लामी क़द्रें फ़िर से ज़िन्दगी की हरारतें लेकर उठीं और अन्फ़सो- आफ़ाक़ की वुसअ़तों पर छा

★ मज़मुन निगार मुम्बई में मुक़ीम अहले सुन्नत के मशहूर इस्लामिक स्कालर हैं।

गई उस की जाँ बख़्श सदाओं ने दिलों की ख्वाबीदगी को बेदारी बख़्शी, बहकी फिक्रों को सही सम्त अता की, जबरो इस्तिबदाद में पिस्ती इंसानियत ने चैन की सांस ली, इस्लाम की सूनी बज़्में आरास्ता हुई, तसव्वुफ़ के गुबार में अटे चहरे फिर शफ़्फ़ाफ़ हो गये, इस्लाम का रूए-ज़ेबा ईमान की चाँदनी मे निखर गया, उसी ज़ाते गिरामी को दुनिया शैखुल इस्लाम, मुहीउद्दीन अबू मुहम्मद सय्यद अब्दुल क़ादिर हसनी हुसैनी जिलानी रदिअल्लाहु अन्हु कहती हैं, जिन्होंने अपने जद्दे करीम सय्यदना इमाम हसन मुजतबा और सय्यदना इमाम हुसैन शहीदे कर्बला रदिअल्लाहु अन्हुमा के क़दम ब क़दम चलकर इस्लाम की डूबती नब्ज़ को ज़िन्दगी की हरारतें बख़्शीं। पहले सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु अन्हु के पाकीज़ा औराक़े हयात के इज्माली मुताले से हम अपनी फ़िक्र को ताज़गी बख़्शते हैं फिर एक निगाह आप के दावती उस्लूब पर।

सरकार ग़ौसे आज़म सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रदिअल्लाहु अन्हु 470 हिजरी में हज़रत अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त के घर गीलान में हज़रत उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा बिन्ते सुमई के बतने मुबारक से पैदा हुये। उस वक़्त आप की वालिदा माजिदा की उमर साठ साल की हो चुकी थी, आप नजीबुत्तरफ़ैन सय्यद, वालिद माजिद की जानिब से हसनी और वालिदा माजिदा की तरफ़ से हुसैनी हैं, आप इब्तिदाए आफ़रीनश से करामत आसार थे।

आप ने शीर ख़्वारगी के ज़माने में भी रोज़े के औक़ात में शीरे मादर नोश ना फ़रमाया, शिकमे मादर ही में वालिदा माजिदा की तिलावत सुन कर पन्द्रह पारे हिफ्ज़ कर चुके थे। बचपन ही से हर एक आप से शफ़क़त व इकराम का मामला रखता। अठारह साल की उमर में उलूमे ज़ाहिरी की तहसील के लिए उरुसुल बिलाद बग़दाद पहुँचे और नामवराने फ़न से भरपूर इस्तिफ़ादे किये जिन में आरिफ़ बिल्लाह हज़रत हम्माद दब्बास क़ुद्दिस सिर्रहू और क़ाज़ी अबू सईद मुबारक मख़्ज़ूमी क़ुद्दिस सिर्रहू ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं। इन में हज़रत मख़्ज़ूमी से आप को ग़ायत दर्जा अक़ीदत थी और फिर यही आप के शेख़े तरीक़त ठहरे। आप ही के इरशाद के मुताबिक़ शाह जीलाँ ने मदरसा बाबुल अज़ज में दर्सो-इफ़ादा का सिलसिला शुरू किया। आप के क़दमे मुबारक से तलबा का इस क़द्र इज़्दिहाम हुआ कि क़दीम इमारत ना काफ़ी हो गई तो बग़दाद के इल्म दोस्त हज़रात ने उसे वुस्अत देकर शानदार नई इमारत तैयार कराई और मदरसा "क़ादरिया" नाम रखा। आप का दर्स तफ़सीर, हदीस, फ़िक़्ह, उसूल, नहव और तजवीद के मौज़ूआत पर मुहीत होता। तफ़सीर व हदीस के वह गिराँ क़द्र निक़ात इरशाद फ़रमाते कि आप के असातिज़ा और असातीने फ़न भी अंगुश्त बदन्दाँ रह जाते, इफ़्ता नवेसी, रुश्दो-हिदायत और वाज़ो तलक़ीन भी आप के नुमाया मशाग़िल थे।

आपने वाज़ का सिलसिला 16 शव्वाल 521 हिजरी मंगल के दिन से शुरू फ़रमाया, शुरु में झिजक रही क्योंकि आप अज़मी थे और बग़दाद फ़ुसहाए अरब का गहवारा! लेकिन फ़ैज़े रिसालत मआब और फ़ैज़ाने मुर्तज़ा ने आप की ज़बाने मुबारक में ऐसी रवानी और ताक़त पैदा कर दी कि मज़ामीन का एक सैले रवाँ होता जो आपके दहने मुबारक से निकलता चला जाता। तासीर ऐसी मिली थी कि पत्थर दिल भी मोम हो जाते, सियाहकार तायब होते, तक़वा शिआरों को सबात मिलता और कुफ़्र की आलूदगी में लुथड़े हुए लोग सर चश्मए इस्लाम के क़रीब आकर शफ़्फ़ाफ़ हो जाते। सत्तर हज़ार अफ़राद पियादा और घोड़ों पर सवार आप की महफ़िले वाज़ में शरीक होते। आप के मवाइज़े हसना को चार चार सो अफ़राद क़लम बन्द करते। इस महफ़िल में सैकड़ों अफ़राद इस्लाम क़ुबूल करते, फिस्क़ो-फ़ुजूर से तायब होते और आप जब ये फ़रमाते "अब हम क़ाल से हाल की तरफ लौटते हैं" तो लोगों पर

वजद की ऐसी कैफ़ियत तारी होती कि बेहाल हो जाते, बहुत से लाग मुर्ग़े बिस्मिल की मानिन्द तड़पने लगते और बाज़ तो वहीं जान जाने आफरीं के सुपुर्द कर देते, आप अपने ख़लवत क़दे से बहुत कम निकलते। जलाल और जमाल के संगम, रक़ीकुल क़ल्ब, नहीफुल जुस्सा, मुतवस्सित क़द, कुशादा सीना, दराज़ रीश, बलन्द आवाज़ और खुश रफ़तार थे। आपके रोअ़बो जलाल के सामने किसी को सर ताबी की मजाल न थी। ख़लीफ़ये वक़्त को जब किसी हाजतमन्द के सिलसिले में ख़त लिखते तो ये तहरीर फ़रमाते "अब्दुल क़ादिर तुमको इस बात का हुक्म देता है, तुम पर उस का हुक्म नाफ़िज़ और इस हुक्म की इताअ़त वाजिब है" हज़रत गौ़से आज़म ने बेशतर ज़बानी तलक़ीने हिदायत कि लेकिन आप से चन्द तसानीफ़ भी यादगार हैं जिन में कुछ आप के मवाइज़े हसना के मजमूए हैं: 1 फुतूहुल ग़ैब, 2 अलफतहुर रब्बानी, 3 गुनयतुत तालिबीन, 4 बशाइरूल ख़ैरात, 5 अलयुवाक़ीत वलहिकम, 6 अल फ़ुयुज़ातुर रब्बानिया, 7 अल मवाहिबुर्रहमनिया, 8 जिलाउल ख़ातिर, 9 सिर्रुल असरार, 10 रदुर्रफ़ज़ा 11 तफ़सीरुल क़ुरआनिल हकीम (2 जिल्दें), 12 मजमुए कलाम, का शुमार आपकी निगारेशात में होता है। गौ़से आज़म के मुख़्तलिफ़ अज़्वाजे मुकर्रिमात से गयारह शहज़ादे और एक शहज़ादी तवल्लुद हुई।

सरकारे गौ़से आज़म रदि़अल्लाहु तअ़ला अन्हु का विसाले मुबारक 11/ रबीउलअव्वल 561 हिजरी / 1165 ईसवी में हुआ और ज़ायरीन के हुजूम के सबब दूसरी शब में उसी जगाह तदफ़ीन अमल में आयी, जहां आप दर्सो-इफ़ादा की बिसात बिछाते थे।

ख़ानवादए-रिसालत के मुमताज़ बुज़ुर्ग सरकार गौ़से आज़म रदि़अल्लाहु तअ़ला अन्हु ने इन्तेशारे फि़तन के दौर में जिस तरह मिल्लते इस्लामिया के वजूद को संभाला और बातिल के सामने ऐलाए कलिमतुल-हक़ की जैसी क़ायदाना ज़िम्मेदारी निभाई वह अपने आप में बेनज़ीर है।

सरकारे गौ़से आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपनी तक़रीरों और तहरीरों में उम्मत के हर तबक़े की इस्लाहो-तज़कीर और दावतो-इरशाद का फ़रीज़ा अन्ज़ाम दिया। आप ने अक़ायद से लेकर आमाल तक, इल्म से लेकर अमल तक, ख़ानक़ाह से लेकर सियासत तक, तिजारत से लेकर तालीम व तदरीस तक हर तबकए-उम्मत के बेराह रवी की इस्लाह फ़रमाई और इस ज़ैल में आप ने किसी का लिहाज़ नहीं फ़रमाया। आप को खुदा दाद ऐसा रोअब हासिल था कि किसी को आप के सामने मजाले दम ज़दन ना थी। यहाँ चंद इक़्तिबासात बतौर मिसाल पेश करता हूँ। तफ़सील के लिये आप की तसनीफ़ाते मुबारका और मजमूआए ख़ुतबात का मुताला करना चाहिये।

इत्तिबाए-ज़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमान की रूह है, वाबस्तगीए मुस्तफ़ा के बग़ैर हर चीज़ और हर अमल अकारत है, इमामे इश्को मोहब्बत ने खूब फ़रमाया:

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा, रोज़ फ़ुज़ूँ करे ख़ुदा।
जिसको हो दर्द का मज़ा, नाज़े दवा उठाये क्यों।

अल्लाह की सर ता बक़दम शान हैं ये
इन सा नहीं इंसान, वह इंसान हैं ये
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं ये

अर्सए क़दीम से ज़िनदीक़ सिफ़त नाम निहाद सूफ़ियों का एक गिरोह रहा है जो ये कहता है कि हमें इत्तेबाए-मुस्तफ़ा और उन की शरिअ़त की क्या ज़रूरत? हम तो अल्लाह तक पहुँच चुके, रसूल की इत्तेबा की अब क्या हाजत? इस गिरोह को ख़बर दार करते हुये सरकारे गौ़से आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं:

"तुम अपनी निसबत अपने नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के साथ सही कर लो, जो सही मानों में आप का पैरोकार हुआ उस की निसबत सही है, इत्तेबा के बग़ैर तुम्हारा ये कह देना मुफ़ीद नहीं कि मैं हुज़ूर की उम्मत में हूँ, जब तुम अफ़आलो-अक़्वाल में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु आलैहि वसल्लम की इत्तेबा करोगे तो उन की सोहबत में होगे।'' (अलफ़तर्हुरब्बानी, स 91)

इसी में दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया जो शख़्स नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम की पैरवी नहीं करता, एक हाथ में आप की शरीयत और दूसरे हाथ में क़ुरआन पाक नहीं रखता, उस की रसाई अल्लाह तआ़ला की बारगाह तक नहीं हो सकती, वह तबाह और बरबाद हो जायेगा, गुमराही और ज़लालत उस का मुक़द्दर होगी, ये दोनों बारगाहे इलाही तक तेरे रहनुमा हैं, क़ुरआन पाक तुम्हें दरबारे ख़ुदा तक और सुन्नत, बारगाहे मुस्तफ़ा तक पहुँचायगी।''(स-91)

जो शख़्स आदाबे शरियत नहीं अपनाता, क़्यामत के दिन आग उसे अदब सिखायगी। (स-91)

''वह हक़ीक़त में बेदीनी है जिस के लिये शरियत गवाही न दे।'' (स-90)

मज़ीद दूसरी जगह फ़रमाते हैं '' ऐ लड़के! अपने दिल को रिज़्क़े हलाल के ज़रिये साफ़ कर, तुझे मारफ़ते इलाही हासिल हो जायगी, तू अपने लुकमे को, अपने लिबास और दिल को पाक साफ़ कर, तुझे सफ़ाई मिल जायेगी। तसव्वुफ़ सफ़ा से बना है, ऐ ऊन का लिबास पहनने वाले, तसव्वुफ़ में सच्चा सूफ़ी वह है जो अपने दिल को अपने मौला के मा सिवा से पाक कर ले और ये मक़ाम रंग-बिरंगे कपड़े पहनने, चेहरों को ज़र्द कर लेने और कन्धों को झुका लेने, औलियाए-कराम के वाक़िआत ज़बान पर सजा लेने और तस्बही व तहलील के साथ उंगलियों के मुतहर्रिक कर लेने से हासिल नहीं होता। ये मक़ाम, मौला तआ़ला को सच्चे दिल से तलब करने, दुनिया से बेनियाज़ हो जाने, मख़लूक़ को दिल से निकाल देने और अपने मौला के मा सिवा से अलग थलग हो जाने से हासिल होता है।(फ़तहुर्रब्बानी, स-90)

उलमा के एक तबक़े को ये भी गुरूर रहता है कि हमें दूसरों की दुआओं और तौबा व इस्तिग़फ़ार की क्या ज़रूरत?दूसरे तो खुद हमारी दुआओं के मोहताज हैं, हम तो बख़्शे बख़्शायें हैं, अलबत्ता दूसरों की मग़फ़िरत हमारे तुफ़ैल होगी, हमें अब अमल करने की क्या ज़रूरत? इस तब्क़े को खबरदार करते हुये सरकारे ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं: ''इल्म छिलका है और अमल मग़ज़, छिलके की हिफ़ाज़त इस लिये की जाती है कि मग़ज़ महफ़ूज़ रहे और मग़ज़ की हिफ़ाज़त इस के लिये की जाती है कि उससे तेल निकाला जाये, वह छिलका किस काम का जिसमें मगज़ न हो और वह मग़ज़ बेकार है जिसमें तेल न हो, इल्म ज़ाया हो चुका है क्यों कि जब इल्म पर अमल ही न रहा तो इल्म भी ज़ाया हो गया। अमल के बग़ैर इल्म का पढ़ना और पढ़ाना क्या फ़ायदा देगा? ऐ आलिम! अगर तू दुनिया और आख़िरत की भालाई चहता है तो अपने इल्म पर अमल कर और लोगों को इल्म सिखा'' (अलफ़तहुर्रब्बानी, स-106)

मुझे तेरी तारीफ या बुराई, देने और ना देने की फ़िक्र नहीं है, तेरी ख़ैर और शर और तेरे मुतवज्जह होने या ना होने को भी मैं ख़ातिर में नहीं लाता, तू जाहिल है और जाहिल की परवाह नहीं की जाती, अगर तुझे मौक़ा मिले और तू अल्लाह की इबादत करे तो तेरी इबादत मरदूद होगी, क्योंकि यह इबादत, जहालत पर मबनी है और जहालत तमाम तर फ़साद का बाइस है।" (स. 70)

देखो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम अपने हाथ से साइल को दिया करते थे, अपनी ऊँटनी को चारा डालते, उसका दूध दुहते और खुद अपना कुरता सिला करते। तुम उन की मुताबअ़त का दावा कैसे करते हो? जब के अक़्वालो-अफ़आल में उन की मुख़ालिफत कर रहे हो।" ऐ मोलवियो, ऐ फ़क़ीहो, ऐ ज़ाहिदो, ऐ आबिदो, ऐ सूफ़यो तुम में कोइ

ऐसा नही जो तौबा का हाजत मन्द ना हो, हमारे पास तुम्हारी मौत और हयात की सारी ख़बरें हैं। सच्ची मुहब्बत जिस में तग़य्युर नहीं आ सकता वो मुहब्बते इलाही है, वही है जिस को तुम अपने दिल की आँखों से देखते हो और वही मुहब्बत रूहानी सिददीक़ो की मुहब्बत है, ऐ नफ्स ख़्वाहिश, तबीअ़त और शैतान के बन्दो! मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मेरे पास तो हक़ दर हक़, मग़ज़ दर मग़ज़ और सफ़ा दर सफ़ा तोड़ने और जोड़ने के सिवा कुछ नही है यानी तोड़ना मा सिवाए अल्लाह से और जोड़ना अल्लाह से..........ऐ मुनाफ़िक़ो, ऐ दावा करने वालो, ए झूटो मैं तुम्हारी हवस का क़ाइल नहीं, अहले दिल की सोहबत इख़्तियार करो ताकि तुम को भी दिल नसीब हो लेकिन तुम्हारे पास तो दिल ही नहीं, तुम तो सरापा नफ़्स व तबीअत और हवस हो.......ऐ बग़दाद के रहने वालो! तुम्हारे अन्दर निफ़ाक़ ज़्यादा और इख़लास कम हो गया है और बे अमल बातों की फ़रावानी है, अमल के बग़ैर क़ौल किस काम का? तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा बेरूह जिस्म की तरह है, ग़फ़लत मत करो, अपनी हालत को पलटो ताकि तुम को राह मिले, ऐ आलिमो और ज़ाहिदो! बादशाहों और सुल्तानों के लिये तुम कब तक मुनाफ़िक़ बने रहोगे? ताकि तुम उन से मालो-ज़र, शहवतें और लज़्ज़तें हासिल करते रहोगे........(ऐ मौलवी) तू अहवाले बातिनी को नहीं पहचानता तो तू उन में कलाम क्यों करता है? तुझे अल्लाह तआ़ला की मारफ़त हासिल नहीं, तू उस की तरफ़ क्यों बुलाता है? तू सिर्फ़ उस मालदार को पहचानता है, उस बादशाह को पहचानता है, तेरे लिये कोई रसूल व मुर्सिल नहीं है, तू वरअ़ और परहैज़ के साथ नहीं खाता है, तू हराम तारीक़े से खाता है, दीन के बदले दुनिया का खाना हराम है, तू मुनाफ़िक़ है, दज्जाल है, मैं मुनाफ़िक़ों की दुकानों का दुश्मन हूँ, उन की अक़लों को तबाह करने वाला हूँ, मेरे कुदाल उस मुनाफ़िक़ का घर तबाह कर देंगे और उस का ईमान सल्ब कर लेंगे जिसका वह दावेदार है। (स-244)

अगर कोई रहमत और बरकत बरक़रार रहे तो उसे अल्लाह की तरफ़ से जानकर शुक्र अदा करो क्योंकि अल्लाह ही हर शै पर क़ादिर है, अल्लाह को अपनी कुदरत में कामिल समझो, रसूले अकरम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के उसवए हसना की पैरवी करो, हुज़ूर नबीए-अकरम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम पर कुरआनी आयात मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से उतारी गई और कश्फ़ो मारफ़त की हर दूसरी हालत अपनी पहली हालत से आला व अरफ़ा हुआ करती थी और हाँ! जब कभी इल्तेवा और हिजाब वारिद होता तो रसूले अकरम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम इस्तिग़फ़ार से काम लिया करते, इस्तिग़फ़ार ततहीरो-तदवीने ज़ात और जिलाये क़ल्ब का मूजिब बनती है, इस्तिग़फार ही बंदे का बेहतर हाल है।

तौबा और इस्तिग़फ़ार अबुल बशर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मिरास है, जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपना इरादा और ख़्वाहिश उजागर की तो खुदा ने हालात बदल दिये, फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जब उस का एहसास दिलाया गया तो उन्होंने भी इस्तिग़फ़ार से काम लिया कि ''ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है और अब अगर तू हमें माफ़ नहीं फ़रमायगा तो हम दायमी ख़सारे में रहेंगे।'' फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उन की तौबा क़बूल फ़रमायी और उन्हें शऊरो-आगही बख़्शी और तौबा के असरार उन पर मुनकशिफ़ किये, इस तरह उनहें दुनिया में रहने की जगह मिली, उस में उन की औलाद भी रहने लगी, पस बंदे को हर हाल में न्याज़मंदी और इस्तिग़फ़ार को अपनाना चाहिये कि यह पैगम्बराना वसफ़ है। (अलफतहुर्रब्बानी)

फिर ऐसे दुनियादार मौलवियों से बचने की तलक़ीन करते हुये इरशाद फ़रमाते हैं:

उन लोगों की बात ना सुनो जो अपने नफ़्स को

खुश करते हैं, बादशाहों के सामने ज़िल्लत इख़्तियार करते हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला के अवामिर व नवाही नहीं सुनाते हैं, अगर सुनाई भी तो अज़ राहे मुनाफ़िक़त और तकल्लुफ़ सुनायेंगे, अल्लाह तआ़ला ज़मीन को उन से और हर मुनाफ़िक़ से पाक फ़रमा दे या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे अपने दरवाज़े की जानिब हिदायत अता फ़रमाये। (स-645)

"तुम उन उलमा की सोहबत इख़्तियार ना करो जो अपने इल्म पर अमल नहीं करते, उन की सोहबत तुम्हारे लिये नहूसत का बाइस होगी।" (ऐज़न, स-51)

लेकिन उन उलमाये सू और दुनिया दार मौलवियों की वजह से बाअमल उलमाए किराम और सुलहाए इज़ाम की मोहब्बत और अक़ीदत कम ना हो जाये, इस लिये उम्मते मुस्तफ़वी को खबरदार करते हुये इरशाद फ़रमाते हैं:

"पहले लोग दीन और दिलों की अतिब्बा, औलिया और सॉलिहीन की तलाश में मशरिक़ व मग़रिब का चक्कर लगाते थे, जब उन्हें उन में से कोई मिल जाता तो उस से अपने दीन की दवा तलब करते थे, और आज तुम फ़ुक़हा, उलमा और औलिया से बुग़्ज़ रखते हो जो अदब और इल्म सिखाते हैं, नतीजा ये है कि तुम दवा हासिल नहीं कर पाते।" (ऐज़न, स-127)

अमले ख़ैर की तल्क़ीन करते हुये उम्मते मुसलिमा को नसीहत फ़रमाते हैं, ज़रा उस्लूब का सोज़ और तलक़ीन का अन्दाज़ मुलाहिज़ा फ़रमाइये, सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं:

"ऐ लड़के! तू दुनिया में बक़ा और ऐश के लिये पैदा नहीं किया गया, अल्लाह तआला के नापसंदीदा उमूर को तबदील करदे, तूने समझ लिया है कि अल्लाह तआ़ला की इताअत के लिये ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मददुर्रसूलल्लाह पढ़ लेना काफ़ी है, यह तेरे लिये उसी वक़्त मुफ़ीद होगा जब तू इस के साथ कुछ और उमूर (आमाले सॉलिहा) मिलायेगा, ईमान इक़रार और अमल का नाम है। जब तू गुनाहों, लग़्ज़िशों में मुबितला और अहकामे इलाही की मुख़ालिफ़त का मुरतकिब होगा, उन पर इसरार करेगा, नमाज़, रोज़ा, सदक़ा और अफ़आल ख़ैर तर्क करेगा तो यह दो शहादतें तुझे क्या फ़ायदा देंगी?"

जब तू ने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा तो यह एक दावा है, तुझसे कहा जायेगा इस दावे पर दलील क्या है? अल्लाह तआ़ला ने जिन चीज़ो का हुक्म दिया है उनका अदा करना, जिनसे मना किया है उन से बाज़ रहना, आफ़तों पर सब्र करना, तक़दीरे इलाही को तसलीम करना इस दावे की दलील है, जब तू ने यह अमल किये तो अल्लाह तआ़ला के लिये इख़लास के बग़ैर मक़बूल न होंगे, क़ौल बग़ैर अमल के और बग़ैर इख़लास और इत्तिबाए-सुन्नत के मक़बूल नही (स-10)

उम्मते मुसलिमा को आख़िरत की तैयारी और क़बूले हक़ की तलक़ीन और दुनिया की रंगीनियों में गिरफ़्तार न होने की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:

"ऐ क़ौम! तुम लोग दुनिया के पीछे दौड़ते हो यहाँ तक कि दुनिया तुम्हें दे दी जाती है, हालांकि दुनिया औलियाए-किराम के पीछे भागती है, यहाँ तक कि दुनिया उन्हें इस हाल में अता की जाती है कि उनके आगे दस्त-बस्ता, सिर झुकाये खड़ी रहती है। तुम अपने नफ़्स को तौहीद की शमशीरे बुर्रां से मारो और उस के लिये तौफ़ीक़ की ख़ोद पहनो और मुजाहिदा का नेज़ा, तक़वा की ढाल और यक़ीन की तलवार लो तो कभी उस से नेज़ाबाज़ी करो और कभी शमशीर ज़नी करो, तुम्हारा ये अमल बराबर रहे, यहाँ तक नफ़्स तुम्हारे ताबए फ़रमान रहे और तुम उस के दोश पर सवार हो जाओ, इस की लगाम तुम्हारे हाथ में रहे, तुम उसे लेकर खुशका-तर में सफ़र करो, उस वक़्त तुम्हरा रब्ब अज़्ज़वजल तुम पर फक्र फ़रमायेगा।" (स-279)

सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु ने ज़ालिम हुक्मारानों और आवाम की इस्लाह भी बहुत

ही खुले लफ़्ज़ों मे फ़रमायी है अल फतहुर्रब्बानी में फ़रमाते हैं :

''तुम रमज़ान में अपने नफ़्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ़्तार का वक़्त आता है तो मुसलमानों के खून से इफ़्तार करते हो और उन पर ज़ुल्म कर के जो माल हासिल किया है उसे निगलते हो, ए लोगो ! अफ़सोस कि तुम सैर हो कर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूखे रहते हैं और फिर कहते हो हम मोमिन हैं, तुम्हारा ईमान सही नहीं।

एक दफ़ा ख़लीफ़ए-वक़्त मुस्तनजिद बिल्लाह अबुल मुज़फ़्फ़र यूसुफ़ मुलाक़ात के लिये आया, सलाम किया और दरख़्वास्त की कि मुझे कुछ नसीहत फ़रमायें और साथ ही दरहिम व दीनार की दस थैलियाँ पेश कीं जिन्हें दस ख़ादिम उठाये हुये थे। आप ने क़बूल करने से इन्कार कर दिया, ख़लीफ़ा के इसरार पर दो थैलियां हाथों में ले कर दबाई तो उन में से खून टपकने लगा, आप ने फ़रमाया: ''ऐ अबूल मुज़फ़्फ़र! तुम्हें अल्लाह तआला से हया नहीं आती कि लोगों का खून चूस कर लाते हो और मुझे पेश करते हो, ख़लीफ़ा ये देखकर बेहोश हो गया, ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया ''खुदा की क़सम! अगर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताल्लुक़ का पास ना होता तो यह खून बहता हुआ ख़लीफ़ा के महल तक पहुँच जाता।
(कलायदुल जवाहर, स-30)

सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु अन्हु बर सरे मेम्बर बादशाहों, ख़लीफ़ों और अमीरों को कारे ख़ैर का हुक्म देते और बुरे कामों से मना फ़रमाया करते, ज़ालिमों के वाली बनाने पर बिला ख़ौफ़ो-खतर इनकार फ़रमाते, जब ख़लीफ़ए वक़्त ने अबूल वफ़ा याहया बिन सईद ज़ालिम को क़ाज़ी मुकर्रर किया, तो आपने बर सरे मेम्बरे ख़लीफ़ा को मुख़ातिब करते हुये फ़रमाया:
''तू ने ज़ालिम तरीन शख़्स को क़ाज़ी मुकर्रर कर दिया है, कल क़्यामत के दिन अल्लाह तअला को क्या जबाव देगा ?ख़लीफ़ा कांप गया और उस की आँखों से सैले अश्क़ रवाँ हो गया, उसी वक़्त क़ाज़ी मज़कूर को माअज़ूल कर दिया।(क़लाईदुल जवाहर, स-6)

सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु तआला अन्हु ख़ुलीफ़ए-वक़्त को ख़त लिखते तो इस अन्दाज़ में लिखते ''अब्दुल क़ादिर तुम्हें ये हुक्म देता है, उसका हुक्म तुम पर जारी और उस की इताअत तुम पर वाजिब है, और वह तेरा मुक़द्दर और तुझ पर हुज्जत है। ख़ुलीफ़ा को मकतूबे गिरामी मिलता तो खड़े होकर उसे बोसा देता। (जुब्दतुल असरार, स-54)

आज कल आम तौर पर सूफ़ी या ख़ानक़ाही कहलाने वाले नाम निहाद अफ़राद का ये तराना रहता है कि किसी को बूरा न कहो, सूफ़िया किसी बदमज़हब को बुरा न कहते थे ना ही उनसे मेल-जोल तर्क करते थे। ऐसे नाम निहाद सूफ़िया के लिये सरकार ग़ौसे पाक रदिअल्लाहु तआला अन्हु की तहरीरात ताज़ीयानए इबरत हैं। आप ने ग़ुनियतुत्तालिबीन में बाज़ाबता तौर पर इस ज़माने तक मौजूद हर बदमज़हब फ़िर्क़े का रद्द फ़रमाया, ये एक तैहक़ीक़ी मौज़ू है कि हज़रात सूफ़िया ने अपने दौर के बदमज़हबों का किस-किस तौर से रद्द फ़रमाया ?कोई फ़ाज़िल तवज्जो दे तो इस मौज़ू पर एक अच्छी ख़ासी किताब तैयार हो जाये, सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु तआला अन्हु इस सिलसिले में बदमज़हबों से बचने की ताकीद फ़रमाते हुये तहरीर फ़रमाते हैं :

''बदमज़्हबों की मजलिस में जाकर उनकी तादाद में इज़ाफ़ा ना करे, ना क़रीब हो, न उन्हें सलाम करे क्योंकि बदमजहबों को सलाम करना, उन्हें दोस्त बनाना है, इस लिये नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''आपस में सलाम को रिवाज़ दो बाहम दोस्त हो जाओगे, इसी तरह बद्मज़्हबों की हम नशीनी ना अख़्तियार करो, और ना उनका क़ुर्ब ढूंढो और ना ख़ुशी के मौक़े पर उन्हें मुबारक बाद दो और

जब वह मर जायें तो उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ो, उनका ज़िक्र हो तो उन के लिये दुआये रहमत न करो बल्कि तुम उनसे जुदा रहना और अल्लाह के लिये उन से दुश्मनी रखना, इस यक़ीन के साथ कि उन के मज़हब बातिल हैं और ये ख़्याल करते हुये कि इस तर्के ताअल्लुक़ में अज़ीम सवाब और कसीर अज्र है।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन आयाज़ क़ुद्दिस:सिर्रहु ने फ़रमाया जो शख़्स किसी बदमज़हब से मोहब्बत रखे अल्लाह तआ़ला उसके आमाल तबाह कर देगा और उस के दिल से ईमान का नूर सलब फ़रमा लेगा और अल्लाह तआ़ला किसी बंदे को इस तर्ज़ पर पायेगा कि वह बदमज़हब से महज़ अल्लाह की रज़ा के लिये बुग़्ज़ रखता है तो मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह बख़्श देगा अगरचे उसके पास नेक अमल का ज़ख़ीरा थोड़ा ही क्यों ना हो। (ग़ुनीयतुत्तालिबीन)

सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की हयाते तय्यबा का मुताआ़ला करने के बाद इस्लामी दावत के जो रौशन निकात सामने हैं उनके चंद गोशे ये हैं: (1) दूसरों को दावते इस्लाह देने से पहल खुद अपनी इस्लाह करनी चाहिये वरना ख़ातिर ख़्वाह असर नहीं होगा। (2) दाई को फ़िस्को-फ़जूर और ज़ुल्मो-सितम के सामने कभी घुटने नहीं टेकना चाहिये बल्कि बरमला इज़्हारे हक़ करना चाहिये, देखिये हज़रत ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने ज़ालिम हुक्मारानों से लेकर रियाकार ज़ाहिदों, अपने दौर के जुम्ला बदमज़हबों तक के तबक़ात पर बड़ी तनक़ीद की और उनकी जानिब से होने वाले मुमकीना शरारतों की हरगिज़ परवा ना की।

दाई को इब्तेदा ही से सरज़निश का अन्दाज़ नहीं अपनाना चाहिये बल्कि ज़हनों को अपने अख़लाक़, नर्म गुफ़्तगू और हकीमाना तफ़हीम से हम आहंग करना चाहिये, देखिये सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने पहले नरम-नरम गुफ़्तगू फ़रमायी फ़िर कड़ी तनक़ीद शुरू की।

दाई को हालात की मुकम्मल नब्बाज़ी हासिल होनी चाहिये ताकि वह समाज की दुखती रग पर उंगली रख सके और अपनी ज़िम्मेदाराना क़यादत के तक़ाज़े पूरे कर सके। सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु के औराक़े हयात के मुताअ़ले से हमें यही सबक़ मिलता है। दौरे हाज़िर को ऐसी ज़िम्मेदाराना क़यादत की ज़रूरत है। ■■■

स. नं. 53 का बकिया ....

ऑफ़ लाइन ब्रांच क़ायम करने का तरीका

जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस से ब्रांच का फॉर्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड ऑफिस में जमा करें ।

हमारी Android Application Markaz Ki Awaz के द्वारा भी आप मेम्बरशिप हासिल करने के लिये apply for Membership के आप्शन पर जाकर अपनी अवशयक जानकारी भरके Apply कर सकते हैं ।

ऑनलाइन ब्रांच का तरीका

जमात रजा ए मुस्तफा की वेबसाइट www-jamatrazaemustafa-org में apply for branch के आप्शन पर जाकर अपनी अवशयक जानकारी भरके Submit करें ।

हमारी Android Application Markaz Ki Awaz के द्वारा भी अपने इलाके में ब्रांच कायम करने के लिये apply for branch के आप्शन पर जाकर अपनी अवशयक जानकारी भरके Apply कर सकते हैं ।

इस लिंक के जरिये भी ब्रांच फॉर्म / मेम्बरशिप फॉर्म भर सकते है www.jamatrazaemustafa.org/branch■

अख़्लाफ़ व अख़्लाक़

फ़ज़ीलते ग़ौसे आज़म

अज़: मौलाना अनीस आलम सिवानी ★

हज़रत सय्यदना सरकार ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु अन्हु अल्लाह तआला के मुक़र्रब और बरगुज़ीदा बंदों में वही मक़ाम रखते हैं जो सूरज को बाक़ी सितारों पर मर्तबा हासिल है या इंसानी जिस्म में बाक़ी आज़ा पर जो फ़ज़ीलत सर को हासिल है, सिराजुल अवारिफ में शेख़ अबुल हुसेन अहमद नूरी मारहरवी ने फ़रमाया कि तमाम औलिया पर सय्यदना सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की फ़ज़ीलत जलीला तसलीम शुदा है, किसी जुज़्ई फ़ज़ीलत की बुनियाद पर इस इजमाई मसअले को तोड़ा नहीं जा सकता, उसी किताब में ज़िक्र है कि जब अल्लाह के हुक्म से शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी ने फ़रमाया कि मेरा क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गरदनों पर है तो तमाम औलिया ने अपनी गरदनों को झुका दिया, उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जवान थे और खुरासान की किसी पहाड़ी पर इबादत में मशग़ूल थे, जैसे ही ये अवाज़ सुनाई दी फ़ौरन आप ने सर झुका दिया और कहा ऐ मेरे सरदार आप का क़दम मेरी गरदन पर ही नहीं बल्कि मेरे सर पर है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म से ख़्वाजा की इस सआदत मन्दी का हाल जब सरकार ग़ौसे आज़म को मालूम हुआ तो आप ने फ़रमाया: ग़्यासुद्दीन के बेटे ने इताअत में सब्क़त की, फिर आपने फ़रमाया अन क़रीब विलायते हिन्दुस्तान ख़्वाजा मुईनुद्दीन के हिस्से में आने वाली है, ख़्वाजा ने अर्ज़ किया हमें इराक़ अता किया जाये तो आप ने फ़रमाया कि इराक़ की विलायत शेख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी को पहले ही मुक़र्रर हो चुकी है।''

ग़ौसे आज़म की विलादत 1 रमज़ान 470 हिजरी लिखी है, शेख़ अबुल फ़ज़ल अहमद बिन सालेह जेली का एक क़ौल इमामे याफ़ई से नक़ल किया है कि ग़ौसे आज़म की विलादत 471 हिजरी में हुई और 488 हिजरी में आप बग़दाद तशरीफ़ ले गये।

हज़रत ग़ौसे आज़म अजमी और नजीबुल्तरफ़ैन सय्यद थे, वालिद की तरफ़ से हसनी और वाल्दा की तरफ़ से हुसैनी, आप के वालिद का नाम अबू स्वालेह मूसा जंगी और वाल्दा का नाम उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा था, आप के दादा का नाम अबू अब्दुलाह और नाना अब्दुलाह सुमई थे, वतने मालूफ़ गील है। जिसे गीलान और अहले अरब उसी को जील और जिलान कहते हैं, ये तबरिस्तान के पास एक इलाक़ा है जो अजम में वाक़े है उसी के क़स्बा नीफ़ में आप पैदा हुये, चार साल की उम्र में जब आप ने तालीम का आग़ाज़ किया तो बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम से शुरू किया और मुतवातिर अठ्ठारह पारे पढ़ दिये, उस्ताद की हैरत की इन्तेहा न रही, उस्ताद ने पूछा कि मदरसे में पहला दिन है फिर ये अठ्ठारह पारे कैसे याद कर लिये? तो फ़रमाया कि शिकमे मादर में ही मैं अठ्ठारह पारे का हाफ़िज़ हो चुका था इसलिए के मेरी वाल्दा अठ्ठारह पारे की हाफ़िज़ा हैं, वह रोज़ाना तिलावत करती थीं, मैंने अल्लाह के फ़ज़ल से माँ के पेट में सुनकर याद कर लिया था।

तमाम अहले इल्म का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप पैदाइशी वली थे, इसीलिये आप मदरसा जाते तो असातज़ा आप का एहतराम करते, जगाह खुद बा खुद कुशादा हो जाती, कभी खेल-कूद में या दुनियावी बातों में मशग़ूल होते तो कानों में आवाज़ सुनाई देती कि क्या तू इसी के लिये पैदा किया गया है, अवाज़ देने वाला कहीं नज़र नहीं आता, आप वहशत ज़दा होकर माँ की गोद में

★ मज़मुन निगार इमाम अहमद रज़ा फॉउन्डेशन, लखनउ के डॉयरेक्टर हैं।

जाकर छिप जाते, बचपने में रमज़ान के दिनों में तुलूए सुबहे सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक दूध नहीं पीते थे।

असातज़ए किराम:

आप के असातज़ा में शेख़ हम्माद बिन मुस्लिम, अबुलवफ़ा अली बिन अक़ील, अबुल खत्ताब महफूज़ बिन मुहम्मद अल्कलवाज़ी, अबूल हुसैन मुहम्मद बिन क़ाज़ी अबू याला, अबू ग़ालिब मुहम्मद बिन हसन बाक़िलानी, अबू ज़करिया तबरेज़ी, और हज़रत क़ाज़ी अबू सईद मुबारक बिन अली मख़ज़ूमी वग़ैराह हैं।

इल्मी मुक़ाम और तस्नीफ़ात:

आप अपने वक़्त के साहिबे मरतबा आलिम व फक़ीह थे। सालों तक फ़िक़्ह व इफ़्ता की ज़िम्मेदारी निभाई, आप का मसलक हंबली था, इमाम अहमद बिन हम्बल के मसलक पर फ़तवे देते थे, बेपनाह इल्म व फ़ज़्ल के मालिक थे, तक़्वे और तहारत, ज़ोहदो-वरा, इत्तेबाये सुन्नतो-शरीयत में आला मक़ाम रखते थे, बकसरत कश्फ़ के वाक़ियात किताबों में मज़कूर हैं, आप से बेशुमार करामातें सादिर हुई, इल्मी ऐतबार से दीगर औलियाए-कराम पर आप को फ़ौक़ियत हासिल है, आप ने कई किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई, शेर गोई पर क़ुदरत रखते थे, आप की तसनीफ़ात में गुनयतुत्तालिबीन, फ़ुतूहुलग़ैब, अलफ़तहुर्रब्बानी, बशाइरूलख़ैरात, अलमवाहिबुर्रहमानिया, सिर्रुल असरार, रद्दुर्रफ़्ज़ा, तफ़्सीरे क़ुरआन और इल्मे रियाज़ी में एक किताब है, रिवायतों में आया है कि आप की तसनीफ़ात की तादाद 69/ है, हर सिलसिले में ग़ौसे आज़म का फ़ैज़ान जारी है।

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बेशुमार हैं, तमाम वलियों का सिलसिला आप तक पहुँचता है, जितने भी सलासिलए सूफ़िया हैं ख़्वाह क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबनदिया, सोहरवर्दिया यह सब के सब ग़ौसियते मआब के फ़ैज़ से ही जारी हैं, यह चार मशहूर सलासिल हैं, इन के अलावा भी बहुत से सलासिल हुये, कुछ हैं, कुछ ख़त्म हो गये, क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबनदिया, सोहरवर्दिया की बहुत सी शाख़ें हैं।

ग़ौसियत क्या है ?

इस्तिलाहे सूफ़िया में ग़ौसियत एक दर्जा और मर्तबा है जो बहुत कम वलियों को नसीब होता है, हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी को अल्लाह ने ग़ौसियते कुबरा के मुक़ामे रफ़ीअ़ से सरफ़राज़ फ़रमाया और अपना क़ुर्ब अता किया और अपने महबूबों में शामिल फ़रमाया था।

हज़रत ग़ौसे पाक को ग़ौसियत के अलावा अफ़राद का मनसब भी बख़्शा गया, सूफ़िया के नज़दीक ये इतना अज़ीम मनसब है कि इस पर ग़ौसियत भी फ़ख़्र करती है, हज़रत ग़ौसे आज़म का एक लक़ब सय्यदुल अफ़राद भी है।

मुरीदे ख़ास की सच्ची इरादात:

हज़रत ग़ौसे आज़म के ज़माने में एक बुज़ुर्ग सय्यदी अब्दुल रहमान तफ़्सूंजी ने एक रोज़ बर सरे मिम्बर फ़रमाया मैं औलिया में ऐसा हूं जैसे कुलंग सब से ऊँची गर्दन वाला, वहीं हज़रत ग़ौसे पाक के एक मुरीदे ख़ास सय्यद अहमद भी थे, ये सुनकर के उन्हें ना गवार गुज़रा और महसूस हुआ के यह बुज़ुर्ग हमारे शेख़ हज़रत ग़ौसे आज़म पर अपनी बरतरी ज़ाहिर कर रहे हैं, बस गुदड़ी फेंक दी और खड़े हो गये, और कहा कि मैं आप से कुश्ती लड़ना चाहता हूँ, हज़रत सय्यद अहमद को शेख़ अब्दुर्रहमान ने कई मरतबा सर से पैर तक, पैर से सर तक देखा और खामोश हो गये, लोगों ने सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया मैं ने देखा कि इस के जिस्म का कोई रौंगटा रहमते इलाही से खाली नहीं है और उन से फ़रमाया गुदड़ी पहन लो, उन्होंने फ़रमाया कि फ़क़ीर जिस कपड़े को उतार कर फेंक देता है उसे दोबारा नहीं पहनता, बारह रोज़ के रास्ते पर उन का मकान था, अपनी ज़ौजा को अवाज़ दी, फ़ातिमा मेरे कपड़े दो, उनहोंने वहीं से हाथ बढ़ा कर कपड़े दे दिये और उन्होंने हाथ बढ़ा कर ले लिये, इस नज़ारे को देखने के बाद सय्यदी अब्दुर्रहमान ने पूछा तुम किस के मुरीद हो, फ़रमाया

सरकार ग़ौसियत मआब का ग़ुलाम हूँ, इतना सुनने के बाद सय्यदी अब्दुर्रहमान ने अपने मुरीदों को बग़दाद भेजा कि जाकर सरकार ग़ौसे आज़म से अर्ज़ करो, बारह बरस से कुर्बे इलाही में हाज़िर होता हूँ ना आप को आते देखा ना आप को जाते देखा, इधर ग़ौसे आज़म ने अपने दो मुरीदों को तफ़सून्ज भेजा और फ़रमाया रास्ते में शेख़ अब्दर्रहमान के दो मुरीद मिलेंगे उन को वापिस ले जाओ और शेख़ अब्दुर्रहमान को जवाब दो कि वह जो सहन में है क्यों कर देख सकता है उसे जो दालान में है, और जो दालान में हो उसे कैसे देख सकते है जो कोठरी में हो, और वह जो कोठरी में हो उसे क्योंकर देख सकता है जो नेहाँ खाने में हो, मैं नेहाँ खानए ख़ास में हूँ और अलामत ये है कि फ़्लाँ शब 12 हज़ार औलिया को खिलअ़त अता हुये थे, याद करो कि तुम को जो खिलअ़त मिला था वो सब्ज़ था और उस पर सोने से कुल हुवल्लाह शरीफ़ लिखी थी, इतना सुनना था कि शेख़ अब्दुर्रहमान ने सर झुका लिया और कहा: सच कहा शेख़ अब्दुल क़ादिर ने और वह इस वक़्त तमाम औलिया के सुल्तान हैं।

इस वाक़िये से हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की क़ुर्बत व मक़्बूलियत का पता चलता है, हज़रत ग़ौसे पाक ख़ुदाए वाहिद की बारगाह में उस मुक़ाम पर फ़ाईज़ थे जहाँ दूसरों की रेसाई नहीं हो सकती, बड़ी-बड़ी ऊँची गर्दनों वाले आप की ख़िदमत में झुके हुए हाज़िर होते, आप के मुरीदों की शान के आगे औलियाए-ज़माना सर झुकाते फिर आप की अज़मत का कैसे कोई अन्दाज़ा कर सकता है।

एक नसीहत आमेज़ हिकायत:

एक दिन ख़लीफ़ा मुसतन्ज़िद बिल्लाह ने हज़रत सरकारे ग़ौसे आज़म की बारगाह में अशरफ़ियों के दस तोड़े नज़र किये, आप ने लेने से मना फ़रमाया जैसा कि आप को मालूम था, लेकिन जब ख़लीफ़ा का इसरार बड़ा तो आप ने एक तोड़ा दायें हाथ में और एक बायें हाथ में लेकर रगड़ना शुरू किया तो अशरफ़ियों से ख़ून टपकने लगा, आप ने ख़लीफ़ा को मुख़ातिब करके फ़रमाया: क्या तुम लोगों को ख़ुदाये बुज़ुर्गो-बरतर से शर्म नहीं आती कि इन्सानों का खून चूसते हो और उसे जमा करके मेरे पास लाते हो ? यह देखकर ख़लीफ़ा पर ऐसा असर हुआ कि ग़शी तारी हो गई, अल्लाह वालों के नज़दीक हराम माल की कोई क़दरो-क़ीमत नहीं होती, इसलिए कि माले हराम के इस्तेमाल से रहमते इलाही दूर होती है, हराम माल का इस्तेमाल इबादतो-रियाज़त को अकारत कर देता है फिर इबादत का ज़ौक़ व शौक़ ख़त्म हो जाता है और दिल यादे इलाही में नहीं लगता।

हज़रत सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी उलूमे ज़ाहिरी और उलूमे बातिनी दोनों में यक्साँ कमाल रखते थे, जिस तरह आप की दावतो-तब्लीग़ से मुतासिर हो कर हज़ारो लोगो ने अपने गुनाहों और बुराईयों से तौबा किया और कसीर तादाद में यहूदी-नसारा ने इस्लाम क़बूल किया, उसी तरह आप की तदरीसी ख़िदमात से बहुतों ने उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल किया, इल्मे ज़ाहिर के ज़रिये आप इल्मे बातिन के क़रीब करना चाहते थे, इसलिये कि इल्मे ज़ाहिर के बग़ैर मारीफ़ते ख़ुदावंदी के हासिल करने की दौड़ में तालिबे राह के भटकने के इम्कानात क़वी होते हैं, इसीलिये तमाम औलिया अल्लाह पहले शरीअते नब्वी के हुसूल को ज़रूरी क़रार देते है।

हुसूले इल्म के बाद हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म के उस्ताद क़ाज़ी अबू सईद मुबारक मख़ज़ूमी के इरशाद फ़रमाने के मुताबिक़ ग़ौसे आज़म ने मदरसा बाबुल अज़्ज में तदरीस की ज़िम्मेदारी क़बूल फ़रमायी, आप के आलिमाना फ़ाज़िलाना तदरीस की शौहरत के आम होते ही तालीबाने उलूमे नबूवत और आशिक़ाने शरियत का जम्मे ग़फ़ीर उमड़ पड़ा, तालीबाने मुहब्बतों अक़ीदत की भीड़ के सामने मदरसा बाबुल अज़ज की गुन्जाइश कम पड़ने लगी और हाल यह हुआ कि तलबा को जगह नहीं मिलती थी, इस हालत को देखकर बाअसर अहले ख़ैर ने ज़रे कसीर सर्फ़ करके मदरसे की तौसी की। इस वक़्त यह मदरसा बाबुल अज़ज के बजाये हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तरफ़ निस्बत करते हुए ''मद

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी! रदिअल्लाहु अन्हु
हयातो-ख़िदमात

अज़: डॉ. इक़बाल अहमद अख़्तरुल क़ादरी ★

इमामे रब्बानी मुजददिदे अलफ़े सानी हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी रहमातुल्लाहि अलैहि 971 हिजरी को हिन्दुस्तान के मशरिक़ी पंजाब के इलाक़ा सरहिन्द में पैदा हुये, आप के वालिद शेख़ अब्दुल अहद चिश्ती रहमातुल्लाह अलैह, अपने वक़्त के जलीलुल क़द्र आलिम व आरिफ़ थे, हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी का सिलसिलए नसब 29 वास्तों से अमीरूलमोमेनीन सय्यदना हज़रते उमर फ़ारूके आज़ाम रदिअल्लाहु अन्हु से जा मिलता है, आपने बेशतर उलूम अपने वालिद माजिद से हासिल किये, मौलाना कमालुद्दीन कश्मीरी मौलाना याकूब कश्मीरी और क़ाज़ी बहलूल बदखशी वग़ैराह से उलूमे माकूला व मनकूला की तहसील फ़रमाई, क़िल्आ ग्वालियार में नज़र बंदी के ज़माने में क़ुरआने करीम भी हिफ़्ज़ फ़रमाया था, थानेसर के शेख़ सुल्तान थानेसरी की सहाबज़ादी से अक़्दे मसनून हुआ जो कि अकबर बादशाह के मुक़र्रेबीन में से थे, जिसकी वजह से शाही दरबार से एक ताल्लुक़ पैदा हो गया जो कि तब्लीग़ो-इरशाद का ज़रिया बना, आप बर्रे सग़ीर के मारूफ़ बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्ला रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिलए नक़्शबंदिया में बैत हुये और 1008 हिजरी में इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़े गये, जबकि सिलसिलये चिश्तिया में वालिद शेख़ अब्दुल अहद चिश्ती और सिलसिलये क़ादरिया में हज़रत शाह कमाल क़ादरी कैथली रहमातुल्लाह अलैह से ख़िरक़ये ख़िलाफ़त पहले ही हासिल हो गया था, आप हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह के मन्ज़ूरे नज़र मुरीदों में थे जिसकी बदौलत आसमाने इल्मो इरफ़ान पर आफ़ताब बनकर चमके और अहदे अकबरी की तारीक फ़ज़ाओं को नूरे ईमान से रौशन कर दिया।

आप की इस्लाही कोशिशो का आग़ाज़ अकबर बादशाह के ज़माने से हुआ और जहाँगीर बादशाह की हुकूमत में कोशिशे बार आवर हुई, सियासी मक़ासिद के हुसूल के लिये अकबर ने " दीने इलाही " के नाम से एक नये मज़हब की बुनियाद रखी जिसका मक़सद मुसलमानों और हिन्दुओं को मिलाकर एक क़ौम बनाना था, अकबर के इस नज़रिया के ख़िलाफ़ हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी ने "दो क़ौमी नज़रिये" का ऐलान फ़रमाया और यह बताया कि कुफ़्र और इस्लाम दो अलग अलग चीज़ें हैं, इस पाकीज़ा नज़रिया की तरवीज व इशाअत के लिये आप ने बेशुमार मकतूबात तहरीर फ़रमाए जो कि "मकतूबाते मुजद्दिदे अलफ़े सानी" के नाम से किताबी सूरत में शाय हो गये हैं।

हिन्दुस्तानी मुस्लिम मुआशरे की इस्लाह और तरक़्क़ी के लिये आप ने जो कुछ किया वह किसी से पोशीदा नहीं, शरियत से बेगाना होने वालों को अपने इल्मी मुकालमात और मकतूबात के ज़रिये आशनाये शरिअत किया, जो सूफ़ीया राहे तरीक़त की हक़ीक़त से ना वाक़फ़ियत की बिना पर गुमराह हो गये थे, उन को तरीक़त का वाक़िफ़ कार बनाया "नज़रियए वहदतुल वुजूद" की ग़लत ताबीरात की वजह से लोग गुमराह हो रहे थे, आप ने उस नज़रिया की लाज रखते हुये उसके साथ "नज़रियए वहदातुश शुहुद" पेश फ़रमाकर जो दिल और दिमाग़ दोनों के क़रीब था और यही वह नज़रिया था जिस ने शायरे मशरिक़ डॉक्टर इक़बाल की फ़िक्र में इंक़लाब पैदा किया, नजरियए ''वहदतुल वुजूद'' की ग़लत ताबीरात से जो हलाकत फैल रही थी हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी के "तसव्वुरे वहदतुश

★ मज़मुन निगार इन्स्टिट्यूट ऑफ इस्लामिक एजुकेशन, कराचि, पाकिस्तान के प्रिन्सपल हैं।

फ़हम को आम लोगो के लिये क़ाबिले फ़हम बना दिया, जो फ़िक्रे मुस्लिम की हर सतह पर इस्लाह करता हुआ एक अज़ीम इनक़लाब का सबब बना, हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी ने ज़ालिम व जाबिर हाकिमे वक़्त के ग़लत फ़ैसलों पर बर वक़्त तनक़ीद की यहाँ तक कि आप को क़ैदो-बन्द से दो चार होना पड़ा, क़िलआ़ ग्वालियर में क़ैद और फिर नज़र बन्दी ने आप को इसलाही कोशिशो के असरात को अवाम और हुकूमते वक़्त मैं और देरपा बना दिया, आप की असीरी इस्लामी निज़ामे हुकूमत के लिए रहमत बन गई, आप मन्ज़िले मक़सूद की जानिब रवाँ दवाँ रहे और अज़ीमत पसनदी की ऐसी शानदार मिसालें क़ायम कीं जिस से मुर्दा दिल ज़िन्दा हो गये और एक अज़ीम इन्क़लाब आ गया, बादशाह के हुज़ूर सजदये ताज़ीमी तर्क कर दिया गया, शराब और दीगर ख़ुराफ़ात पर पाबन्दी लगा दी गयी, आपकी कोशिशों से शिआरे इस्लाम को ख़ूब फ़रोग़ हुआ, फिर जहाँगीर बादशाह की तख़्त नशीनी के बाद आप ही की कोशिशों से सलतनत में उमूरे मज़हब और सियासत में मशवरह के लिये उलमा का बाक़ायदा कमीशन मुक़र्रर कर दिया गया जो हुकूमते वक़्त को अहकामे इस्लामी से बर वक़्त ख़बरदार रखता था।

हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी के इसलाही कारनामों को बयान करने के लिये तवील दफ़्तर की ज़रूरत है। मुमताज़ माहिरे तालीमो-मोअर्रिख़ प्रोफ़ेसर डॉ0 मुहम्मद मसऊ़द अहमद के ज़ेरे सरपरस्ती एक तीन रुकनी बोर्ड (जिसमें राक़िम शामिल है) ने 2007 ईसवी मैं हज़ारों सफ़्हात पर मबनी 15 जिल्दों में "इनसाइक्लो पीडिया जहाने इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अलफ़े सानी" मुरत्तब किया है, जिसे इमाम रब्बानी फ़ाउन्डेशन कराची ने शाय किया, हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी हिन्दो-पाक के मुसलेहीन में मुमताज़ मक़ाम रख़ते हैं, उन कि मोमिनाना बसीरत ने चन्द बरसो मै ख़ून का एक क़तरा बहे बग़ैर अज़ीम इनक़िलाब बरपा कर के मुसलमानान बर्रे सग़ीर को मज़हबी, सियासी और रूहानी सतह पर इसतिहकाम बख़्शा।

आप की मशहूर तसानीफ़ में फ़ारसी "मकतूबात मुजद्दिदे अलफ़े सानी" ज़्यादा मशहूर हुई, उन के अरबी, उर्दु तुरकी और अंग्रेज़ी ज़बानों में तराजिम भी शाये हो चुके हैं जब कि यह तसानीफ़ भी आप की यादगार हैं, इसबातुन नबुव्वत, रिसाला दर इल्मे हदीस, रिसाला दर मसअला वहदतुल वुजूद, मबदा व मआ़द, मुकाशिफ़ाते ग़ैबिया/ऐनिया, मआ़रिफ़े लदुन्निया, रद्दुर्रफ़ज़ा, शरह रूबाइयाते ख़्वाजा बेरंग, रिसाला ताईन वला ताईन, रिसाला मक़सूदुस्सालेहीन, आदाबुल मुरीदीन और रिसाला जज़्बो-सुलूक।

मुसलमान मुसलेहीन को बनज़रे तहक़ीक़ देखें तो हज़रत मुजद्दिदे अलफ़े सानी हर तबक़े में आला व अर्फ़ा नज़र आयेंगे और ना सिर्फ़ ये बल्कि हर सिनफ़े कमाल में अकमल होने के साथ आप बयक वक़्त सारी ख़ूबियों के जामे भी नज़र आते हैं, इसी बिना पर आप के सर पर "तजदीदे अल्फ़े सानी" का ताज रखा गया जो विलायत में एक ऊंचा मक़ाम है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ हर सदी के आग़ाज़ मैं मुजद्दिद पैदा हुये और उनहों ने तजदीदे दीन की ख़िदमात अन्जाम दीं लेकिन जब हम उन के हालाते ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो वाज़ेह तौर पर नज़र आता है कि उन्होंने दीन के किसी ख़ास शोबे में ही तजदीदी कारनामे अन्जाम दिये लेकिन ऐसी जामिअत और हमा गीरी कहीं और नज़र नही आती जो हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी की सीरते तय्यबा में है, इस हक़ीक़त से मुजद्दिदे मिअत और मुजद्दिदे अल्फ़, का फ़र्क रोज़े रोशन की तरह अयाँ है।

इसके अलावा ये पहलु भी क़ाबिले ग़ोर है कि इन मुजद्देदीन के बारे में उलमा का इख़तिलाफ़ पाया जाता है, बाज़ उलमा जिस हस्ती को एक सदी का मुजदिद् क़रार देते हैं, दूसरे उलमा इसी सदी का मुजद्दिद दूसरी हस्ती को तसलीम करते हैं लेकिन ये अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी के मुजद्दिद

क़ाबिल तवज्जुह है कि क़ुबाए तजदीद आप के क़ामते अक़्दस पर कुछ ऐसी मोज़ूँ हुई है कि जब "मुजद्दिद" कहा जाता है तो फ़ौरन ज़हन आप की तरफ़ चला जाता है, कोई दूसरी शख़्सियत ज़हन मै नही आती बल्कि उम्मते मुसलिमा आप को मुजद्दिद ही के लक़ब से जानती है, अल्लामा अब्दुल हकीम सियाल कोटी अलैहिर्रहमा ने हज़रत मुजद्दिद को "मुजद्दिददे अल्फ़े सानी" के ख़िताब से याद किया था, यह एक ऐसी वाज़ेह और रौशन हक़ीक़त थी कि उस कि सदाये बाज़ गशत तमाम आलमे इस्लाम में सुनी गयी और सारे अकाबिर ने आप को " मुजददे अलफ़े सानी " तसलीम किया और हर ज़माने में इसी ख़िताब से याद किया और आप के तजदीदी कारनामों का एतराफ़ किया, चुनाँचे हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह हज़रत मुजद्दिद के एक रिसाला की शरह में उम्मते मुस्लिमा पर जो आपके एहसानात हैं उन की तफ़सील लिखने के बाद लिखते हैं कि:" हज़रत मुजद्दिद से वही शख़्स मुहब्बत रखेगा जो मोमिन, तक़वा शिआ़र होगा और उन से वही बुग्ज़ रखेगा जो बदबख़्त फ़ाजिर और शक़ावत विसार होगा, आज जो मसाजिद में आज़ानें दी जा रही हैं और मदारिस से क़ालल्लाहु तआ़ला व क़ालर्रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की दिल नवाज़ सदायें बुलन्द हो रही हैं और ख़ानक़ाहों में जो ज़िक्रो-फ़िक्र हो रहा है और क़ल्बो-रूह की गहराईयों से जो अल्लाह की याद की जाती है या लाइलाह: इल्लल्लाह की ज़र्बें लगाई जाती हैं उन सब की गर्दनों पर हज़रत मुजद्दिद का बारे मिन्नत है अगर हज़रत मुजद्दिद इस इलहादो-इरतिदाद के अकबरी दौरे में उस के ख़िलाफ़ जिहाद ना फ़रमाते और वह अज़ीम तजदीदी कारनामा अनजाम ना देते तो ना मसाजिद में आज़ानें होतीं, न मदारिसे दीनिया, में क़ुरआनो-हदीस, फ़िक़्ह और बाक़ी उलूमे दीनिया का दर्स होता और ना ख़ानक़ाहों में सालेकीनो-ज़ाकीरीने अल्लाह के रूह अफ़ज़ा ज़िक्र से ज़मज़मा सन्ज होते, इल्ला माशा अल्लाह।"

आज मुसलमान जिस तरह फ़िरक़ों में बटे हुये हुये और इस से जो वाक़ियात रूनुमां हुआ करते हैं, सब जानते हैं, इस वक़्त हमारे सामने मुख़्तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र हैं इन में से बाज़ हज़रत मुजददिद से अक़ीदतो-मुहब्बत रखते हैं उनकी अज़्मत के क़ाएल हैं, उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ में रतबुल्लिसान हैं और उनको अपना इमामो-रहबर समझते हैं मगर इस चांद के लिये परवाने और बुलबुल में लड़ाई हो रही है, परवाना कहता है कि वह शमा है इसलिये मेरा महबूब है, बुलबल कहता है कि वह फूल है इसलिये जानो-दिल से मै उस पर फ़िदा हूँ।

इन मकातिबे फ़िक्र के इख़्तेलाफ़ की वजह से इस्लाम को इल्मी सतह पर अज़ीम नुकसान पहुँच रहा है इस लिये कमज़कम वह मकातीबे फ़िक्र जो हज़रत मुजद्दिद को अपना रहनुमा तसलीम करते हैं वहीं आप की तालीमातो-हिदायात को सामने रख कर मुत्तहिदो-मुत्तफ़िक़ हो जायें तो इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपोगेन्डा पर काफ़ी क़ाबू पाया जा सकता है।

हज़रत मुजद्दिद तरीक़त के चारों सिलसिलों से फ़ैज़ याब हुये, गोया सिलसिलए मुजद्दिदिया की मिसाल उस दरया की सी है जिसमें चारों तरफ़ से नहरें आकर मिलती हैं, उस दरया से अगर कोई चुल्लु भर पानी पी लेता है तो उसने हक़ीक़त में सब नहरों का पानी पी लिया, इसलिये सिलसिलाये आलिया मुजद्दिदिया के मुतवस्सेलीन को चारों सलासिल का फ़ैज़ पहुँच रहा है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि बड़ा जिहाद जाबिर हुक्मारान के सामने कलमए हक़ बुलन्द करना है, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी इस हदीस की अमली तफ़सीर थे, आप ने दो जाबिर हुक्मारानों के सामने हक़ का प्रचार कर के इहयाये इस्लाम और तजदीदे दीन का अहम सर अनजाम दिया, जिस पर मिल्लते इस्लामिया ने आप के

"मुजद्दिदे अल्फ़े सानी" होने का इक़रार किया, आप की इल्मी और रूहानी फ़ज़ीलत को हिन्दो-पाक के हर मसलक व सिलसिले के अकाबिर उलेमा व सूफ़िया ने माना, सराहा, अपनी तसानीफ़ में जाबजा आप के हवाले दिये और हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी के अक़वालो-इरशादात से इस्तदलाल किया है, जिन में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी अलैहि रहमा जैसी हस्तियां भी शामिल है, शायरे मशरिक़ डॉक्टर इक़बाल जब हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी की बारगाह में हाज़िरी के लिये सरहिन्द शरीफ़ पहुँचे तो आप के रूहानी और इरफ़ानी कमालात से मुतअस्सिर हो कर इन अशआर में अपना ख़िराजे अक़ीदत पेश किया:

हाज़िर हुआ मैं शेख़े मुजद्दिद की लहद पर
वह ख़ाक कि है ज़ेरे फ़लक मतलए अनवार
उस ख़ाक के ज़र्रों से हैं शर्मिन्दा सितारे
उस ख़ाक में पोशिदा है वह सहिबे असरार
गर्दन न झुकी जिस की जहांगीर के आगे
जिसके नफ़्से गरम से है गरमीए अहरार
वह हिन्द में सरमाए-मिल्लत का निगहबान
अल्लाह ने बर वक़्त किया जिसको ख़बरदार

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी ने इस्लामियाने हिन्द की रुश्दो-हिदायत के लिये सालासिले तरीक़त चिश्तया, क़ादरिया, नक़्शबन्दिया को रिवाज दिया और सिलसिला नक़्शबन्दिया तो बाद में आप की निसबत से "नक़्शबन्दिया मुजददिदिया" के नाम से माअरूफ़ हुआ, आज दुनिया के हर ख़ित्ते में इस सिलासिल के फ़ैज़ याफ़्ता हज़रात पाये जाते हैं, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अपनी इस्लाही कोशिशों के दौरान एक साल (1027 हि0/1028 हि0) क़िला ग्वालियर में नज़रबंद भी रहे हैं, जबकि दौरे पाबंदी पाँच साल और दौरे ज़बाँ बंदी 6 माह पर मुहीत गुज़रा, अय्यामे आख़िर में आप अपनी ख़नक़ाह (सरहिन्द) में ख़लवत गुज़ी हो गये और उसी ख़लवत गुज़ीनी में 29 सफ़रूल मुज़फ़्फ़र 1034 हि0 को विसाल फ़रमाया, सरहिन्द शरीफ़ में आज भी मरक़दे अनवर मरकजे खासो-आम है, इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी क़ुद्दिस: सिर्रहुल अज़ीज़ की तालीमात रुये इस्लाम का सिंगार और राहे सुलूको-मारफ़त के लिए मिस्ले क़िन्दिले नुरानी है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम सुन्नियों को उनके फ़यूज़ो बरकात से माला माल फ़रमाए - आमीन। ■■■

स. नं. 26 का बक़िया ....

हुये, लिहाज़ा हमें अच्छे नामों का इल्तिज़ाम करना चाहिये, मज़हबे इस्लाम यह चाहता है कि उसके मानने वालों की औलाद नेक और मुसलमान हों, बच्चों की परवरिश बेहतर तरीक़े की जाये और औलाद जो कि नेमते इलाही है उसकी क़दर की जाये ताकि वह बड़ा हो कर मुल्क व समाज और खुद वालिदैन के लिये नेअ्मत साबित हो, दुआ है कि अल्लाह हमें औलाद की परवरिश और नाम रखने में अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म और ख़ुशनूदी का ख़्याल हमेशा दिल में नक़्श फ़रमाये और तमाम मुसलमानों को इस्लामी तरज़े ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। ■■■

स. नं. 48 का बक़िया ....

दीन के नाम पर मता-ए-कायनात लुटा देने का जो जज़्बा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत में था वह दूसरों में न था। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु के इन्तिख़ाब को कभी दाग़दार नहीं होने दिया। आप ने नाइब आला हज़रत की हैसियत से पूरे अरब व अजम में यह कहते हुये पैग़ामे रज़ा, फ़िक्रे रज़ा और मसलके रज़ा की धूम मचा दी कि:

क्यूँ रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

मौलाए करीम हम तमाम आशिक़ाने रज़ा को हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जैसा इश्क़ो-इरफ़ान अता फ़रमाए। ■■■

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की हयातो-ख़िदमात पर रौशनी डालती एक फ़िक्र अंगेज़ तहरीर

उठ मेरे धूम मचाने वाले

अज़: मौलाना रहमतुल्लाह सिद्दीक़ी ★

असलाफ़ की हयात व ख़िदमात, किरदार व अमल और उन की यादों के बुझते हुये चिराग़ों की लौ को तेज़ करना हर मोमिन के दीनी, मिल्ली और अख़लाक़ी फ़रीज़े में दाख़िल है। इस लिये कि बद्अक़ीदगी, बद्अमली और बे-राह रवी के माहौल में उनकी हयात के ताबिन्दा नुक़ूश, दम तोड़ते जज़्बों, टूटते हौसलों और मुन्तशिर ख़्यालों को यक़ीन व ऐतमाद की मंज़िल अता करते हैं। तारीख़ पर जिन लोगों की गहरी नज़र है वह इस बात से ख़ूब अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि जब जब तारीकी के साये घहरे हुये हैं, आज़ाद ख़्याली का तूफ़ान उठा है और फ़िक्री आवारगी के मोहलक जरासीम ने स्वालेह नज़रियात को मुतासिर करने की कोशिशें की हैं तो हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जैसी इल्म परवर, पाकबाज़, दीन परस्त और तक़्वा शेआ़र शख़्सियात के पाकीज़ा कारनामों से फिसलते क़दमों को इस्तेक़ामत की दौलत, यक़ीन का नूर और उम्मीद का सवेरा मिला है।

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत इल्म व अमल, इश्क़ व इरफ़ान और ईमान व यक़ीन की उस मंज़िल पर फ़ाइज़ थे जहां पहुँचने की फ़िक्र में बड़े बड़े साहिबे फ़ज़्लो कमाल के शाहीन अक़्ल के बाल व पर जलते हुये दिखाई देते हैं। उलुमो फुनून की कोई ऐसी शाख़ नहीं, इश्क व इरफ़ान की कोई ऐसी सरहद नहीं और ज़ोहदो पारसाई की कोई ऐसी मंज़िल नहीं, जहाँ आपने अपने वुजूदे मस्ऊद का ऐहसास न दिलाया हो, अगर आपकी हयात के सुनहरे औराक़ उलटे जायें, तारीख़ के दफ़ातिर खंगाले जायें और ज़मीन की वुस्अ़तों में फैले हुये आप के नुक़ूश यकजा किये जायें तो हिक्मत व दानाई के दर्जनों अबवाब मुरत्तिब हो सकते हैं।अ ाप की किताबे हयात का हर वर्क़ चाँद की चाँदनी से ज़्यादा साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और सूरज की तरह दरख़्शां व ताबिन्दा है।

हज़ूर मुजाहिदे मिल्लत यक़ीं मोहकम, अमल पैहम, मोहब्बत फ़ातेह आलम की अमली तफ़सीर थे। हवादिस से उलझते हुये मक़ासिद तक पहुँचना उनकी फ़ितरत थी। उन की ज़ात मेअ़्मारे सुन्नियत भी थी और शिआरे सुन्नत भी। ज़मीन पर बैठ कर अफ़्लाक की वुस्अ़तों में टहलना आप के मआ़मुलात में दाख़िल था। आप की ज़ात जमाअ़ते अहले सुन्नत के लिये इनामे इलाही भी थी और इसरारे इलाही भी, आप को आप के अहद ने नहीं समझा। आप को आपका अहद समझ लेता, तो बर्रे सग़ीर में आज मुसलमानों की तारीख़ मुख़्तलिफ़ होती। जिस तरह माज़ी में आप के नुक़ूशेपा मिनारे नूर थे इसी तरह आज भी है और इन्शा अल्लाह क़यामत तक गुत्थियाँ मीनारे नूर बने रहेंगे। आज की क़यादत आप के नुक़ूश हयात को रहनुमा बना कर जमाती मसाइल की बहुत सारी पेचीदा सुलझा सकती है। आप की ज़िन्दगी के तमाम तर नुक़ूश रौशन हैं लेकिन उन नुक़ूश अपनी हयात का हिस्सा बनाने के लिये कोई तैयार नहीं होता। आप की ज़ात ता-हयात फ़ानूसे इश्क़ व इरफ़ान की सूरत में रौशन रही। आप ने जमाते अहले सुन्नत को जो वक़ार व ऐतबार बख़्शा है, उसकी कोई दूसरी मिसाल पेश करना बहुत मुशकिल है। बातिल कुव्वतें आप के वुजूद से हिरासां रहा करती थीं। बिला ज़रूरते शरीअ़ा किसी भी बातिल कुव्वत से इशतराक के आप सख़्त मुख़ालिफ़ थे। आप की शख़सियत अपने अहद में कई जहात से मुमताज़ थी।

★ मज़मुन निगार मुजल्ला पैग़ामे रज़ा मुम्बई के मुदीरे आला और एक मुमताज़ इस्लामी स्कॉलर हैं।

आप की शख़्सियत में मिल्ली दर्द को मुजस्सम देखा जा सकता है। मुल्क व मिल्लत के हवाले से आप के जज़्बात व ख़्यालात में जो पकीज़गी थी वह अब कहीं नज़री नहीं आती। आप का इल्म, आपका अमल और आपका इश्क़ तक़लीद था। हरारते इश्क़ आप को हर वक़्त बे-चैन किये रहती थी। यही वजह है कि आप का बिस्तर हर वक़्त बंधा रहता था। त-उम्र आप की फ़क़ीराना ज़िन्दगी की दहलीज़ पर रईसी पर पटकती रही। दुनियां की बड़ी से बड़ी ज़ालिम व जाबिर ताक़त आप को कभी मरऊब न कर सकी। आप ज़ुल्म व जबर की हर कलाई मरोड़ देते थे। अपने ज़माने में पूरी दुनियां में आप से बड़ा कोई दुसरा मुजाहिद न था और अब तक आप का कोई मिस्ल पैदा न हो सका है। जमाती रिवायात को आप ने जो तहफ़्फ़ूज़ फ़राहम किया है इस की मिसाल से माज़ी क़रीब की तारीख़ ख़ाली है। आप की ज़िन्दगी का हर तेवर इस शेअर का आईनादार था:

यक़ीं मोहकम, अमल पैहम, मोहब्बत फ़ातेह आलम
जिहादे ज़िन्दगानी में यह हैं, मर्दों की शमशीरें

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जिस ज़माने में पैदा हुये वह ज़माना मज़हब व मसलक के लिये बड़ा पुर ख़तर, पुर आशोब और नाज़ुक ज़माना था। मुसलमान दीनी, मिल्ली, सनअ़ती और सियासी ऐतबार से मायूसियों का शिकार था। इस्लामी इक्तदार व रिवायात को खुले आम निशाना बनाया जा रहा था। तफ़दीस अलुहीयत व रिसालत को शदीद ख़तरात लाहिक़ थे। मुसलमानों के दिलों से चिराग़ इश्क़े रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुझाने की कोशिश जारी थीं। महबूबाने ख़ुदा से बन्दगाने ख़ुदा के रिश्तों को टेढ़ी नज़रों से देखा जा रहा था। दर्सगाहों और ख़ानक़ाहों का वक़ार दाओं पर लगा हुआ था। मुसलमानों से इन का तसल्लुब और तशख्ख़ुस छीना जा रहा था। उन्हें ज़िन्दगी के हर शोबे में बे दस्त वपा करने की कोशिश तेज़ थीं। ऐसे पुर ख़तर माहौल में आप ने क़ौमे मुस्लिम को आबरू मन्दाना ज़िन्दगी गुज़ारने का हौसला बख़्शा और बातिल की हर साज़िश को खुश असलूबी के साथ बे-नक़ाब फ़रमाया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहू ने बातिल क़ुव्वतों से मुक़ाबले के लिये जो हथियार तैयार किये थे। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत उन्हीं हथियारों से लैस हो कर मैदान में उतरे और बातिल के नापाक इरादों को ख़ाक में मिला कर रख दिया। उन्होंने क़ौमे मुस्लिम को ब-मक़सद ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े बताये और ज़िन्दगी के हर शोबे में अपने वुजूद का ऐहसास दिलाने, हुकूमते वक़्त से अपने जाइज़ मुतालबात मनवाने और इजतमाई तौर पर मुनज़्ज़म रहने के लिये पुरज़ोर तहरीकें चलाई। मुस्लिम मसाईल को उठाने की बुनियाद पर आप हमेशा हुकूमते वक़्त की निगाहों में खटकते रहे। चूँकि आप ख़ुद एक बड़े स्टेट के मालिक थे, आप के साथ जमाअ़त भी थी और जमीअ़त भी थी, हुकूमते वक़्त के साथ साथ दूसरी इस्लाम मुख़ालिफ़ तहरीकात को आप की ताक़त व क़ुव्वत का ख़ूब अंदाज़ा था। फिर भी आप को मुसाईब व आलाम से दो चार होना पड़ा। क़ैद व बन्द की दिल ख़राश सोऊबतों से गुज़ारना पड़ा। इस के ब-वजूद मसाइब व आलाम के तेज़ातुंद झोंके आप के होसलों के चिराग़ को कभी बुझा न सके। आप ने अपने कारनामों से अपने अहद पर देर प-असरात छोड़े हैं। जब भी कोई मोअर्रिख़ आप के अहद की तारीख़ मुरत्तिब करेगा तो आपके ज़िक्र के बग़ैर वह तारीख़ मुकम्मल न समझी जायेगी। मिल्ली मफ़ादात के बाब में आप की बे-लोस क़ुरबानियों की एक तवील तारीख़ है, जैसे मुनज़्ज़म तौर पर तरतीब देने की ज़रूरत है। आप ही जैसी शख़्सियात पे डॉ. इक़बाल का यह शेर चस्पां होता है:

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुशकिल से होता है चमल में दीदा वर पैदा

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की विलादत 8 मुहर्रमुलहराम 1322 हि0 मुताबिक़ 22 मार्च 1904 ई0

में हुई और विसाल 6 जमादियुल अव्वल 1401 हि0 मुताबिक़ 13 मार्च 1981 ई0 में हुआ। आप की 78 साला ज़िन्दगी के 28 साल तालीम व तरबियत के लिये निकाल दिये जायें तो 50 साल बच जाते हैं। यानी आप पूरे 50 साल तक पूरे होश व हवास मज़हब व मसलक और क़ौम व मिल्लत की ख़िदमात अंजाम देते रहे। जब, जहां, जैसी ज़रूरत पेश आई आपने मुलक मिल्लत के लिये खुद को पेश किया। आप के वुजूद का कोई हिस्सा ऐसा न था जो दीनी, मिल्ली, इल्मी और सियासी ख़िदमात के जज़्बे से ख़ाली हो। बाज़ सूफ़िया का फ़रमान है कि जो सांस ज़िक्रे इलाही से ख़ाली हो वह काफ़िर है। आपकी हयात का मुताला इस ख़्याल को ऐतबार अता करता है कि आप की ज़िन्दगी का कोई लम्हा ज़िक्र व फ़िक्र से ख़ाली न था। आप के दीनी मिल्ली और जमाती दर्द को इस बात से समझा जा सकता है कि आप जिस शहर में जाते क़याम के लिये किसी मस्जिद का इन्तिख़ाब फ़रमाते। अक़ीदतमंदों की जमात यह चाहती कि हुज़ूर किसी के घर पे क़याम करें। अक़ीदतमंदों को आप जावाब देते कि घर दरवाज़े अमूमन दस बज़े रात में बन्द हो जाते हैं लेकिन ख़ुदा के घर के दरवाज़े हर वक़्त खुले रहते हैं। हमारी ज़रूरत क़ौम को न जाने किस वक़्त पेश आजाये। घर में क़याम करने से साहिबे ख़ाना को हमारे लिए पूरी पूरी रात बेदार होना होगा और यह दिक़्क़त तलब काम है। मस्जिद में न आने की पाबन्दी, न जाने की पाबन्दी। मुस्लेहीने उम्मत की तारीख़ में ऐसी मिसाल बहुत कम मिलेगी।

आप की इस तर्ज़े ज़िन्दगी पर जिस क़द्र ग़ौर व फ़िक्र कीजिये हैरानियां बढ़ती जाती हैं। इस हवाले से बहुत कुछ लिखा जा सकता है। आप ने अपनी दीनी, मिल्ली, इल्मी और सियासी ख़िदमात से पूरे अहद को मुतासिर किया। और आज जो भी आप की हयात का मुतआला करता है, मुतासिर हुये बग़ैर नहीं रहता। अहदे हाज़िर के मुस्लेहीने उम्मत के लिये आप की हयात की हर सांस मशअ़ले राह है।

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की ज़िन्दगी के मुताला के दौरान एक क़ारी क़दम क़दम पर हैरत व इस्ताजाब का शिकार होता है कि एक रईसे वक़्त पे फ़क़ीर की तैहीं गहरी कैसे होगई? उनकी ज़िन्दगी की हर सांस से फ़क़ीरी की ख़ुशबू फूटती थी। इन के रईसाना तेवर उस वक़्त देखने को मिलते थे, जब दीनी मिल्ली फ़रोग़ की राह में पैसे हाइल होते। दीनी रिवायात की तब्लीग़ व तरवीज के लिये उनके ख़ज़ाने का मुँह हर वक़्त खुला रहता। उनकी फ़क़ीरी की दहलीज़ पे अहले सरवत की भीड़ लगी रहती और हर शख़्स आप की जुम्बिशे लब का मुन्तज़िर होता। लेकिन आप की ज़ुबान खुलने के लिये आमादा नहीं होती, बल्कि हज़ारों बेमाया लोग आप की दुआओं से दौलत व सरवत की कान के मालिक होगये। फ़क़ीरों की बारगाहों में हर तरह के लोग हाज़िर होते हैं और अपने अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ सब बमुराद होते हैं। इन के यहां ज़ात, ब्रादरी, और क़बीले का कोई इम्तियाज़ नहीं होता। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का बाबे करम चौबीस घण्टे खुला रहता। आप के करम की बारिश में नहाने वालों की एक तवील फहरिस्त है। इस फ़हरिस्त में जमाते उलमा, जमाते फ़ुक़्हा, जमाते ख़ुताबा, जमाते मुनाज़रीन, जमाते मुहद्देसीन, जमाते मुतकल्लेमीन, मुनातिक़ा, फ़लासफ़ा, जमाते तलबा और अवाम सब नज़र आते हैं। आप की दर्सगाह इल्म में तिशनिगाने उलूमे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर वक़्त भीड़ सी लगी रहती। बल्कि आप के बाज़ तिलामिज़ा की दर्सगाहों में हम ने उलमा की जमात को ज़ानू-ए-तलम्मुज़तय किये हुये देख है।

रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा लिखते हैं:

इस हक़ीक़त का इज़हार करते हुये मैं फ़ख़्र महसूस करता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी का एक तवील हिस्सा मैं ने हज़रत मुजाहिदे मिल्लत की ख़िदमत में

गुज़ारा है। सफ़र व हज़र में उन की हमरकाबी का बारहा शर्फ़ हासिल हुआ है, खुसूसियत के साथ बारह मुनाज़रों मे उनके साथ मैने सफर की सआदत हासिल की है, जिन में से आठ मक़ामात पर मैं ने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की सदारत में कामयाब मुनाज़रा किया है, यह बिल्कुल अमरे वाक़िया है कि मुनाज़िरा के उसूल व रूमूज़ बहस व इस्तदलाल के ज़ाबते और गुफ़्तगू के क़वाइद व आदाब का जो सरमाया भी मेरे पास है वह हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत ही का अता कर्दा है।

पासबाने मिल्लत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिर्रहमा लिखते हैं: ''हमरी आम दर्सगाहों में ''मीन क़ुतबी'' के बाद ''मुल्ला हसन'' पढ़ाई जाती है लेकिन उलूम व मारिफ़ के इस बहर ज़ख़्ख़ार ने जब दर्सगाह संभाली तो ''मुल्ला हसन'' की जगह ''शरह मिरक़ात'' जैसे मुअर्रा किताब को जिस पर एक सतर का हासिया तक नहीं, उसे दाख़िले निसाब किया और उसी किताब में मुल्ला हसन व मुल्ला जलाल, क़ाज़ी हम्दुल्लाह तक के मुबाहस को खंगााल देते, जो इस बात की रौशन दलील है कि उन्हें मआकूलात पर किस हद तक यदे तूला हासिल था।''

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की इल्मी तबहहुर के हवाले से प्रोफ़ेसर शाहिद अख़्तर का बयान ज़ैल में मुलाहिज़ा करें:

सरकार मुजाहिदे मिल्लत की हयाते मुबारका का एक बड़ा हिस्सा चूँकि मिल्ली सरबुलन्दी और सरफ़राज़ी की कोशिशों नीज़ बद-अक़ीदगी के ख़िलाफ़ गुज़रा। इस लिये लोगों को इन के इल्मी तबहहुर का कमा हक्कहु अंदाज़ा न हो सका। जब कि हकीकत यह है कि वह बीसवीं सदी की आठवीं दहाई तक मुख़्तलिफ़ उलूम में अपने हम अस्र उलमा में मुमताज़ हैसियत के हामिल थे। माकूलात पर उनकी दस्तरस का ये आलम था इन के ज़माने के बड़े बड़े आलिम को उन की हमसरी का दावा नहीं था। जिस तरह मीर ने ''निकातुल शोरा'' में अपने अहद में पौने तीन शाइरों का वुजूद तसलीम किया था। बीसवीं सदी के माकूलात के एक मुस्तनद आलिम (सदरुल उलमा) मौलाना गुलाम जीलानी मेरठी रहमतुल्लाह अलैहि ने ठीक इसी तरह अपने अहद में माकूलात के ढाई आलिमों का वुजूद तसलीम किया था। बक़ौल उन के माकूलात पर उनके अलावा पूरी दसतरस अगर किसी को हासिल थी तो वह सरकार मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा की ज़ात थी और उन के तवस्सुत से उन के शागिर्द मौलाना निज़ामुद्दीन बलयावी साहब किब्ला शैख़ुल हदीस मदरसा फ़ैज़ुल उलूम को निस्फ़ रसाई। सरकार मुहद्दिसे आज़म हिन्द अलैहिर्रहमातु रिज़्वान ने भी सरकार मुजाहिदे मिल्लत के तबहहुरे इल्मी को इस तरह ख़िराजे तहसीन पेश फ़रमाया था। ''मुजाहिदे मिल्लत शाह हबीबुर्रहमान इल्म के बादशाह है।'' (नवाये हबीब, मुजाहिदे मिल्लत स. 47-48)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का अहद उलमा व मशाइख़ का अहद था। बड़ी बड़ी जामे उलूम शख़्सियात मुल्क के मुख़्तलिफ़ गोशों में मौजूद थीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु की दर्सगाह की तरबियत याफ़्ता शख़्सियात का एक अलग नूरी कारवां था। तिलमीज़े आला हज़रत हुज़ूर सद्रुश्शरिया के फ़ैज़ याफ़्ता उलमा की जमात अलग थी, सद्रुश्शरिया के तिलामज़ा की फ़ेहरिस्त काफ़ी तवील है, दूसरी दर्सगाहों के सनद याफ़्ता उलमा भी कम न थे, यानी अहले इल्म व फ़न की जमात ग़ैर मुनक़सिम हिन्दुस्तान के हर गोशो में मौजूद थी और सब अपनी अपनी जगह पर मसरूफ़े अमल थे। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु के तिलामज़ा के बाद उलमा की जो जमात नज़र आती है उनमें हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की शख़्सियत मुख़्तलिफ़ जेहात से मुमताज़ नज़र आती है। अपने मुआसरीन में हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के इम्तियाज़ात की अगर

फ़हरिस्त तैयार की जाये तो खुद एक किताब तैयार हो जाये। ज़ैल में इम्तियाज़ात के चन्द नुमायां पहलू मुलाहिज़ा करें।

मुजाहिदे मिल्लत रईसे आज़म उड़ीसा थे। यानी उड़ीसा में आप से बड़ा कोई रईसे न था आपकी रियासत रऊफ़िया स्टेट से मशहूरो मआरूफ़ थी आप की दौलत व सरवत का इस बात से अंदाज़ा लगया जा सकता है कि आप सालाना 49 हज़ार रुपये ब्रिटिश गवर्मेंट को टैक्स अदा करते थे। अगर इस 49 हज़ार से आज की करन्सी ख़रीदी जाये तो एक करोड़ से ज़ाइद रक़म बनती है। आपकी रियासत, जुल्म व नइंसाफ़ी से पाक थी आपके आवाये किराम भी नर्म दिल, ग़रीब परवर और अदल पसन्द थे। फ़ुक़रा व मसाकीन के लिये आपका दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता था। आपके दरवाज़े से कोई साइल कभी महरूम नहीं लौटता था। बल्कि तारीख़ यह भी बताती है कि माँगने वालों को हाजत से सिवा देते थे। साइलों में तिशनिगाने उलूम भी होते थे। मरीज़ाने इश्क़ भी होते थे, और तालिबाने दुनिया भी होते थे। उनकी बारगाह में हाज़िर होने वाले साइलों की जुबान पर कभी कोई हर्फ़े शिकवा नहीं देख गया। वह भीख देते भी थे और सुन्नते नबवी के मुताबिक़ मंगता की भलाई की दुआयें भी करते थे। साइलों के हवाले से उनका हाल कुछ यूँ था:

आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा
ख़ुद भीख दें और ख़ुद कहें मँगता का भला हो

हुज़ूरे मुजाहिदे मिल्लत रईस ही नहीं बल्कि रईसे आज़म थे। आपने अपनी पूरी रियासत को दीनी इक्तिदार रिवायात फ़रोग़ के लिये वक़्फ़ कर दिया था। आपकी हयात का अक्सर हिस्सा रेल में गुज़रा या जेल में। ब्रिटिश गवर्मेंट से आप महाज़ आरा रहे। और ब्रिटिश गवर्मेंट के बाद जो हुकूमत आई उसकी बअज़ पालीसियों से भी आप मुत्तफ़िक़ न थे। आप हर उस पॉलिसी के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करते रहे जो समाज के दबे कुचले लोगों के ख़िलाफ़ होती आपकी सदाये ऐहतिजाज से राये आम्मा मिन्टों में तब्दील हो जाया करती थी। नतीजे के तौर पर हुकूमत और उससे जुड़े हुये लोग अपनी पॉलिसी पे नज़रे सानी करने पर मजबूर हो जाते। आपका मज़हबी और सियासी दोनों मक़ाम बहुत बुलन्द था। आपकी ज़ात सूरत व सीरत, अमल, किरदार, के ऐतबार से भी बेमिसाल थी। इंकिसारी, मेहमान नवाज़ी, फ़ैयाज़ी, सख़ावत, सब्र व शुक्र, ख़ुश मिजाज़ी, क़ौल व फ़ेल में यकसानियत के ऐतबार से भी बेमिसाल व बे-नज़ीर थी। इस्लामी ज़िन्दगी जिस अनासिर से तक्मील पाती है वह सारे अनासिर आपकी किताबे हयात में बेहतर तरीक़े से देखे जा सकते हैं। आप अख़लाक़े नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महसूस पैकर थे। आप के इश्क़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवाले से शम्सुल उल्मा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब रहमतुतल्ला अलैहि साबिक़ शेख़ुल हदीस दारूल उलूम ख़ैरिया निज़ामिया सहसराम लिख़ते हैं।

"इश्क़े हक़ीक़ी के इस्तगराक़ में मुजाहिदे मिल्लत हर आन यही चाहते थे कि मदीना मुनव्वरा की सर ज़मीन हो और मैं हूँ। बसूरते आज़ादी बसूरते क़ैद मवाक़े पर हरगिज़ निगाह नहीं रहती थी। क्योंकि वो मैदाने इश्क़ का फ़र्ज़े अव्वलीन समझते थे। जब हाज़िरी होती तो वहां के ख़स व ख़शाक को बोसा देते। ज़मीन के चप्पा चप्पा को चूम लिया करते थे। जब दरयाफ़्त किया जाता कि ये क्या ?तो फ़रमाते कि मेरे सरकार का इस मक़ाम पर कभी क़दमे नाज़ पड़ा हो।"

(नवाये हबीब का मुजाहिदे मिल्लत नम्बर, स. 122)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की पुतलियों मे जमाले खज़रा मुनक्कश था उन्हें ये एज़ाज़ कठिन रियाज़त के बाद ही मिला था उन्हें ये मकाम हासिल था के हिन्द मे बैठ कर गुम्बदे खज़रा की जियारत से खुद को शाद काम किया करते थे, उनका इश्क़ जुनूँ की सरहदों मे दाखिल हो चुका था, उनकी जलवतो खलवत में हर वक़्त नग़माते रज़ा की धूम रहा कर थी, जब हिन्द का ये आलम है तो दयारे महबूब मे आप की वारफ्तगी का क्या हाल रहता होगा उस कैफियत की तस्वीर लफ्ज़ो मे उतारना बहोत मूश्किल है, देखने वालों का बयान है कि आप ज़र्राते मदीना को अपनी आँखों से बोसे देते और आप की ज़बान पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान क़ादरी बरकाती बरेलवी कुद्दिस सिरहू के इस तरह के

अश्आर होते :

ऐ ख़ारे तय्यबा देख कि दामन न भीग जाये
यूँ दिल में आ कि दीदये तर को ख़बर न हो
कूचे कूचे में महकती है यहां बूये कमीस
यूसुफ़तां है हर इक गोश-ए-कनआने अ़रब
किनारे ख़ाके मदीना में राहतें मिलतीं
दिले हज़ीं तुझे अशके चकीदा होना था

हज़रत मौलाना अब्दुल करीम नईमी लिखते हैं:

''मुहब्बत का तक़ाज़ा यह भी होता है कि महबूब के ताअ़ल्लुक़ दारों से भी मुहब्बत करे। चुनाँचे आप ने सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोस्तों और ताअ़ल्लुक़ दारों से उल्फ़त व मुहब्बत की। महबूबे ख़ुदा के दुशमनों से दुशमनी ब-हाल रखी। सहाब-ए-किराम, अज़्वाजे मुताहरात, अहले बैत, आले रसूल और औलिया-ए-किराम को जान व दिल से महबूब रखा। काफ़िरों, मुनाफ़िक़ों और तमाम बद्मज़हबों से कुलयतन कुलयतन नफ़रत व अदावत थी। महबूब ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत का शैक़ व इश्तियाक़ ब-कसरत रखते थे। शाहे बत्हा की याद और ज़िक्र पाक से हमेशा रतबुल लिसान रहते। सोते में याद थी, जागते में याद थी, चलते फ़िरते में याद थी। हर हालत में दिल से, ज़ुबाने ज़िक्रे महबूब से अपने को गरमाया करते। ज़िक्रे महबूबे ख़ुदा की फ़रावानी के साथ साथ तअ़ज़ीम व तौक़ीर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में अदब व एहतराम के लिये आप की पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ थी। अपने क़ौल व फ़ेअ़्ल और ह़ाल से इस इम्तिहान में पूरी तरह कामयाब थे। आपकी चश्माने मुबारक महबूबे ख़ुदा के हुस्न व जमाल से मुस्तग़रक़ रहती। आप के काने मुबारक महबूब के ज़िक्र व मद्ह़ा और उनके कलाम के अ़लावा हर कलाम से बहरा रहता।'' (नवाये हबीब, मुजाहिदे मिल्लत न. स. 212)

प्रोफ़ेसर शाहिद अख़्तर लिखते हैं:

''इश्क़ की कैफ़ियत यह होती है कि आशिक़े मअ़ाशूक़ की एक एक अदा पर जान निसार करने की तड़प अपने अन्दर रखे और मअ़ाशूक़ के तसव्वुर से ही विसाल की लज़्ज़तों में डूब जाया करे। सरकार मुजाहिदे मिल्लत के इश्क़ का यह आलम था कि अपनी ज़िन्दगी के मुअ़ामलात में वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अदाओं की पैरवी करते और नाम नामी इस्मेग्रामी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आते ही तसव्वुरे मअ़ाशूक़ में डूब कर मुज़तीरब हो जाते। आँखें आँसू बरसाने लगतीं। सरकार आसी रहमतुल्लाह अलैहि ने इश्क़ की एक कैफ़ियत यूँ पेश की है:-

आज फूले न समायें के कफ़न में आसी
है शबे गौर भी इस गुल से मुलाक़ात की रात

सरकार मुजाहिदे मिल्लत इश्क़ की इसी कैफ़ियत में सर शार थे। जहां मौत भी इस लिये लज़्ज़त आ गयी थी कि इस गुल से मुलाक़ात की सबील साबित होगी। शुरू में शोला बार तक़रीर फ़रामया करते थे मगर बाद में यह हालत हो गई कि तक़रीर कर ही नहीं पाते। दो चार जुम्लों के बाद सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र आया और रिक़्क़त त़ारी हो गई, आँसू जारी हो गये।

अगस्त 1980 ई0 में सरकार मुजाहिदे मिल्लत की तशरीफ़ आवरी अपने इलाक़े में हुई। फ़क़ीर को यह ज़िम्मादारी सौंपी गई थी कि हूड़ा जा कर सरकार को अपने यहाँ लाऊँ। एक दिन पहले फ़क़ीर हूड़ा पहुँचा। तिकियापाड़ा से बाओड़िया, बाओड़िया में शब गुज़ारी, फिरतिकियापाड़ा और तकियापाड़ा से शीबपुर पता चला कि सरकार तेलनी पाड़ा तशरीफ़ ले जा चुके है। जान में जान आई, घर आया तो पता चला कि सरकार ग़ुस्ल फ़रमा रहे हैं, ग़ुस्ल से फ़राग़त हुई तो कमतरीन ने क़दम बोसी की। सरकार ने पूछा कि तलाश में ज़हमत हुई होगी। कमतरीन ने कहा, सरकार ज़हमत तो क्या हुई, हाँ जब एक जगह से दूसरी जगह दौड़ रहा था, वहशत कल्कत्तवी का यह शेअ़र ज़ुबान पर जारी था:

है अरज़ां इस क़दर दीदारे जानां हम न मानेंगे
ज़ुलैख़ा क्या सुनाई है ख़्याल इस का है ख़्वाब इस का

शेअ़र का सुनना था कि चेहरा मोतग़य्यर हो गया। बार बार.. है अरज़ां इस क़दर दीदारे जानां हम न मानेंगे.. कहते और आँसुओं की झड़ी लग जाती। कमतरीन ने अपने इश्क़ की बात की थी। सरकार मुजाहिदे मिल्लत अपने मआ़शूक़ के तसव्वुर में डूब गये" नवाये हबीब का मुजाहिदे मिल्लत न. स. 67-68)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की पूरी ज़िन्दगी मज़हबी दर्द से इबारत थी। बल्कि अगर कोई मज़हबी दर्द को मुजस्सम देखना चाहे तो हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत को देख सकता है। आप ने मज़हबी क़दरों के फ़रोग़ में जो कुर्बानियां पेश की हैं, उस के बयान के लिये लुग़ात में अलफ़ाज़ नहीं मिलते। गोद से गौर तक का कोई लम्हा आप का ख़िदमते दीन मतीन से ख़ाली नहीं मिलता। आप की ज़िन्दगी की हर सांस से इत्तबअ़ शरीअ़त की ख़ुशबू फूटती हैं।

आप की दीनी मिल्ली और इल्मी ज़िन्दगी का इन्तिहाई हसीन नक़्शा हज़रत अल्लामा असलम बस्तवी रहमतुल्लाह अलैहि ने कुछ यूँ खींचा है:-

वह मुजाहिदे मिल्लत! जो रात के ज़ाहिद और दिन के मुजाहिद थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो उस्वए-सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी का अमली नमूना थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो सुन्नते उस्मानी की शाने इस्तग़न थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो ज़रबे यदुल्लाह के पर तो थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो सुन्नते इश्क़े बिलाली के पैकर थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो आबरू-ए-मिल्लत थे। वह मजाहिदे मिल्लत! जो क़ौम व मिल्लत के क़ाफ़िला सालार थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो तसव्वुफ़ के इमाम और सूफ़ियों के सरदार थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो इल्म का पहाड़ थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो पैकर हिलम व मुरव्वत थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जिन के इश्क़े रिसालत पनाही ने नजदी हुकूमत के दरो बाम को हिला दिया। वह मुजाहिदे मिल्लत! जिनसे दुनिया-ए-वहाबियत लरज़ा बर अन्दाम थी। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो बजाय ख़ुद एक तहरीक थे। इस अहदे गुमरही में निशाने मंज़िल थे। इस दौर तारीकी में एक "मीनार-ए-नूर" और एक तेज़ तर्रार क़िस्म की रौशनी थे। मगर आह वह "मीनार-ए-नूर" हम से रोपोश हो गया और वह रौशनी हम से छुप गई। (माहनामा अशरिफ़या, मुजाहिदे मिल्लत न. स. 143-144)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की ज़िन्दगी के दो मज़बूत प्लेटफ़ॉर्म थे। एक मज़हबी दूसरी सियासी, चूँकि आप के अहद में मुसलमान और सियासी दोनों ऐतबार ज़वाल का शिकार थे। मुल्क की दूसरी क़ौमें मुसलमानों को ज़िन्दगी के तमाम शोबों में बे दस्त व पा कर देना चाहती थीं। उन्हें यह ख़तराह था कि अगर मुसलमान सियासी, समाजी और मुआ़शी तौर पर ख़ुद कफ़ील होंगे तो उन से निपटना बहुत मुशकिल होगा। और आज भी हुकूमती सतह पर यही कोशिश जारी है बल्कि आज मुसलमानों के हालात कल से बद्तर हैं और आने वाला वक़्त और भी बुरा होगा। आज हुकूमत अपने मिशन पर पूरे तौर पर कामयाब हो चुकी है। हुकूमत का कोई भी शोड़बा ऐसा नहीं है जिस में मुसलमानों की मोअस्सर नुमाइन्दगी हो। कल हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जैसी मुस्तहकम क़यादत मुसलमानों में मौजूद थी। आज मुसलमानों में कोई मुजाहिदे मिल्लत नहीं। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत को हुकूमत की बद्निगाही का ख़ुब ऐहसास था, यही वजह थी कि आप ने मुसलमानों में जुनूने इश्क़ को तेज़ करने की ताहियात जद्दोजहद रखी। आप को आला हज़रत ने अपना मिशन सौंपा था। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु ने अग़यार के नापाक अज़ाइम को भांप लिया था। आप ने मुसलमानों के हाल को माज़ी से जोड़ने की कोशिशें कीं इस सिलसिले में आप की तालीफ़ात व तसनीफ़ात देखी जा सकती हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु ने जिस तहरीक की बुनियाद रखी थी, इल्म व इरफ़ान और शऊर व आगाही का जो चिराग़ रौशन किया था इसी चिराग़ की लौ को तेज़ करने के लिये आप ने बाद विसाल हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का इन्तिख़ाब फ़रमाया था। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती क़ुद्स सिर्रहु के ज़माने में उलमा, मशाइख़ और मज़हबी रहनुमाओं की कमी नहीं थी लेकिन बक़िया स. 41 पर

अपने दरमियान क़ादयानियों को पहचानें

अज़: मौलाना ख़ुर्शीद आलम रज़वी ★

नक़्दो - नज़र

इस वक़्त पूरा पाकिस्तान क़ादयानियों की फ़ितानागरी का शिकार है, बेगुनाह आशिक़ाने नबी सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम पर गोलियाँ बरसायी जा रही हैं, उम्मते मुस्तफ़ा "नामूसे रिसालत" की हिफ़ाज़त की ख़ातिर सड़कों पर अपने शबो-रोज़ गुज़ारने पर मजबूर है, ताक़त व हुकूमत के नशे में चूर अरबाबे इक़्तेदार अपने ईमान व इस्लाम का सौदा करने में लगे हुए हैं, जिस का फ़ायदा उठा कर यह आस्तीन के साँप हुकूमत के आला ओहदों पर पहुँच चुके हैं और हक़ परस्तो के हाथों बातिल के लिये हिफ़ाज़ती हिसार खींच रहे हैं, ऐसे पुरफ़ितन दौर में क़ौम के लिए इन "गन्दुम नुमा जौ फ़रूशों" की सही पहचान ज़रूरी है।

ज़ेरे नज़र मज़मून पाकिस्तान में क़ादयानियों की आईनी हैसियत वाज़ेह करता है और साथ ही साथ उनकी मज़हबी फ़रेब कारियों, मक्कारियों का पर्दा भी चाक करते है (फ़ारूकी)

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी ने अपने आक़ाओं के इशारे पर दावए नबूवत करके क़ौमो-मिल्लत में तफ़रीको-इंतेशार कि जो बीज बोई थी उस के पैरो कार आज भी उसकी आबयारी कर रहे हैं।

ध्यान रहे कि 1974 ई0 की आईनी तरमीम और बादे अज़ाँ 1984 ईसवी के इम्तिनाए क़ादयानित क़ानूनी ऐक्ट की शिक 298 ए, 298 बी, और 298 सी के तहत क़ादयानी ना सिर्फ काफ़िर हैं बल्कि धोका दे कर खुद को मुसलमान साबित करने के लिए अगर "शेआ़रे इस्लाम" का इस्तेमाल करेंगे तो उनके लिए 3 साल क़ैद की सज़ा पाकिस्तानी कनून में मौजूद है।

ज़ेल में कुछ ऐसी निशानियाँ बयान की जा रही हैं जिन का इस्तेमाल मुसलमानों के भेस में छिप कर रहने वाले क़ादयानी अक्सरो-बेशतर करते है:

(1) मुसलमानों से गप-शप करने के बहाने क़ादयानी अपनी पहचान कराये बग़ैर बात का रूख़ मज़हबी उमूर की तरफ़ मोड़ देता है और ये बावर कराने कि कोशिश मे लगा रहता है कि ईसा अलैहिस्सलाम के मुताअल्लीक़ दर्ज ज़ैल अक़ायद रखना इस्लाम और क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही नहीं कुफ़्र भी है।

अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर ज़िन्दा उठा लिया है और काफ़िर उन को सलीब नहीं दे सके और वह क़यामत के करीब दुनिया में वापस आयेंगें और दज्जाल को क़त्ल करेंगे।

क़ादयानी यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि उन को सलीब पर चढ़ा दिया लेकिन वह जख़्मी हालत में फिलिस्तीन से कश्मीर हिजरत कर गये, वहां 120 साल की उम्र में उनको मौत आयी।

सही अहादीस में यह मज़कूर है कि क़्यामत से क़बल हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम दुनिया में नाज़िल होंगे, इससे मुराद यह है कि इस उम्मत में से ही किसी ईसा अलैहिस्सलाम जैसे को पैदा होकर मसीहे इब्ने मरयम और इमाम मेंहदी होने का दावा करना है।

क़ुरआन में जहां ईसा इब्ने मरयम के मुताअल्लिक़ "तोवफ्फा" का लफ़्ज़ मौजूद है, इस से मुराद उनकी मौत है, हालांकि अरबी जानने वाले बख़ूबी समझते है के "तोवफ्फा" का मतलब किसी चीज़ को पूरा-पूरा क़ब्ज़ करना या "पूरा-पूरा ले लेना" होता है और चूँकि अल्लाह ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मुकम्मल तोवफ्फा कर ली, यानी, जिस्म शऊर और रूह

★ मुरतिबे मज़मुन जामिआतुज़ ज़हरा मख़दूम सराए, सिवान, बिहार के ऑफिस इन्चार्ज हैं।

उनकी "तोवफ्फा" का बयान है और अहादीस में उनके क़यामत से क़बल नुज़ूल का बयान इस "तोवफ्फा" की तस्दीक़ करते है।

(2) उल्माए दीन से शदीद मुतानफ़्फ़िर करने की कोशिश करते हैं, उनको तमाम बुराईयों की जड़ बताते हैं "मुल्ला और मौलवी" के नाम से पुकारते हैं, फ़िरक़ा वारियत और कुफ्र के फ़तवों पर बात करने के बहाने मौज़ू को कादियानीयों के ख़िलाफ़ होने वाली कारवाइयों को जमाते अहमदिया की तरफ ले जाते हैं और यह जताने की कोशिश करते हैं कि जिस तरह मुसलमानों के तमाम फ़िरक़े एक दूसरे को काफ़िर क़रार देते हैं, वैसे ही उन्होंने जमाअते अहमदिया को अपने आपस के इख़्तिलाफ़ के तहत काफ़िर क़रार दे दिया है, जबकि फ़िक़ह के चारों अइम्मा इमाम अहमद बिन हम्बल, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक और इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रिज़्वानुल्लाहि ताअ़ला अन्हुम में से किसी ने दूसरे फ़िक़ह के मानने वाले को काफ़िर या इस्लाम से ख़ारिज क़रार नहीं दिया।

अक़ीदए-ख़त्मे नबूव्वत के मामले में उम्मते मुस्लिमा का इज्मा है कि हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम के बाद पैदा होने वाला हर मुद्दईए नबूव्वत और उस के पैरोकार काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज हैं यहाँ तक कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रदीअल्लाहू अन्हू का फ़तवा है कि जिस किसी ने हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी मुद्दईए नबूव्वत से उसकी सदाक़त का सबूत तलब किया, किसी तरद्दुद के साथ तो वो ख़ुद भी इस्लाम से खारिज हो जाएगा।

(3) क़ादयानी चाँदी की ख़ास क़िस्म की अँगूठी पहनते हैं, अकसर ला इल्म मुसलमानों के सामने या वहाँ जहाँ उन को इस बात का यक़ीन हो कि उन को कोई पहचान नहीं पाएगा, वो अँगूठी जिस पर क़ूरान की यह आयत "अलैसल्लाहू बेकाफ्फिन अब्दुहू'' यानी क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं ? लिखी होती है, मिर्ज़ा क़ादयानी की सुन्नत के तौर पर पहनते हैं क्योंकि मिर्ज़ा क़ादयानी भी ऐसी अँगूठी पहना करता था।

(4) क़ादयानियों में उन के ख़लीफ़ा की मुकम्मल दाढ़ी होती है, वो शेआ़रे इस्लाम की मुकम्मल पाबन्दी करता है ताकि आम मुसलमानों को धोका दे सके वरना मुसलमानों से नफ़रत के सबब क़ादयानियों की तो कोशिश यह होती है कि हर उस वज़ा क़ता और शेआ़र व नक़ल से बचें जिसे हमारे उल्माए इक़राम या एक मुसलमान अपनाता है, वैसे तो क़ादयानी आप को 99 फ़ीसद फ्रेंच कट मिलेगा या फ़िर क्लीन शेव।

उनके यहाँ ग़ैर एलानिया तौर पर कोई जमाते अहमदिया का ओहदे दार मौजूदा ख़लीफ़ा से लम्बी या घनी दाड़ी नहीं रख सकता, इस लिए कभी सालाना क़ादयानी जल्से के मौके पर भी हज़ारों क़ादयानियों के बीच कोई क़ादयानी अपने ख़लीफ़ा जैसी, उस के बराबर या उससे लम्बी दाढ़ी वाला नज़र नहीं आएगा।

अगर आप गूगल में रोमन उर्दू में जलसा सालाना जमात अहमदिया लिख़ कर सर्च करेंगे तो इस बात की तसदीक़ हो जाएगी।

(5) क़ादयानी कभी मुसलमानों की तरह मख़्सूस नमाज़ वाली गोल टोपी नहीं पहनते, वो या तो पठानों की मख़्सूस टोपी पहने नज़र आएंगे या फ़िर सिन्धी टोपी या जिन्नाह कैप।

इस हवाले से हम एक ऐसी बात जो कोई क़ादयानी आपको नहीं बताएगा, बताते हैं कि क़ादयानी जमात में उनके मर्तबे या रूतबे के लिहाज़ से सर ढांपने का रिवाज है, मर्दों में उन का ख़लीफ़ा शिमला वाली पगड़ी पहनता है और उस के अलावा किसी क़ादयानी को उस की मौजूदगी में पगड़ी पहनने की इजाज़त नहीं होती।

ख़लीफ़ा के बाद जो उस से निचले दर्जे के ओहदेदार हैं वो जिन्नाह कैप का इस्तेमाल करतें हैं, पैन्ट कोट या शलवार कमीज़ और शेरवानी के साथ।

फ़िर उनसे निचले दर्जे के आम क़ादयानी पठानों की मख़्सूस टोपी पहनते हैं या फ़िर सिन्धी टोपी में नज़र आते हैं।

(6)कादयानी औरतों को पहचानना तो और भी आसान है, यह भी अपने क़ादयानी मर्दों की तरह मुसलमान औरतों की ज़िद में ढीले ढाले बुर्क़े के बजाए आम तौर पर टाइट बुर्क़ा पहनती हैं, जिस की कमर पर अकसर बैल्ट भी लगी होती हैं ताके बुर्के की फ़िटिंग अच्छी आए इसके अलावा उनके बुर्के में एक लम्बी चाक भी होती है और उनके नक़ाब का तरीक़ा भी निराला होता है जिसमें नक़ाब नाक के नीचे रखा होता है होंठों के ऊपर ढलका हुआ, जिससे सिवाए लब और रूख़्सार के सब नज़र आता है जो "साफ़ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं" का मंज़र पेश करता है, जिसे मुसलमान मर्दों को लुभाने के लिए एक हर्बे के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

(7)क़ादयानियों का टीवी चैनल एम टीवी ए (मुस्लिम टीवी अहमदिया) के नाम से 24 घन्टे अपना प्रोग्राम नशर करता है, जिस पर यह अपने मज़मूम कुफ़्रिया अक़ीदे की खुल्लम खुल्ला तब्लीग़ करते हैं और दोखाधड़ी पर मबनी तालीम को इस्लाम अहमदियत यानी अहमदियत ही अस्ल इस्लाम है, के नारे के साथ पेश करते हैं। क़ादयानीयों की एक निशानी यह भी है कि आज के इस दौर में जब केबल टीवी आम है और डिश अन्टीना का इस्तेमाल पाकिस्तान में भी आम घरेलू सारेफ़ीन के लिए पुरानी बात हो चुकी है लेकिन इसके बावजूद क़ादयानी एम टीवी ए चैनल देखने की ग़र्ज़ से अपने घरों पर डिश अन्टीना ही लगाते हैं और जिन मुसलमानों पर यह अपने फ़रेब की तबा आज़माई करते हैं, उनको अकसर तबलीग की नियत से अपना यह टीवी चैनल अपने घर या इलाक़े के क़ादयानी मरकज़ में लाकर दिखाने की काशिश करते हैं।

क़ादयानियों का मशहूर चैनल मीनारतुल मसीह है जो कि क़ादियान पंजाब हिंदुस्तान में वाक़े है, जिस मीनारा को यह अपने टीवी चैनल पर मुसलमानों के मुक़ाबले ख़ानाए काबा और मस्जिदे नबवी की जगह दिखा कर उसको मुश्तहिर करते हैं

(8)सब से अहम निशानी यह है कि क़ादयानी नामों के आग़ाज़ में आप को मुहम्मद लगा नज़र नहीं आएगा और ना ही कोई पैदाइशी क़ादयानी आपको इस तरह का ख़ालिस इस्लामी नाम रखता है, जैसे कि अब्दुल्ला, मुस्तफ़ा, अब्दुर्रशीद , अब्दुल क़य्यूम वग़ैरा जबकि इन के नामों के इख़्तिताम में अहमद लगा हुआ पाया जाता है जो मिर्ज़ा ग़ुलाम कादयानी के नाम का भी हिस्सा था और क़ादयानी क़ुरान में बयान होने वाले आक़ा सल्लललाहो अलैहि वसल्लम के मख़्सूस नाम अहमद से मुराद मिर्ज़ा क़ादयानी की ज़ात ही लेते हैं, मआज़ल्लाह।

(9)याद रहे कि दुनिया भर में पाए जाने वाले ज़्यादातर क़ादयानी पंजाबी ज़बान बोलने वाले घरानों से ताअल्लुक़ रखते हैं क्योंकि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी का ताअल्लुक़ भी तक़सीम हिन्दुस्तान से पहले "क़ादयान" ज़िला गुरदासपुर पंजाब से था, इस लिये इन की तबलीग़ का मरकज़ी दायरा असर भी तक़सीम से पहले और बाद में पंजाब ही रहा, ताकि यहाँ मौजूद सादा दिल देहाती और मिलनसार माहौल में उनके फ़ितने की आबियारी हो सके और आज भी यह सिलसिला जारी है।

क़ादयानियों की यह कुछ निशानियाँ तहरीर करदी गई हैं, इस उम्मीद के साथ कि क़ारईन उन्हें ज़रूर याद रखेंगे और उन्हें दूसरों तक पहुँचाएंगे ताकि आम मुसलमान इस क़ादयानी फ़ितने से महफ़ूज़ रहें और अपना ईमान और इस्लाम सलामत रख सकें।

अंग्रेज़ों के पैदा कर्दा किस फितने से बख़बर रहना और उसे पहचानना हर अहले इस्लाम के लिए जरुरी हो गया है, इन की फितना सामानियाँ इमान के लिए ज़हरे हलाहल हैं, अल्लह सब को महफ़ूज़ रखें ।

■■■

नक़्दो - नज़र

जमात रज़ा ए मुस्तफा एक नज़र मे

अज़: मौलाना सय्यद मुहम्मद अज़ीम अज़हरी★

आला हजरत इमाम अहमद रजा खां क़ादरी फ़ज़िले बरेलवी रदियल्लाहु अन्हु ने 7 रबीउल सानी 1339 हिजरी मुताबिक 17 दिसम्बर 1920 ईसवी को मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्किलाबी मिशन की तरवीज व ईशाअत, मुसलमानों के इमान व अकीदे की हिफ़ाजत और समाजी, माली व अख्लाकी पस्ती से प्रभावित उम्मते मुस्लिम की नुसरत व हिमायत के लिए जमात रजा ए मुस्तफ़ा को कायम फरमाया।

जमात रजा ए मुस्तफ़ा एक आलमी तहरीक है जो शरीअते इस्लामिया की मुकम्मल पासबान व मुहाफिज है, तमाम अहले सुन्नत व जमात चारों मज़हब हनफी, शाफी, मलिकी, व हंबली की मुबल्लिग व तर्जमान है जिनका मुल्के हिंदुस्तान में शनाख़्ती निशान मसलके आला हज़रत है।

1) शाह इदुल इस्लाम मुहम्मद अब्दुस्सलाम रजवी जबलपुरी।

(2) मलिकुल उलमा मौलाना मुहम्मद जफरुद्दीन रजवी बिहारी।

(3) सदरुल उलमा मौलाना रहम इलाही मंगलोरी।

(4) मौलाना महमूद जान रजवी जाम जोधपुरी।

(5) उस्ताजुल उलमा मौलाना हसनैन रजा खां बरेलवी।

(6) बुरहाने मिल्लत मुफ्ती बुरहानुल हक रजवी जबलपुरीद्य द्धरहमतुल्लाही अलैहिम अजमईन।

सरपरस्त: काज़ी उल- कुज़ात फ़िल हिन्द ताजुश्शरिया हज़रत अल्लामा अलहाज मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खां क़ादरी अज़हरी दामा जिल्लुहुल आली।

अध्यक्ष: शहज़ाद-ए-हुजूर ताजुश्शरिया हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अस्जद रज़ा खां क़ादरी।

जमात के उद्देश्य:

(1) इस्लामी तालीमात को आम करना, कुरान व सुन्नत पर मुश्तमिल दावत व तब्लीग का लिटरेचर कौम तक पहुँचाना।

(2) दीन व मसलक के दुश्मनों की तहरीरी व तकरीरी तौर पर तरदीद करना।

(3) गुमराह फिरकों और सुन्नियों के भेष में मौजूद लोगों की मुनाफकत का जाहिर करना।

(4) उलमा ए अहले सुन्नत खासकर इमाम अहमद रजा खान कादरी की किताबों को पब्लिश करना।

(5) मुसलमानों की मजहबी, समाजी, रोजगार व अख्लाकी कमियों को दूर करने के लिए मजबूत कदम उठाना और इसी तरह जमात रजा ए मुस्तफा की प्रकाशन के विषय में भी खिदमात सराहनीय हैं जिसने हजारों की तादाद में किताबें और पम्फलेट पब्लिश कियेद्य जमात की बड़ी खिदमत के ताल्लुक से मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही लिखते हैं, इस जमात रजा ए मुस्तफ़ा की तारीख का बड़ा रिक्कत अंगेज और अजीमुश्शान बाब शुध्धी तहरीक का खात्मा हैद्य इसकी खिदमात के खाने में सिर्फ यहीं कारनामा होता तो वही उसे बकाये दवाम बख्शने के लिए काफी था।

जमात रजा ए मुस्तफा के विभाग:

(1) दावत व तब्लीग विभाग।

(2) प्रकाशन विभाग।

(3) लेखन, अनुवाद एवं शोध विभाग।

(4) सियासी व कानूनी मामलात विभाग।

★मज़मून निगार जमात रज़ा-ए-मुस्तफ़ा, हेड ऑफिस, बरेली शरीफ में शोबाए-तहक़ीक़, तर्जुमा सदर हैं।

(5) पत्रकारिता विभाग।
(6) इन्फश्वर्मेशन टेक्नोलॉजी विभाग।
(7) समाज सेवा विभाग।
(8) शिक्षा विभाग।
(9) कजा व इफ्ता विभाग।
(10) वक्फ व पुरातत्व विभाग।
(11) माली विभाग।

देश-विदेश में जमात रजा ए मुस्तफा की 100 से अधिक शाखें हैं जिनकी देखरेख जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफ़िस बरेली शरीफ से होती है। किसी भी काम के लिए रोड मैप तैयार करना हो या दीनी गतिविधियां निश्चित करना हों सब मसलके आला हजरत की रौशनी में अंजाम दिये जाते हैं चूँकि अल्लाह ताला और उसके प्यारे महबूब मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा हासिल करना ही असल मक़सद है।

जमात की शाखें :

देश-विदेश में जमात रजा ए मुस्तफा की 100 से अधिक शाखें हैं जिनकी देखरेख जमात रजा ए मुस्तफा के हेड अश्वफिस बरेली शरीफ से होती हैद्य किसी भी काम के लिए रोड मैप तैयार करना हो या दीनी गतिविधियां निश्चित करना हों सब मसलके आला हजरत की रौशनी में अंजाम दिये जाते हैं चूँकि अल्लाह ताला और उसके प्यारे महबूब मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रजा हासिल करना ही असल मकसद है ।

जमात रजा ए मुस्तफा के महत्वपूर्ण कारनामे:

जमात रजा ए मुस्तफा की खिदमाते जलीला की एक लम्बी फहरिस्त है जमात के प्लेटफार्म से वो बड़े बड़े कारनामे अंजाम दिए गए हैं जिनकी उस वक्त अवामे अहले सुन्नत को सख्त जरूरत थी। जब इस्लाम के मूल संस्कारों पर पाबन्दी की कोशिश की गई तो जमात के जिम्मेदारों ने कौम की आवाज पर लब्बैक कहते हुए मैदान में कदम रखा।

हिंदुस्तान की आजादी के मोके पर राम-राज के कयाम का नारा लगा तो जामत रजा ए मुस्तफा ने आगे बढ़ कर अहले इस्लाम की अकीदतों की ख्याल रखते हुए उसके खिलाफ मुहीम चलाई।

मुसलमानों के खिलाफ चलाया गया अभियान बनाम शुध्धी आंदोलन का खात्मा जमात रजा ए मुस्तफा ने ही किया और इसी तरह जमात रजा ए मुस्तफा की प्रकाशन के क्षेत्र में भी खिदमात सराहनीय हैं जिसने हजारों की तादाद में किताबें और पम्फलेट पब्लिश किये।

इस जमात रजा ए मुस्तफा की तारीख का बड़ा रिक्कत अंगेज और अजीमुश्शान बाब शुध्धी तहरीक का खात्मा है। इसकी खिदमात के खाने में सिर्फ यही कारनामा होता तो वही उसे बकाये दवाम बख्शने के लिए काफी था।

जमात के मेम्बर कैसे बने :

जमात रजा ए मुस्तफा की मेम्बरशिप व ब्रांच अपने इलाके में कायम करने के लिये नीचे दिए गये निर्देशों का पालन करें अश्वफलाइन मेम्बरशिप का तरीका जमात रजा ए मुस्तफा के हेड अश्वफिस से मेम्बरशिप का फश्वर्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड अश्वफिस में जमा करें द्य

ऑफलाइन मेम्बरशिप का तरीका :

जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस से मेम्बरशिप का फॉर्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड ऑफिस में जमा करें ।

ऑनलाइन मेम्बरशिप का तरीका :

जमात रज़ा ए मुस्तफा की वेबसाइः www-jamatrazaemustafa-org esa apply for Membership के आप्शन पर जाकर अपनी आवश्यक जानकारी भरके Submit करें !

जमात की ब्रांच कैसे क़ायम करें : बकिया स. 34 पर

रज़वियात

बातें आला हज़रत की

अज़ : मोईन अख़्तर रज़वी ★

बद अक़ीदों के हाथ में अपना हाथ भी देना गवारा नही करते थे, ये शान थी आला हज़रत की

एक बार मेरे आला हज़रत कुछ ज़्यादा ही बीमार हुए, आस पास के हकीमों से इलाज चल रहा था लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा था तो उनके इलाज के लिए लखनऊ के एक हकीम साहब को बरेली शरीफ बुलाया गया, आला हज़रत के इलाज के लिए जब हकीम साहब आला हज़रत के करीब गए और आप से कहा के आप अपना हाथ दीजिये मुझ नब्ज चेक करनी है, मेरे आला हज़रत ने फरमाया कि पहले आप अपना अक़ीदा बताइये, हकीम साहब बोले कि नब्ज़ से अकीदे का क्या ताअ़ल्लुक? मेरे आला हज़रत ने फरमाया: अल्हम्दु लिल्लाह इस फक़ीर ने अपना हाथ गौ़से आज़म के हाथों में दे दिया है, आज तक किसी बद अकीदा के हाथ में अपना हाथ नहीं दिया, इस लिए आप पहले अपना अक़ीदा बताइये, हकीम साहब बोले: मैं क्या अकी़दा बताऊ अपना, किस मसले पे बताऊ? आला हज़रत ने फरमाया: हकीम साहब अशरफ अली थानवी, गंगोही, कासिम नानौतवी के बारे में आप का क्या अकी़दा है?

हकीम साहब बोले हज़रत मुझे इन लोगों के बारे में कुछ नहीं पता, आला हज़रत ने फरमाया कि हकीम साहब के रहने का माकू़ल इंतजाम किया जाये और अशरफ अली थानवी, कासिम ननोतवी, गंगोही की लिखी हुयी किताबें हिफ्जूल ईमान, तहज़िरुन्नास जैसी इन बद मज़हबों की लिखी हुयी किताबें उन्हें दीं और फरमाया: पहले आज शाम को आप इन किताबों को पढ़ये, कल फिर मेरे पास तशरीफ लाइये फिर ईमानदारी से बतइये कि इन लोगों के बारे में आप का क्या अकी़दा है?

हकीम साहब रात भर किताबें पढ़ते रहे, सुबह जब आये तो आला हज़रत ने फरमाया: हकीम साहब अब बताइये क्या अकी़दा है इन लोगों के बारे में आप का? हकीम साहब बोले : हज़रत ये ऐसे बद्तरीन काफिर हैं कि जो इनके कुफ्र में शक करे वो भी काफिर हो जएगा, मेरे आला हज़रत ने फरमाया अब आप मेरी नब्ज़ देख सकते है, हकीम साहब बोले हज़रत मैं तो आप का इलाज करने आया था, आप ने मेरा ही इलाज कर दिया, अल्लाह आप को जज़ाए ख़ैर और शिफाए फौर अता फरमाए।

आज कल लोग गुस्ताखे रसूल औा बद अक़ीदा फिरकों में अपनी बेटों और बेटियों की शादी कर रहे हैं और कहते हैं कि कुछ नहीं ये सब मौलाना लोगों की अपनी बातें हैं, वो ऐसे ही आपस में लड़ाने वाली बातें करते रहते हैं, हम लोग और वो लोग सब मुसलमान ही है, हमें इन झगड़ों में नहीं पड़ना।

अरे मुसलमानों ज़रा सोचो तो सही कि जो गुस्ताखे रसूल होगा वो मुसलमान बचा ही कब? जब आम नबीयों और रसूलों यहाँ तक कि फरिश्तों कि शान में अदना सी भी गुस्ताख़ी और बेअदबी कुफ्र है तो जो तमाम नबीयों और रसूलों का सरदार है उस की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी कितना बड़ा कुफ्र होगा? इलाही सब से पहले मुझे फिर तमाम मुसलमानों को सिराते मुस्ताकीम पर चलने की तौफीक अता फरमाए।

★ मज़मुन निगार जमात रज़ा-ए-मुस्तफ़ा, हेड ऑफिस, बरेली शरीफ में ग्राफिक डिज़ाइनर हैं।

आला हज़रत के हालात

बर सवालातो-जवाबात

अज़ : डॉ. शकील अहमद औज ★
मुरत्तिब : आमिल हुसैन रज़वी

रज़वीयात

सवाल न. 1 : इमाम अहमद रज़ा की तरीखे़ विलादत सन् हिजरी में बताइये ?

जवाब : 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हिजरी।

सवाल न. 2 : बताइये आपने सबसे पहले ख़िताब कब किया था ?

जवाब : 1862 ई0 बमुताबिक़ रबिउल अव्वल 1278 हिजरी को छे साल की उम्र में।

सवाल न. 3 : बताइये आपका पैदाइशी नाम क्या था ?

जवाब : मुहम्मद।

सवाल न. 4 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा का तारीख़ी नाम बता सकते हैं ?

जवाब : अलमुख़्तार।

सवाल न. 5 : बताइये आपका नाम अहमद रज़ा किसने रखा था ?

जवाब : दादा जान हज़रत रज़ा अली ख़ाँ ने।

सवाल न. 6 : बताइये जब जंगे आज़ादी लड़ी जा रही थी उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सिर्फ़ एक साल।

सवाल न. 7 : बताइये आपके अमामा का शिमला किस शाने पर रहता था ?

जवाब : बाँयें शाने पर।

सवाल न. 8 : आपको नौउमरी में एक मर्ज़ हो जाया करता थ, बताइये कौन सा ?

जवाब : आशोबे चश्म का।

सवाल न. 9 : आप पान भी खाया करते थे, बताइये तमबाकू के साथ या बग़ैर तमबाकू के ?

जवाब : बग़ैर तमबाकू के।

सवाल न. 10 : बताइये आप की आमदनी का ज़रिया क्या था ?

जवाब : ज़र्मींदारी।

सवाल न. 11 : बताइये आप कलम में कौन सी निब लगाने से इजतिनाब (बचते) करते थे ?

जवाब : लोहे की निब।

सवाल न. 12 : बताइये आप जब 786 का अदद लिखते थे तो इब्तिदा दायीं तरफ़ से करते थे या बायीं तरफ़ से ?

जवाब : दायीं तरफ़ से यानी पहले 6 लिखते थे।

सवाल न. 13 : कसरते मुताला से जब आपकी आँखों में निहायत शदीद तकलीफ़ हो गयी थी तो आपने अपने उस्ताद मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर बेग के इसरार पर एक डाक्टर से रुजू किया था। डाक्टर का नाम बताइये ?

जवाब : डाक्टर अण्डर सन।

सवाल न. 14 : बताइये आपकी आँख के मुआइने के बाद डाक्टर अण्डर सन ने क्या कहा था ?

जवाब : मुताला छोड़ दीजिए नहीं तो बीस बरस में आँखों में पानी उतर आएगा।

सवाल न. 15 : आपकी पैदाइश पर ख़ान दान के किस बुज़ुर्ग ने यह कहा था "मेरा यह बेटा इंशा अल्लाह बहुत बड़ा आलिम होगा" ?

जवाब : मौलाना रज़ा अली ख़ाँ ने।

सवाल न. 16 : बताइये आपने कितने अर्से में कुर्आन मजीद हिफ़्ज़ किया था ?

जवाब : एक माह में।

सवाल न. 17 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा के हिफ़्ज़े कुर्आन की वजह बता सकते हैं ?

जवाब : बाज़ लोग नाम के साथ हाफ़िज़ लिख दिया करते थे, इसलिए हाफ़िज बनना अपने ऊपर लाज़िम

★ मज़मुन निगार लाहौर पाकिस्तान के मारुफ़ दानिश्वर और अहले क़लम हैं।

कर लिया।

सवाल न. 18 : बताइये आप घड़ी का टाइम किस तरह मिलाया करते थे ?

जवाब : दिनको सूरज और रात को सितारे देख कर।

सवाल न. 19 : बताइये घड़ी का इस तरह मिलाना किस इल्म साहिबे कमाल होने की दलील है ?

जवाब : इल्मे तौक़ीत में।

सवाल न. 20 : आपकी हैरत अंगेज़ ज़हानत देख कर आपसे यह किसने पूछा था कि साहिब ज़ादे सच सच बता दो किसी से कहूँगा नहीं, तुम इंसान हो या जिन ?

जवाब : आपके उस्ताद ने।

सवाल न. 21 : बताइये इसके जवाब में आपने क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब : (अलहम्दुलिल्लाह) मैं इंसान हूँ, अलबत्ता अल्लाह का फ़ज़्ल व करम शामिले हाल है।

सवाल न. 22 : बताइये आपने पूरी ज़िन्दगी में मजमूई तौर पर कितनी ज़कात अदा की ?

जवाब : आपने कभी इतनी रकम अपने पास जमा ही नहीं रखी जिस पर ज़कात वाजिब हो इसलिए आपने कभी ज़कात नहीं दी।

सवाल न. 23 : आप उमूमन मटके का बासी पानी नहीं पीते थे बताइये क्यूँ ?

जवाब : आपको ज़ुकाम हो जाता था।

सवाल न. 24 : आपने पौने तीन माह मक्का मुअज़्ज़मा के कियाम के दौरान खुद, कितनी मिक़दार में आबे ज़म ज़म पिया था ?

जवाब : तक़रीबन चार मन।

सवाल न. 25 : क्या आप इस क़ुर्आनी आयत का तर्जुमा जानते हैं ?

जवाब : खुददाम चाँदी के कटोरे और गिलास लिए, इनको घेरे हैं।

सवाल न. 26 : बताइये इस आयत से इल्मे अब्जद के क़ाइदे से कितने अदद बरामद होते हैं ?

जवाब : 1340।

सवाल न. 27 : वफ़ात के कुछ देर क़ब्ल आपने वक़्त पूछा था, बताइये वह वक़्त क्या था ?

जवाब : एक बजकर छप्पन मिनट दिन के।

सवाल न. 28 : वफ़ात के चन्द लम्हा क़ब्ल आपने क़ुर्आन शरीफ़ सुनने की फ़रमाइश किससे की थी ?

जवाब : अपने छोटे साहिबज़ादे मुफ़्ती मुहम्मद मुसतफ़ा रज़ा खाँ साहब से।

सवाल न. 29 : बताइये क़ुर्आन मजीद की वह कौन सी दो सूरतें हैं जो मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा खाँ साहब ने इन्हें सुनाई ?

जवाब : सूरह यासीन और सूरह रअ़द।

सवाल न. 30 : बताइये ब वक़्ते विसाल आपकी ज़बान पर क्या था ?

जवाब : (लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह)।

सवाल न. 31 : इमाम अहमद रज़ा की पैदाइश तो बरेली के मुहल्ला जिसौली में हुई थी लेकिन ज़रा यह बताइये कि आपका मज़ार किस मुहल्ले में है ?

जवाब : मुहल्ला सौदागरान में।

सवाल न. 32 : अपनी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए आपने दो नाम दिये थे। जिसमे एक नाम तो आपके बड़े साहिब ज़ादे का था, बताइये दूसरा नाम किस का था ?

जवाब : साहिबे बहारे शरीयत (मौलाना मुहम्मद अमजद अली आज़मी का)।

सवाल न. 33 : आपने अपने जनाज़े के आगे ''ज़रियाए क़ादरिया'' और एक नात पढ़ने की वसीयत की थी। बताइये वह नात कौन सी थी ?

जवाब : काबे के बदरुद दुजा तुमपे करोड़ो दुरुद
तैबा के शमसुद्दुहा तुमपे करोड़ो दुरुद।

सवाल न. 34 : तदफ़ीन के बाद आपकी कब्र पर सात मरतबा आज़ान दी गई थी। बताइये क्यूँ ?

जवाब : इसलिए कि वसीयत थी।

सवाल न. 35 : बताइये यह आज़ान किसने दी थी ?

जवाब : आपके बड़े साहबज़ादे मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ क़ादरी ने।

सवाल न. 36 : आज़ान के बाद आपकी वसीयत के मुताबिक़ बा आवाज़े बुलन्द कितनी देर तक दुरुदशरीफ़ पढ़ा गया था ?

जवाब : तक़रीबन देढ़ घंटे तक।

सवाल न. 37 : आपने कितने दिनों तक मुसल सल अपनी कब्र पर कुर्आन शरीफ़ और दुरुदशरीफ़ पढ़ने की वसीयत की थी ?

जवाब : तीन रोज़ तक।

सवाल न. 38 : बताइये वह कौन सा इल्म है जिसे आप मकरुह (नापसन्द) समझते थे ?

जवाब : फ़लसफ़ा।

सवाल न. 39 : बताइये आपने बेशतर उलूम किससे हासिल किये ?

जवाब : अपने वालिदे मुहतरम से।

सवाल न. 40 : इमाम अहमद रज़ा मसनदे इफ़ता पर कब फ़ाइज़ हुए। सन ई0 बताइये ?

जवाब : 1869 ई0 में।

सवाल न. 41 : बताइये आपने कुर्आन पाक नाज़रा कब ख़त्म किया था ?

जवाब : 1860 ई0 मुताबिक़ 1276 हिजरी को चार साल की उम्र में।

सवाल न. 42 : बताइये आपने अलूमे अक़लिया व नक़लिया से सनदे फ़रागत कब हासिल की थी ?

जवाब : 1869 ई0 मुताबिक़ 1286 हिजरी को।

सवाल न. 43 : आपने इल्मे हदीस, इल्मे फ़िक़ह और इल्मे उसूल तफ़सीर की सनद किन उलमाए किराम से हासिल की थी ?

जवाब : सय्यिद अहमद दहलान शाफ़ई मक्की और अब्दुल रहमान सिराज हनफ़ी मक्की से।

सवाल न. 44 : आपने पहली बार हज की सआदत कब हासिल की थी ?

जवाब : 1296 हिजरी मुताबिक़ 1878 ई0 को।

सवाल न. 45 : बताइये आपने दूसरी बार हज की सआदत किस सन ई0 में हासिल की थी ?

जवाब : 1905 ई0 में।

सवाल न. 46 : बताइये आपका विसाल कब हुआ। सन ई0 बताइये ?

जवाब : नवम्बर 1921 ई0 में।

सवाल न. 47 : सन ई0 के मुताबिक़ इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ की उम्र बताइये ?

जवाब : 65 साल।

सवाल न. 48 : बताइये 1905 ई0 को हरामैन तय्येबैन में आपका क़याम कितने अर्से रहा ?

जवाब : चार माह।

सवाल न. 49 : बताइये आपकी अज़्वाजी ज़िंदगी का आग़ाज़ कब हुआ ?

जवाब : 1874 ई0 मुताबिक़ 1291 हिजरी को।

सवाल न. 50 : बताइये उस वक़्त आपकी उम्रे मुबारक कितनी थी ?

जवाब : सन ई0 के मुताबिक़ 18 साल और सन हिजरी के मुताबिक़ 19 साल।

सवाल न. 51 : बताइये पहले हज के मौक़े पर आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सन् ईसवी के मुताबिक़ 22 साल और सन् हिजरी के मुताबिक़ 24 साल।

सवाल न. 52 : बताइये आपने बरेली में कौनसा दारुल उलूम क़ाइम किया ?

जवाब : दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम।

सवाल न. 53 : बताइये इस दारुल उलूम के क़याम के वक़्त आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सन ई0 के मुताबिक़ 49 साल और सन हिजरी के मुताबिक़ 51 साल।

सवाल न. 54 : बताइये दूसरे हज के मौक़े पर आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सन ई0 के मुताबिक़ 49 साल और सन हिजरी के मुताबिक़ 51 साल।

सवाल न. 55 : बताइये किस शहर के उलमा ने आपको ''ज़ियाउद्दीन अहमद'' का लक़ब दिया था ?

जवाब : मक्का मुअज़्ज़मा के उलमा ने।

सवाल न. 56 : बताइये आप दूसरे हज के मौके पर वापसी में हिन्दुस्तान के किस मशहूर शहर तशरीफ़ ले गये थे ?

जवाब : मुम्बई।

सवाल न. 57 : बताइये मुम्बई से वापसी पर आप किस शहर में रोनक़ अफ़रोज़ हुए थे ?

जवाब : अहमदा बाद में।

सवाल न. 58 : बताइये इन दोनों शहरों में आपका कयाम कितने कितने अर्से रहा ?

जवाब : एक एक माह।

सवाल न. 59 : बताइये वह दो महीने कौन से हैं ?

जवाब : रबीउल अव्वल, रबीउल आख़िर।

सवाल न. 60 : बताइये 1918 ई0 मुताबिक़ जमादुल ऊला आख़िर 1337 हिजरी को आप किस जगह तशरीफ़ ले गये ?

जवाब : जबलपुर।

सवाल न. 61 : जून 1921 ई0 मुताबिक़ रमज़ानुल मुबारक 1339 हिजरी को आप कहाँ क़याम पज़ीर थे ?

जवाब : कोहभंवाली, नैनीताल में।

सवाल न. 62 : आपका विसाल कब हुआ सन हिजरी बताइये ?

जवाब : 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हिजरी को।

सवाल न. 63 : आपकी उम्र एतबार सन ई0 65 साल बनती है बताइये सन हिजरी के मुताबिक़ कितनी उम्र बनती है ?

जवाब : 68 साल।

सवाल न. 64 : बरेली के उस मुहल्ले का नाम बताइये जहाँ आपकी पैदाइश हुई ?

जवाब : मुहल्ला जसौली।

सवाल न. 65 : बताइये वह मकान कि जहाँ आप पैदा हुए इस वक़्त किसकी मिलकियत में है ?

जवाब : एडवोकेट अज़दर हुसैन की मिलकियत में है।

सवाल न. 66 : मुहल्ला सौदागरान बरेली का वह मकान जहाँ से आपने उलूम व फ़ुनून के दरया बहाए, आज कल किसके कब्ज़े में है ?

जवाब : हज़रत मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँन अज़हरी साहब क़िब्ला के।

सवाल न. 67 : आपके मज़ार के सामने एक मस्जिद है, क्या आप इस मस्जिद का नाम बता सकते हैं ?

जवाब : मस्जिदे रज़ा।

सवाल न. 68 : मुहल्ला घेर जाफ़र ख़ाँ बरेली की उस मस्जिद का नाम बताइये जहाँ आप साल में दो बार वाज़ फ़रमाया करते थे ?

जवाब : शाही अकबरी मस्जिद।

सवाल न. 69 : बताइये यह मस्जिद किस बादशाह ने तामीर कराइ थी ?

जवाब : शहंशाह अकबर ने 986 हिजरी में।

सवाल न. 70 : बताइये उस मस्जिद का मशहूर और क़दीम नाम क्या है ?

जवाब : मिर्ज़ाई मस्जिद।

सवाल न. 71 : बताइये जब आप दाईए अजल को लब्बैक कह रहे थे यानी विसाल फरमा रहे थे तो उस वक़्त टाइम क्या हो रहा था ?

जवाब : दो बजकर अडतीस मिनट, दिन।

सवाल न. 72 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा के विसाल का दिन बता सकते हैं ?

जवाब : जुमअतुल मुबारक।

सवाल न. 73 : जिस वक़्त आपका इंतेक़ाल पुरमलाल हुआ, उस वक़्त मुअज़्ज़िन आज़ान दे रहा था, बताइये ब वक़्ते विसाल वह आज़ान के किस जुमले पर था ?

जवाब : (हय्या अललफ़ला) पर। ■■■

सेन्टर ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़

जामियतुर्रज़ा

मरकज़ नगर, मथुरापुर, सी.बी.गंज, बरेली शरीफ़, यू.पी.

CENTER OF ISLAMIC STUDIES JAMIATUR RAZA

MARKAZ NAGAR MATHURAPUR, C.B.GANJ, BAREILLY SHARIF (U.P.)

Imam Ahmad Raza Trust

82-Saudagran, Raza Nagar, Bareilly U.P.-243003 (India)

इमाम अहमद रज़ा ट्रस्ट

82, सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी.

E-mail: imamahmadrazatrust@aalaahazrat.com
imamahmadrazatrust@yahoo.co.in
Website: www.aalaahazrat.com, jamiaturraza.com, hazrat.org

Contact No. +91 0581 3291453
+91 9897007120
+91 9897267869

State Bank of India, Bareilly.
A/C No. 030078123009
IFSC Code : SBIN0000597

HDFC Bank, Bareilly
A/c No. 50200004721350
IFSC Code : HDFC0000304

RNI No. UPMUL/2017/71926
Postal Regd. No. UP/BR-34/2017-19

JANUARY - 2018
PAGES 60 WITH COVER

PER COPY : ₹20.00
PER YEAR : 250.00

MAHNAMA SUNNI DUNIYA

Printer, Publisher & Owner Asjad Raza Khan, Printed at Faiza Printers, Bara Bazar, Bareilly
Published at 82, Saudagran, Dargah Aala Hazrat, Bareilly Sharif (U.P.) PIN : 243003, Editor Asjad Raza Khan

सुन्नी दुनिया में इश्तिहार देकर अपने कारोबार और इदारे को फ़रोग़ दें

Monthly Package Four Colour महाना पैकेज फोर कलर

S. No.	Adv. Space	کوارٹر پیج Quarter Page	ہاف پیج Half Page	فل پیج Full Page	اشتہار کی جگہ	نمبر شمار
1	Back Title Page	8000/-	10000/-	15000/-	بیک ٹائٹل پیج	۱
2	Back Side of Front Title Page	6000/-	8000/-	12000/-	فرنٹ ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۲
3	Back Side of Back Title Page	4000/-	6000/-	10000/-	بیک ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۳

Quarterly Package Four Colour तिमाही पैकेज फोर कलर

S. No.	Adv. Space	Quarter Page	Half Page	Full Page	اشتہار کی جگہ	نمبر شمار
1	Back Title Page	20000/-	25000/-	35000/-	بیک ٹائٹل پیج	۱
2	Back Side of Front Title Page	15000/-	20000/-	30000/-	فرنٹ ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۲
3	Back Side of Back Title Page	10000/-	15000/-	25000/-	بیک ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۳

Half Yearly Package Four Colour छमाही पैकेज फोर कलर

S. No.	Adv. Space	Quarter Page	Half Page	Full Page	اشتہار کی جگہ	نمبر شمار
1	Back Title Page	30000/-	40000/-	60000/-	بیک ٹائٹل پیج	۱
2	Back Side of Front Title Page	20000/-	35000/-	50000/-	فرنٹ ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۲
3	Back Side of Back Title Page	15000/-	25000/-	40000/-	بیک ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۳

Yearly Package Four Colour सालाना पैकेज फोर कलर

S. No.	Adv. Space	Quarter Page	Half Page	Full Page	اشتہار کی جگہ	نمبر شمار
1	Back Title Page	50000/-	70000/-	100000/-	بیک ٹائٹل پیج	۱
2	Back Side of Front Title Page	35000/-	60000/-	80000/-	فرنٹ ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۲
3	Back Side of Back Title Page	25000/-	40000/-	60000/-	بیک ٹائٹل پیج کا اندرونی حصہ	۳

Black & White Package any in side Magzine ब्लैक एण्ड व्हाईट पैकेज रिसाला में कहीं भी

S. No.	Adv. Space	Quarter Page	Half Page	Full Page	اشتہار کی جگہ	نمبر شمار
1	Monthly	1500/-	3000/-	5000/-	ماہانہ	۱
2	Quarterly	4000/-	8000/-	12000/-	سہ ماہی	۲
3	Half Yearly	7000/-	12000/-	16000/-	ششماہی	۳
4	Yearly	10000/-	16000/-	20000/-	سالانہ	۴

नोट:-

1 तीन महीने का मतलब कोई भी तीन महीने, इसी तरह 6 या 12 महीने का मतलब कोई भी 6 या 12 महीने।
2 वक़्त और हालात के पेशे नज़र इश्तिहार की इशाअत मुक़द्दम व मुवख़्ख़र भी हो सकती है।
3 पूरे इश्तिहार की रक़म एक मुश्त पेशगी जमा करनी होगी।

Contact: 82 Saudagaran, Dargah Aalahazrat, Bareilly Sharif (U.P.), Pin - 243003, Mob. 9411090486
Account Details: Asjad Raza Khan, SBI A/c No. 10592358910, IFSC Code: SBIN0000597